आमाले क़ुरआनी
हज़रत मौलाना
अशरफ़ अली थानवी रहि॰

अल्लाह तआला का इर्शाद है

आमाले क़ुरआनी

लेखक

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहि०

प्रकाशक:

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

2158, मेहर पर्वर स्ट्रीट, पटोदी हाउस, दरया गंज,
दिल्ली-2 फ़ोन न०, 3289786, 3289159

आमाले क़ुरआनी

लेखक

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी (रह०)

प्रस्तुत कर्ता

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Amaal-e-Qur'ani

Author:
Hazrat Maulana Ashraf Ali Thanavi (R.A.)

Edition: **2015** *Pages:* **240**

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road,
Near Khoja Qabristan, Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय -सूची

क्या ? कहां ?

पहला हिस्सा

दीनी ज़रूरतें

दुनिया की ज़रूरतें

दूसरा हिस्सा

बीवी व शौहर से मुताल्लिक़

सफ़र

जिस्मानी मर्ज़

क्या ?	कहां ?

तीसरा हिस्सा

क़ैद और तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवरों से निजात

ज़रूरी गुज़ारिश

अह्क़र को आला हज़रत मुर्शिदी सय्यिदी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इर्शाद फ़रमाया था कि अगर कोई ज़रूरतमंद तावीज़ लेने आये, तो इंकार मत किया करो। जो ख़्याल में आया करे, लिख दिया करे।

चुनांचे अह्क़र का मामूल है कि उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ कोई क़ुरआनी आयत या कोई इस्मे इलाही सोच कर लिख देता है और अल्लाह के फ़ज़्ल से उसमें बरकत होती है। चुनांचे एक बीबी की मांग बार-बार की कोशिश के बावजूद सीधी न निकलती थी। अह्क़र ने कहा 'इह्दिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम' पढ़ कर मांग निकालो। चुनांचे इसका पढ़ना था कि बे-तकल्लुफ़ मांग सीधी निकल आयी।

अह्क़र ने यह हिकायत इस लिए अ़र्ज की है कि अगर कोई सच्चा तालिब भी इस मामूल को इख़्तियार करे तो, नफ़ा और बरकत की उम्मीद है।

–अशरफ़ अली

ज़रूरी मस्अले

1. बे-वुज़ू क़ुरआनी आयतों को काग़ज़ या तश्तरी पर लिखना जायज़ नहीं।

2. बे-वुज़ू उस काग़ज़ या तश्तरी को छूना जायज़ नहीं। पस चाहिए कि लिखने वाला और तश्तरी या तावीज़ का हाथ में लेने वाला और उसका धोने वाला सब बा-वुज़ू हों, वरना सब गुनाहगार होंगे।

3. जब तावीज़ से काम हो चुके तो उसको कब्रस्तान में किसी एहतियात की जगह दफ़्न कर दे।

4. बिला वुज़ू बिला जुज़्वदान के क़ुरआन शरीफ़ को हाथ लगाना जायज़ नहीं।

आयाते फ़ुर्क़ानी यानी

आमाले क़ुरआनी पहला हिस्सा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

दीनी ज़रूरतें

1. नमाज़ का शौक़ और ख़ुशूअ़ (गिड़गिड़ाहट)

जुमरात की रात में आधी रात के वक़्त उठकर वुज़ू करके दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े और आयत –

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝

क़ुलिद् अुल्ला ह अ विद अुर्रहमा न अय्यम्मा तद्अू फ़ लहुल अस्माउल हुस्ना व ला तज्हर बिसलाति क व ला तुख़ाफ़ित बिहा वब्तग़ि बै न ज़ालि-क सबीला० व क़ुलिल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़ व ल दंव्व लम यकुल्लहू शरीकुन फ़िल्मुल्कि व लम यकुल्लहू वलीयुम्मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तक्बीरा०

शीशे के बरतन में ज़ाफ़रान और गुलाब से लिख कर बरतन को पानी से धोए, फिर इन आयतों को उस पानी पर सात मर्तबा पढ़े, फिर

सुबह की नमाज़ के बाद उस पानी पर सूरः 'अलम् न श् रह' दम करके दुआ करे कि यह सुस्ती जाती रहे और नेक कामों का शौक़, नमाज़ में ख़ौफ़ पैदा हो जाये और फिर वह पानी पी ले। इन्शा अल्लाह तआला मक़सद पूरा हो।

2. इताअत् पर आमादगी

1. अलबसीरु (देखने वाले)

ख़ासियत- नमाज़े जुमा के बाद सौ मर्तबा पढ़ने से दिल में सफ़ाई हो और नेक अ़मल करने की तौफ़ीक़ हो।

2. अलक़य्यूमु (थामने वाले)

ख़ासियत- इसकी ज़्यादती से नींद जाती रहे और 'या हय्यु या क़य्यूमु को फ़ज्र से सूरज निकलने तक पढ़ने से मुस्तैदी और इताअ़त पर आमादगी हासिल हो।

3. अल्लाह की ख़ुशी

अल्अ़फ़ुव्वु (माफ़ करने वाले)

ख़ासियत-ज़्यादा ज़िक्र करने से गुनाहों से माफ़ी और ख़ुदा की ख़ुशी हासिल हो।

4. दिल का रोशन होना

1. अलबाअ़िसु (भेजने वाले रसूलों के)

ख़ासियत-सोते वक़्त सीने पर हाथ रखकर इसको सौ मर्तबा पढ़ा करे तो उसका दिल इल्म व हिकमत से रोशन होगा।

—

2. फ़स्तक़िम क मा उमिरत व मन ता ब मअ़ क

(पारा 12, रुकूअ़ 10)

तर्जुमा- जिस तरह आपको हुक्म हुआ है (दीन की राह पर) मुस्तक़ीम (जमे) रहिये और वे लोग भी मुस्तक़ीम रहें जो कुफ़्र से तौबा करके आपके साथ हैं।

ख़ासियत- दिल की इस्तक़ामत (जमाव) के लिये ग्यारह् मर्तबा हर नमाज़ के बाद पढ़े।

3. अन्नूरु (रोशनी वाले)

ख़ासियत- उसके ज़िक्र से दिल का नूर हासिल हो।

4. पूरी सूरः कह्फ़ (पारा 15)

ख़ासियत- जो कोई हर जुमा को एक बार पढ़ ले, इन्शा अल्लाह तआ़ला दूसरे जुमा तक उसका दिल नूर से रोशन होगा। और जो कोई शुरू की दस आयतें रोज़ाना पढ़ लेगा वह दज्जाल के शर् (बुराई) से बचा रहेगा।

5. हिदायत पाना

1. सूरः इख़्लास (पारा 30)

ख़ासियत- सुबह व शाम पढ़े शिर्क और एतिक़ाद की ख़राबी से बचा रहे।

2. एक मिस्‌री ने बयान किया कि एक मुश्रिक एक मुसलमान के पास आया और कहा कि तुम्हारे क़ुरआन में कोई ऐसी चीज़ भी है जो मेरे दिल को बदल दे और शायद मैं मुसलमान हो जाऊं । उसने कहा, हां है और उसको सूरः अलम् नशरह लिख कर पिलाई। वह मुसलमान हो गया।

3. अलमुअख़्ख़िरु (पीछे करने वाले)

ख़ासियत-ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, तो बुरे कामों से तौबा नसीब हो।

4. अत्तव्वाबु (तौबा क़बूल करने वाले)

ख़ासियत- नमाज़े चाश्त के बाद तीन सौ साठ बार पढ़े तो तौबा की तौफ़ीक़ हासिल हो और अगर ज़ालिम पर दस बार पढ़े तो उससे छुटकारा मिले।

6. हिफ़्ज़े कुरआन

सूरः मुद्दस्सिर (पारा 29)

ख़ासियत-इसको पढ़कर अगर दुआ क़ुरआन के हिफ़्ज (ज़बानी याद) होने की करे, इन्शाअल्लाह हिफ़्ज़ आसान हो।

7. फ़ासिक़ की इस्लाह

अल्मतीनु (मज़बूत)

ख़ासियत- अगर कमज़ोर पढ़े, ज़ोर वाला हो जावे, और अगर किसी फ़ासिक़ व फ़ाजिर (बुरा और नाफ़र्मान) मर्द या औरत पर पढ़ा जाये तो फ़ुजूर से बाज़ आ जाये।

8. ज़ियारते रसूल सल्ल०

सूरः कौसर (पारा 30)

ख़ासियत- जुमे की रात में एक हज़ार मर्तबा इसको पढ़े और एक हज़ार मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़े तो ख़्वाब में हुज़ूरे अन्वर सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम की ज़ियारत नसीब हो।

9. इस्मे आज़म

الٓمٓ ۚ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۗ

1. अलिफ़-लाम्-मीम् अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम॰
(पारा 3, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा- अलिफ़्-लाम्-मीम् अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद (पूजा के लायक़) बनाने के क़ाबिल नहीं और वह ज़िन्दा हैं। सब चीज़ों को बर्क़रार रखने वाले हैं।

ख़ासियत- हदीस शरीफ़ में आया है कि इसमें इस्मे आज़म है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ

2. ला इला ह इल्ला अन त सुब्हान क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन॰
(पारा 17, रुकूअ़ 6)

तर्जुमा- आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप सब ऐबों से पाक हैं। मैं बेशक क़ुसूर वाला हूँ।

ख़ासियत- इसमें इस्मे आज़म छिपा हुआ है। जिस मुसीबत व बला में पढ़ेगा, इन्शाअल्लाह तआ़ला फ़ायदा उठाएगा।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝

3. हुवल्लाहु ल्लज़ी ला इला ह इल्ला हु व आ़लि मुल ग़ै बि वश्शहादति हुवर्रह्मानुर्रहीम् ॰
(पारा 28, रुकूअ़ 6)

तर्जुमा- वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा और कोई माबूद (जिसकी इबादत की जाए) बनने के लायक नहीं वह जानने वाला है, छुपी और जाहिर चीजों का वही बड़ा मेहरबान, रहम वाला है।

ख़ासियत- इसमें इस्मे आज़म छिपा हुआ है। जो कोई इसको सुबह

के वक़्त सात बार पढ़े तो शाम तक उसके वास्ते फ़रिश्ते मग़्फ़िरत की दुआ़ करें और अगर उस दिन में मरे तो शहीद का दर्जा पायेगा और अगर शाम को पढ़े तो सुबह तक उसके वास्ते फ़रिश्ते मग़्फ़िरत की दुआ़ करें और अगर उस रात को मरे तो शहादत का दर्जा पाये।

10. ईमान पर ख़ात्मा

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً
اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ (پارہ ۳ رکوع ۹)

रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलू बना बअ़ द इज़ हदै तना व हब ल ना मिल् ल दुन क रहमतन इन्न क अन्तल वह्हाब० (पारा 3, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा- ए हमारे परवरदिगार! हमारे दिलों को हिदायत के बाद टेढ़ा न कर दीजिए और हमको अपने पास से रहमत अ़ता फ़र्माइये, बेशक आप बहुत बख़्शिश करने वाले हैं।

• **ख़ासियत**- जो कोई हर नमाज़ के बाद इस आयत को पढ़ लिया करे वह दुनिया से इन्शा अल्लाह ईमान के साथ उठेगा।

11. गुनाह माफ़ होना

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

रब्बना ज़ लम ना अनफ़ु स ना व इल्लम् तग़फ़िर ल ना व तरहम्ना ल न कू नन्न मिनलख़ासिरीन० (पारा 8, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा- ऐ हमारे रब। हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया और अगर आप हमारी मग़्फ़िरत न करेंगे और हम पर रहम न करेंगे, तो वाक़ई हमारा बड़ा नुक़्सान हो जायेगा।

ख़ासियत- जो शख़्स इस आयत को हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद एक बार पढ़ कर मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगे इन्शा अल्लाह उसके गुनाह माफ़ हों, क्योंकि यह दुआ़ आदम अ़लैहिस्सलाम की है।

12. शफ़ाअ़त नसीब हो

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ○ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ○

लक़द जा अ कुम रसूलुम्मिन अन्फ़ुसि कुम अ़जीज़ुन अ़लैहि मा अनित्तुम हरीसुन अ़लैकुम बिल मुअ्मिनी न रऊफ़ुर्रहीम० फ़ इन तवल्लौ फ़ क़ुल हसबियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अ़लैहि तवक्कल तु व हु व रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम० (पारा 11, रुकूअ़ 5)

तर्जुमा- ऐ लोगो ! तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाये हैं जो तुम में से हैं। जिनको तुम्हारी तक्लीफ़ भारी होती है, तुम्हारी खोज ख़बर रखते हैं, ईमान वालों पर शफ़ीक़ और मेहरबान हैं, फिर अगर वह फिर जाएं तो आप कह दीजिए काफ़ी है हमको अल्लाह ! किसी की बंदगी नहीं सिवाए उसके। उसी पर मैंने भरोसा किया और वह अज़ीम तख़्त का मालिक है।

ख़ासियत- जो कोई इन आयतों को हर नमाज़ के बाद एक मर्तबा पढ़ा करे तो इन्शा अल्लाह तआ़ला हश्र के दिन जनाबे रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसकी शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे और जिस मुसीबत और मुहिम के लिए चाहे पढ़े, इन्शा अल्लाह तआ़ला मुश्किल आसान हो

जायेगी।

13. अ़मल का क़ुबूल किया जाना

إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ط

1. इलैहि यसअ़दुल कलिमुत्तय्यिबु वल अ़ मलुस्सालिहु यर फ़ ऊ़हू० (पारा 22, रुकूअ़ 14)

तर्जुमा– अच्छा कलाम उस तक पहुंचाता है और अच्छा काम उसी को पहुंचता है।

ख़ासियत– बुज़ुर्ग इससे यह नतीजा निकालते हैं कि जो शख़्स नमाज़ के बाद कलमा-ए-तौहीद तीन बार पढ़ लिया करे तो इन्शा अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ़ मक़बूल होगी।

2. अर्रशीदु

ख़ासियत– इशा की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े तो सब अ़मल मक़्बूल होंगे।

14. रिश्तेदार दीनदार हो जावें

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ إِمَامًا

रब्ब ना हब लना मिन अज़वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र त अअ़युनिंव्वज अ़ल ना लिल मुत्तक़ी न इमामा० (पारा 19, रुकुअ़ 4)

तर्जुमा– ऐ हमारे परवरदिगार (पालन हार !) हमको हमारी बीवियों और औलाद की तरफ़ से आंखों की ठंडक (यानी राहत) अ़ता फ़र्मा और हमको परहेज़गारों का इमाम बना दे।

ख़ासियत- जो कोई इसको एक बार हर नमाज़ के बाद पढ़ लिया करे उसकी औलाद और बीवी दीनदार हो जायेंगे।

15. शैतानी वसवसों से पनाह

رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ

1-रब्बि अ ऊ ज़ु बि क मिन ह म ज़ातिश्श्यातीनि॰ व अ ऊ ज़ुबि क रब्बि अंय्यहज़ुरूनि॰ (पारा 18, रुकूअ़ 6)

तर्जुमा- ऐ मेरे रब ! मैं आपकी पनाह मांगता हूँ शैतानों के धोखों से और ऐ मेरे रब ! मैं आपकी पनाह मांगता हूँ इससे कि शैतान मेरे पास भी आये।

ख़ासियत- जिसके दिल में शैतानी वसवसे ज़्यादा पैदा होते हों वह इसको ज़्यादा पढ़ा करे, इन्शा अल्लाह तआ़ला इन वसवसों से बचा रहेगा।

2. अलमुक़्सितु (इन्साफ़ करने वाले)

ख़ासियत- इसे हमेशा पढ़ते रहने से इबादतों में वसवसा न आयेगा।

16. क़ियामत के दिन चेहरा चमके

اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ

इन् न हू हु वल बर्रुर्रहीम॰ (पारा 27, रुकअ़ 3)

ख़ासियत- जो कोई इस आयते करीमा को नमाज़ के बाद ग्यारह बार उंगली पर दम करके पेशानी पर मले तो इन्शा अल्लाह क़ियामत में उसका मुंह चमकेगा।

17. दोज़ख़ से निजात हो जाये

١. حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ

1. हा मी म्॰ तन्ज़ीलु ल किताबि मिनल्लाहिल अ़ज़ीज़िल अ़लीम्॰ (पारा 24, रुकूअ़ 6)

٢. حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۚ

2. हामीम्॰ तन्ज़ीलुम्मिनर्रहमानिर्रहीम॰ (पारा 24, रुकूअ़ 15)

٣. حٰمٓ ۚ عٓسٓقٓ ۚ

3. हामीम्॰ ऐन सीन क़ाफ़॰ (पारा 25 रुकूअ़ 2)

٤. حٰمٓ ۚ وَالْكِتَابِ الْمُبِيْنِ ۙ

4. हामीम वल्किताबिलमुबीन॰ (पारा 25 रुकूअ़ 14)

٥. حٰمٓ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۚ

5. हामीम्॰ इन् ना अन्ज़लनाहु फी लैलतिम मुबारकतिन इन ना कुन ना मुन्ज़िरीन॰ (पारा 25 रुकूअ़ 14)

٦. حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ

6. हामीम् तनज़ीलुल् किताबि मिनल्लाहिल अ़ज़ीज़िल हकीम॰ (पारा 25 रुकूअ़ 17)

٧. حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۚ

7. हामीम् तन्ज़ीलुल्किताबि मिनल्लाहिल अ़ज़ीज़िल हकीम॰ (पारा 26 रुकूअ़ 1)

ख़ासियत– जो शख़्स इन सातों हामीम् को पढ़ेगा, उस पर दोज़ख़

के सारे दरवाज़े बन्द हो जायेंगे।

18. रात को जिस वक़्त चाहे, आंख खुल जाये

١ وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ط وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ط وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ٥

1. व इज़ जअ़ल्नल बै त मसाबतल लिन्नासि व अमनन् वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राही म मुसल्ला व अ़हिद्ना इला इब्राही म व इस्माई ल अन तह्हि र बैतिय लित्ताइफ़ी न वल्आ़किफ़ी न वर्रुक्कइस्सुजूदि०

(पारा 1, रुकूअ़ 15)

तर्जुमा- और (वह वक़्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है कि) जिस वक़्त हमने ख़ाना-ए-काबा लोगों के लिये (इबादत की जगह और) अम्न मुक़र्रर रखा और मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लिया करो, और हमने हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अ़लैहिमस्सलाम) की तरफ़ हुक्म भेजा कि मेरे (इस) घर को ख़ूब पाक रखा करो बाहरी और मक़ामी लोगों (की इबादत) के वास्ते और रुकुअ़ (और) सज्दा करने वालों के वास्ते।

ख़ासियत- एक आ़रिफ़ (अल्लाह वाले) के नविश्ते (लेख) से नक़ल किया गया है कि इस आयत को अगर सोते वक़्त पढ़े, जिस वक़्त चाहे आंख खुले।

٢ اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ ۔ ۔ ۔ ۔ (تا) تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ٥

2. इन् न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति.........से तुख़्लिफ़ुल्मी आ़द
(पारा 4, रुकूअ़ 11)

ख़ासियत– जो शख़्स हमेशा इन आयतों को पढ़ा करे, उस का ईमान क़ायम रहे और अगर लकड़ी के बरतन पर लिखकर और ज़मज़म के पानी से धोकर पिये, जिस वक़्त रात को उठना चाहेगा, उसी वक़्त आंख खुल जायेगी।

19. क़ब्र के अ़ज़ाब से निजात

पूरी सूरः मुल्क (पारा 29)

ख़ासियत– जो शख़्स इस सूरः को हमेशा पढ़ेगा इन्शा अल्लाह तआ़ला वह क़ब्र के अ़ज़ाब से बचा रहेगा।

20. सफ़र में दिल न घबराये

अल्मुक़ीतु (क़ुव्वत देने वाले)

ख़ासियत– अगर रोज़ेदार इसको मिट्टी पर पढ़कर या लिख कर इसको तर करके सूंघे तो ताक़त और ग़िज़ाइयत (पौष्टिकता) हासिल हो और अगर मुसाफ़िर कूज़े पर सात बार पढ़ कर फिर उसको लिखकर उससे पानी पिया करे तो सफ़र की घबराहट से बचा रहे।

दुनिया की ज़रूरतें

1. फल में बरकत

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ○

व बश्शिरिल्ल ज़ीन आ म नू व अमिलुस्सालिहाति अन न लहुम जन्नातिन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु कुल् लमा रुज़िक़ू मिन हा मिन स म र तिर रिज़्कन क़ा लू हाज़ल्लज़ी रुज़िक्ना मिन क़ब्लु व अुतू बि ही मुत शाबि हा व ल हुम फ़ी हा अज़्वाजुम्मुतह्ह र तुंव्व हुम फ़ी हा ख़ालिदून०

(पारा 1, रुकूअ़ 3)

तर्जुमा– और खुशख़बरी सुना दीजिए आप ऐ पैग़म्बर ! उन लोगों को जो ईमान लाये और अच्छे काम किये इस बात की कि बेशक बहिश्तें उनके लिये हैं कि चलती होंगी उनके नीचे से नहरें। जब कभी दिये जायेंगे वे लोग उन बहिश्तों में किसी फल की ख़ूराक तो हर बार यही कहेंगे कि यह तो वही है जो हमको मिला था इससे पहले और मिलेगा भी उनको दोनों बार का फल मिलता-जुलता और उनके वास्ते इन जन्नतों में पाक बीवियां होंगी और वे लोग इन बहिश्तों में हमेशा के लिये बसने वाले होंगे।

ख़ासियत– जो पेड़ फलते न हों या कम फलते हों उनको (फ़लदार) करने के लिए जुमरात का रोज़ा रखे और कद्दू से इफ़्तार करे (रोजा खोले,) और मग़रिब की नमाज़ पढ़कर ये आयतें काग़ज़ पर लिखे और किसी से

बात न करे और उसको लेकर इस बाग़ के बीच में किसी पेड़ पर लटका दे। अगर उसमें कुछ फल लगा हो तो उससे वरना उसके आस-पास के किसी दरख़्त से फल लेकर खाये और उस पर तीन घूंट पानी पिये और चला आये, इन्शा अल्लाह तआला बरकत होगी।

2. हर आफ़त से फल की हिफ़ाज़त

يَاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

1. या अय्युहन्नासुअ़बुदू रब् ब कुमुल्लज़ी ख़ ल क़ कुम वल्लज़ी न मिन क़ब्लिकुम लअ़ल्लकुम तत् त क़ून॰ अल्लज़ी जअ़ ल लकुमुल अर ज़ फ़िराशंव्वस्समा अ बिनाअंव्व अन्ज़ ल मिनस्समाइ माअन् फ़अख़रज बिही मिनस्सम-राति रिज़ क़ल लकुम फ़ला तजअ़लू लिल्लाहि अन्दादंव्व अन्तुम् तअ़लमून॰ (पारा 1, रुकूअ़ 3)

तर्जुमा- ऐ लोगों ! इबादत इख़्तियार करो अपने परवरदिगार की, जिसने तुमको पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, क्या ताज्जुब है कि तुम दोज़ख़ से बच जाओ। वह ज़ात पाक ऐसी है। जिसने बनाया तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत और बरसाया आसमान से पानी। फिर अदम् के पर्दे से तुम्हारी खूराक के लिये फलों को निकाला। अब मत ठहराओ अल्लाह के मुक़ाबिल और तुम तो जानते-बूझते हो।

ख़ासियत- बाग़, पेड़ और खेत को तमाम आफ़तों और बलाओं से

बचाने के लिये नहा करके जुमरात के दिन रोज़ा रखे और जुमा के दिन उस गांव के चारों कोनों पर दो-दो रक्अत् नफ़्ल पढ़े। अव्वल रक्अ़त में अल्हम्दु और वत्तीन और दूसरी में अल्हम्दु और 'अलम् त र कै फ़' और 'लिई लाफ़ि' पढ़े और इसी तरह दो रक्अ़त उस खेत, बाग़ या गांव के बीच में पढ़े फिर एक क़लम ज़ैतून की लकड़ी का काट कर ज़ाफ़रान से ऊपर ज़िक्र की गयी आयत उसी गांव के किसी पेड़ के हरे पत्ते पर लिखे और ऊ़द की धूनी दे। उस गांव के सिरे पर जिधर से पानी आता हो, गाड़ दे और दूसरा पत्ता लिखकर उस गांव के ख़त्म पर दफ़्न कर दे और तीसरा लिखकर किसी ऊंचे दरख़्त पर बांध दे, इन्शा अल्लाह तआ़ला हर क़िस्म की आफ़त से महफ़ूज़ रहेगा।

٢ وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ

2. व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया ह बुश्रम् बै न यदैं रह मति ही हत्ता इ ज़ा अक़ल्लत सहाबन सिक़ालन सुक़्नाहु लि ब-ल दि म मय्यितिन फ़ अन्ज़ल ना बिहिल मा अ फ़ अख़्रज्ना बिही मिन कुल्लि स्समराति कज़ा लि क नुख़्रिजुल मौतां लअ़ल्लकुम तज़क्करून॰ वल ब ल दुत्तय्यिबु यख़रुजु न बा तु हू बि इज़्नि रब्बिही वल्लज़ी ख़बु स ला यख़्रुजु इल्ला नकिदा कज़ालि क नु सर्रिफ़ुल आयाति लिक़ौमिय्यश्कुरून॰ (पारा 8, रुकूअ़ 14)

तर्जुमा– और वह अल्लाह ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वह ख़ुश कर देती हैं, यहां तक कि जब वे हवाएं भारी बादलों को उठा लेती हैं, तो हम उस बादल को किसी सूखी

ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं, फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं।

फिर उस पानी से हर क़िस्म के फल निकालते हैं। यों ही हम मुर्दों को निकाल कर खड़ा कर देंगे, ताकि तुम समझो और जो सुथरी धरती होती है उसकी पैदावार खुदा के हुक्म से ख़ूब निकलती है और जो ख़राब है, उसकी पैदावार बहुत कम निकलती है। इसी तरह हम दलीलों को तरह-तरह बयान करते रहते हैं, उन लोगों के लिये जो क़द्र करते हैं।

ख़ासियत– यह आयतें पेड़ों की आफ़तों, कीड़ों और सड़ांद और चूहों और तक्लीफ़ देने वाले जानवरों से बचाये रखने के लिये फ़ायदामंद हैं। ज़ैतून की लकड़ी पर सेब के पानी, जाफ़रान और अंगूर के अ़र्क़ से लिखकर, अगूंर के पानी से धोकर, थोड़ा सा पेड़ की जड़ में छोड़ दें और ऊपर से ख़ालिस पानी भर दें इन्शाअल्लाह उस पेड़ की हालत दुरुस्त हो जायेगी।

3. दरख़्त का बोझ या हमल गिरने से बचाने के लिये

यह लिखकर बांधा जाये-

٣ إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝

3. इन्नल्ला ह युम्सिकुस्समावाति वल अर ज़ अन् तज़ू ला॰ व ल इन ज़ा ल ता इन अम् स क हुमा मिन अ हदिम मिम् बअ़्दिही इन्नहू का- न हलीमन् ग़फ़ूरा॰ (पारा 22, रुकूअ़ 17) व लहू मा स क न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हुवस्स मी ड़ल अ़लीम॰ (पारा 7, रुकूअ़ 8) व ल बिसू फ़ी कहफ़िहिम सला स मि अतिन सिनी न वज़्दादू तिसअ़ा (पारा 15, रुकूअ़

وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۝

16) व ला हौ ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम०

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝

4. ला तुद्रिकुहुल अब्सारु व हु व युद्रिकुल अब्सा र व हुवल्लतीफ़ुल ख़बीर० (पारा 7, रुकूअ़ 19)

तर्जुमा– उसको तो किसी की निगाह नहीं पा सकती और वह सब निगाहों को घेर लेता है और वही बड़ा बारीकी जानने वाला और बाख़बर है।

ख़ासियत– इस आयत को अक्सर पढ़ने से तेज़ हवा को सुकून हो जाता है और ज़ालिमों की निगाह से छिपा रहता है।

4. माल, मवेशी और खेत में बरकत

١ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۭ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۝

1. अल्लाहुल्लज़ी ख़ ल क़स्समावाति वल अर ज़ व अन्ज़ ल मिनस्समाइ माअन फ़ अख़ र ज बिही मिनस्स म राति रिज़क़ल लकुम व सख़्ख़ र लकुमुल फ़ुल्क लितज्रि य फ़िल्बह्रि बि अम्रिही व सख़्ख़ र लकुमुल अन्हा र व सख़्ख़ र लकुमुश्शम स वल्क़ म र दायिबैनि व सख़्ख़ र लकुमुल्लै ल वन्नहा र व आताकुम मिन कुल्लि मा स अल्तुमूहु व इन त अुद्दू निअ़मतल्लाहि ला तुहसूहा इन्नल इन्सा न ल ज़लूमुन कफ़्फ़ार०

(पारा 13, रुकूअ़ 17)

तर्जुमा– अल्लाह ऐसा है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और आसमान से पानी (यानी मिंह) बरसाया। फिर उस पानी से फलों की क़िस्म से तुम्हारे लिये रोज़ी पैदा की और तुम्हारे फ़ायदे के लिये कश्ती (और जहाज) को सधाया कि वह ख़ुदा के हुक्म (व क़ुदरत), से दरिया में चले और तुम्हारे फ़ायदे के वास्ते नेहरों को (अपनी क़ुदरत का) मुसख़्ख़र बनाया और तुम्हारे फ़ायदे के वास्ते सूरज और चांद को मुसख़्ख़र बनाया, जो हमेशा चलते ही रहते हैं और तुम्हारे नफ़ा के वास्ते दिन और रात को मुसख़्ख़र (ताबे) बनाया और जो चीज़ तुमने मांगी, तुमको हर चीज़ दी और अल्लाह तआ़ला की नेमतें अगर गिनने लगें तो गिनती में नहीं ला सकते (मगर) सच यह है कि आदमी बहुत ही बेइन्साफ़, बड़ा ही नाशुक्रा है।

ख़ासियत– जो शख़्स इसको सुबह-शाम और सोने के वक़्त पढ़ा करे या कहीं जाने के वक़्त पढ़े तो तमाम ज़मीनी और समुंद्री आफ़तों से बचा रहे और माल व खेत व मवेशी में बरकत हो।

5. खेत और बाग़ की पैदावार बढ़िया हो

1. إِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ط يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ط ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَأَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ○

1. इन्नल्ला ह फ़ालिक़ुल्हब्बि वन्न वा युख़्रिजुल्हय्य मिनल मय्यिति व मुख़्रिजुल मय्यिति मिनलहय्यि ज़ालिकुमुल्लाहु फ़ अन्ना तु फ़ कू न०

(पारा 7, रुकूअ़ 18)

तर्जुमा– बेशक अल्लाह फाड़ने वाला है दाने को और गुठलियों को, वह जानदार को बेजान से निकाल लाता है और वह बेजान को जानदार से निकालने वाला है। अल्लाह यही है सो तुम कहां उल्टे चले जा रहे हो।

ख़ासियत- खेत के बढ़िया होने और उसकी हिफ़ाज़त के लिये और पेड़ों की पैदावार और बढ़िया फल निकलनें के लिये किसी पाक बरतन में ज़ाफ़रान और काफ़ूर से लिखकर और बिला जगत के कुएं के पानी से धोकर जो बीज या ग़ल्ला बोना हो उसको भिगो कर बो दें या वह पानी पेड़ की जड़ में छोड़ा करें। इन्शा अल्लाह तआला बरकत और हिफ़ाज़त होगी और फलों में ख़ूबी और मिठास पैदा होगी।

٢ـ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝

2. फ़ ज़ ब हूहा व मा कादू यफ़्अ़लून॰ (पारा 1, रुकूअ़ 8)

ख़ासियत- यह आयत पढ़कर ख़रबूज़ा या और कोई चीज़ काटे तो इन्शा अल्लाह तआला मीठी और लज़ीज़ मालूम होगी।

٣ـ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

3. व हुवल्लज़ी अन्ज़ल मिनस्समाइ माअन् फ अख़रज्ना बिही नबा त कुल्लि शैइन फअख़्रजना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु हब्बम् मु त राकि बन् व मिनन्नख़्लि मिन तल्इहा किन्वानुन् दानि यतुंव्व जन्नातिम मिन आनाबिंव्व ज़्ज़ैतूनव र्रुम्मा न मुश्तबिहंव्व ग़ै र मु त शाबिहिन उन्ज़ुरू इला स म रिहि इज़ा असम र व यन्ड़िहि इन् न फी ज़ालिकुम ल आयातिल लिक़ौमिय यूमिनून॰ (पारा 7, रुकूअ़ 18)

ख़ासियत- इस आयत को खजूर की गुठली के ग़िलाफ़ से जब अव्वल-अव्वल निकले, जुमा के रोज़ लिख कर सिंचाई के कुएं में डाल दे। उसके पानी में और वह पानी जिस पेड़ या फल में दिया जावे उन सब में

बरकत और पाकीज़गी पैदा हो और तमाम जिन्न व इन्सान की बुरी नज़र और सब आफ़तों से बचा रहे।

وَهُوَ الَّذِىٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ط كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ وَلَا تُسْرِفُوْا ط اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ○

4. व हुवल्लज़ी अन्श अ जन्नातिम् मअ़रूशातिंव्व ग़ै र मअ़रूशातिंव् वन्न ख़् ल वज़्ज़र अ़ मुख़्तलिफ़न उकुलुहू वज़्ज़ैतू न वर्रुम्मा न मु त शा बिहंव्व ग़ै र मु त शाबिहीन कुलू मिन स म रिही इ ज़ा अस्म र व आतू हक़्क़ हू यौ म ह सा दि ही व ला तुस्रिफ़ू इन्नहू ला युहिब्बुल मुस्रिफ़ीन॰

(पारा 8, रुकूअ़ 4)

ख़ासियत– इस आयत को ज़ैतून की तख़्ती पर लिख कर बाग़ के दरवाज़े पर लगाये तो ख़ूब फल पैदा हों और अगर मेंढे के बनाये चमड़े पर लिख कर जानवर के गले में बांध दिया जाए तो तमाम आफ़तों से बचा रहे।

الٓمّٓرٰ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ط وَالَّذِىٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ اَللّٰهُ الَّذِىْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ط كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ط يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ○ وَهُوَ الَّذِىْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِىَ وَاَنْهٰرًا ط وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ ط اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (پ ۱۳ ع ۸)

5. अलिफ़ लाम् मीम् रा तिल्क आयातुलकिताबि वल्लज़ी उन्ज़ि ल इलै क मिर् रब्बि कल्हक़्क़ु व ला किन्न अक् सरन्नासि ला यूमिनून॰

अल्लाहुल्लज़ी र फ़ अस्समावाति बिग़ैरि अ़ म दिन तरौ न हा सुम्मस्त वा अ़लल्अर्शि व सख़्ख़रश्शम्स वल्क़मर कुल्लुंय्यजरी लि अ ज लिम्मु सम्मन युदब्बिरुल्अम्र युफ़स्सिलुल आयाति लअ़ल्लकुम बिलिक़ाइ रब्बि कुम तूक़िनून० व हु वल्लज़ी मद्दल अर्ज़ व ज अ़ ल फ़ी हा रवासि य व अन्हारा व मिन्कुल्लिस्समराति ज अ़ ल फ़ी हा ज़ौ जै निस् नयनि युग़्शिल्लै लन्नहार इन्न फ़ी ज़ालि क ल आयातिल्लि क़ौमिंय्यतफ़क्करून०

(पारा 13, रुकूअ़ 7)

ख़ासियत- बाग़ों व मकानों व मिल्कियतों व दुकानों की आबादी और तिजारत की तरक़्क़ी के लिए इन आयतों को ज़ैतून के चार पत्तों पर लिख कर मकान या दुकान या बाग़ के चारों कोनों में दफ़्न कर दे, बहुत तरक़्क़ी और आबादी हो।

6. ज़मीन और पेड़ सींचने का अ़मल

एक ठीकरी पर यह आयत-

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝

'व फ़ज्जर्नलअर्ज़ अ़ुयूनन् फ़ल्तक़ल्माउ अ़ ला अम्रिन क़द क़ुदिर' लिख कर और आंख बन्द करके वह ठीकरी उस ज़मीन पर डाल दो कि उसके गिरने की जगह नज़र न आये इन्शा अल्लाह तआ़ला बारिश होगी।

7. दीगर- बनी हाशिम में से एक शख़्स का क़ौल है कि मैंने सूरः फ़ातिहा तमाम व कमाल लिखी और 'मालिकि यौमिद्दीन' सात बार लिखा और उसको ऐसे पेड़ों में छिड़का जो कई साल से बे फल व बे पत्ते हो गये थे। ख़ुदा-ए-तआ़ला के फ़ज़्ल से बहुत ही जल्दी उनमें पत्ते आ गये और फल

आने लगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ
فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ
ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ
عَنِيدٍ ۝ مِّن وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ ۝ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا
يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِن
وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝

8. व क़ालल्लज़ी न क फ़ रू लिरुसुलिहिम लनुख़रिजन्नकुम मिन अर्ज़ि ना औ ल तअूदुन्न फ़ी मिल्लतिना फ़ औ हा इलैहिम रब्बुहुम ल नुह लिकन्नज़्ज़ालिमीन॰ व ल नुस कि नन्न कुमुल अर्ज़ मिम् बअ़दिहिम ज़ालि क लिमन् ख़ा फ़ मक़ामी व ख़ा फ़ वईद॰ वस्तफ़्तहू व ख़ा ब कुल्लु जब्बारिन अ़नीदिम् मिंव्व राइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्माइन सदीदिंय्य त जर्र अुहू व ला य का दु युसी ग़ुहू व यातीहिल्मौतु मिन कुल्लि मकानिंव्व मा हु व बिमय्यितिन॰ व मिंव्वराइही अ़ज़ाबुन् ग़लीज़॰ (पारा 13, रुकूअ़ 15)

ख़ासियत– जिसके खेत में कीड़ा या चूहा लग गया हो, ज़ैतून की चार तख़्तियों पर स्याही से इन आयतों को बुध की सुबह के वक़्त निकलने से पहले लिख कर एक-एक कोने में एक-एक तख़्ती दफ़्न कर दे और गाड़ते वक़्त इन आयतों को बार-बार पढ़े, इन्शा अल्लाह तआला सब तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवर भाग जायेंगे।

9. सूर: मुजादला (पारा 28)

ख़ासियत– मरीज़ के पास पढ़ने से उसको नींद और सुकून आये और अगर काग़ज़ पर लिख कर ग़ल्ले में रख दे तो उसमें कोई बिगाड़ न हो।

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ ۱۰

10. ज़ालि क फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल् फ़ज़्लिल अज़ीम० (पारा 28, रुकूअ़ 11)

तर्जुमा– यह (रसूल सल्ल० के ज़रिए गुमराही से निकल कर हिदायत की तरफ़ आना) ख़ुदा का फ़ज़्ल है। वह फ़ज़्ल जिसको चाहता है, देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

ख़ासियत– सीपी के टुकड़े पर जुमा के रोज़ लिख कर माल या खलिहान में रखने से बरकत व हिफ़ाज़त रहे।

11. सूरतुत्ततफ़ीफ़ (पारा 30) (वैलुल्लिल्मुतफ़्फ़िफ़ीन)

ख़ासियत– किसी इकट्ठी की हुई चीज़ पर पढ़ दे तो दीमक वग़ैरह से बचा रहे।

13. सूरतुत्तीन (पारा 30) (वत्तीन)

ख़ासियत– ग़ल्ला की कोठरी में पढ़ कर दम करने से बरकत हो और नुक़सान पहुंचाने वाले जानवरों से हिफ़ाज़त रहती है।

7. जानवर का दूध और कुंएं का पानी बढ़ जाये

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَالِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ط
وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ط وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ
مِنْهُ الْمَاءُ ط وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ط وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ٥

सुम्म क़सत क़ुलूबुकुम मिम् बअ़दि ज़ालि क फ़हिय कल्हिजारति औ अशद्दु क़स्वः व इन्न मिनल्हिजारति लमा यतफ़ज्जरु मिन्हुल् अन्हारु व

इन्न मिन्हा लमा यश्शक़्क़क़ु फ यख़रुजु मिन्हुल्माउ व इन्न मिन्हा ल मा यह्बितु मिन ख़श्यतिल्लाहि व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन अ़म्मा तअ़मलून॰

(पारा 1, रुकूअ़ 9)

ख़ासियत- अगर गाय या बकरी का दूध घट जाये तो कोरे तांबे के बर्तन में इस आयत को लिख कर और पानी से धोकर उस जानवर को पिलाया जाये, इन्शा अल्लाह दूध बढ़ जायेगा। अगर कुंएं या नहर या चश्मे का पानी घट जाये तो यह आयत ठीकरी पर लिख कर उसमें डाल दे।

8. दुश्मन के बाग़ की बर्बादी

1. सूरतुन्नह्ल (पारा 14)

ख़ासियत- अगर इसको लिख कर किसी बाग़ में रख दे तो तमाम पेड़ों का फल जाता रहे और जो किसी मज्मे में रख दे, सब बर्बाद और तबाह हो जायें।

9. कारोबार में तरक़्क़ी

١ اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○

1. इन्नल्लाहश्तरा मिनल मूअमिनीन अन्फ़ुसहुम व अम्वा ल हुम बिअन्न लहुमुल् जन्नः युक़ातिलू न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़यक़्तुलू न व युक़्तलू न व अ़ दन् अ़लैहि हक़्क़न् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि वल्क़ुरआनि व मन् औफ़ा

बिअह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबइ़िकुमुल्लज़ी बा यअ़तुम बिही० व ज़ालि क हुवल्फ़ोज़ुल अ़ज़ीम० (पारा 11, रुकुअ़ 3)

तर्जुमा- बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों से उनकी जानों और मालों को इस बात के बदले ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी। वे लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, जिसमें क़त्ल करते हैं और क़त्ल किये जाते हैं। इस पर सच्चा वायदा किया गया है तौरात में और इन्जील में और क़ुरआन में और (यह मुसल्लम है कि) अल्लाह से ज़्यादा अपने वायदे को कौन पूरा करने वाला है तो तुम लोग अपनी इस बैअ़ पर जिस का तुमने (अल्लाह तआ़ला से) मामला ठहराया है, ख़ुशी मनाओ और यह बड़ी कामियाबी है।

ख़ासियत- इन आयतों को लिख कर तिजारत के माल में रखे तो बेहतरी और तरक़्क़ी की वजह होगी।

2. जो शख़्स आयतल्कुर्सी को लिख कर तिजारत के माल में रखा करे, शैतान के वस्वसे और सरकश शैतानों के मक्र और ईज़ा (तक्लीफ़) से बचा रहे और फ़क़ीर से ग़नी हो जाए और इस तरह रोज़ी मिले कि उसको गुमान भी न हो और जो इसको सुबह या शाम और घर में जाते वक़्त और बिस्तर पर लेटने के वक़्त हमेशा पढ़ा करे, तो चोरी और डूबने और जलने से बचा रहे और तन्दुरुस्ती नसीब हो।

٣ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ
عَلِيْمٌ ۝ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

3. क़ुल इन्नल्फ़ज़्ल बियदिल्लाहि यूतीहि मय्यशा उ वल्लाहु वासिअ़ुन अ़लीम० यख़्तस्सु बिरहमतिही मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल अ़ज़ीम०

(पारा 3, रुकूअ़ 16)

तर्जुमा- (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम !) आप कह दीजिए कि बेशक फ़ज़्ल तो ख़ुदा के क़ब्ज़े में है, वह इसको जिसे चाहें अ़ता फ़मर्यिं और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुस्अ़त वाले हैं, ख़ूब जानने वाले हैं, ख़ास कर देते हैं अपनी रहमत जिसको चाहें और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं।

ख़ासियत- जुमरात के रोज़ वुज़ू के साथ किसी क़िस्मती आदमी के कुरते के टुकड़े पर इस आयत को लिखकर दूकान या मकान या ख़रीद व फ़रोख़्त की जगह में लटकाये, ख़ूब आमदनी हो।

4. **दीगर-** और उस काग़ज़ को लिखकर किसी बेकार आदमी के बाज़ू पर बांध दिया जाए, बाकार बन जाए या जिसने कहीं निकाह का पैग़ाम भेजा हो, उसके बाज़ु पर बांध दिया जाए, उसका पैग़ाम मन्ज़ूर हो जाए।

الٓمّٓرٰ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ط وَالَّذِىْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِىْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ط كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ط يُدَبِّرُ
الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِىْ مَدَّ الْاَرْضَ
وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِىَ وَاَنْهٰرًا ۝ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ
اثْنَيْنِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ ط اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

5. अलिफ़-लाम्-मीम-रा० तिल्क आयातुल्किताबि वल्लज़ी उन्ज़ि ल इलै क मिरब्बिकल्हक्क़ु व ला किन्न अक्सरन्नासि ला युमिनून० अल्लाहुल्ल ज़ी र फ़ अ़स्समावाति बिग़ैरि अ़ म दिन तरौ न हा सुम्मस्त वा अ़ललअ़र्शि व सख़्ख़ रश्शम स वल्क़म र कुल्लुंय्यजरी लि अ जलिम मुसम्मा युदब्बिरुल अम् र युफ़स्सिलुल आयाति लअ़ल्लकुम बिलिक़ाइ रब्बिकुम तूक़िनून० व हुवल्लज़ी मद्दल अर ज़ व ज अ़ ल फ़ीहा रवासि य व अन्हारा० व मिन्

कुल्लिस् समराति ज अ़ ल फ़ीहा ज़ौ जै निस्नै नि युग़शिल्लै लन् न हार इन्न फ़ी ज़ालि क ल आ यातिल लिक़ौमिंय्य तफ़क्करून०

(पारा 13, रुकूअ 7)

ख़ासियत– बाग़ों की और तिजारत की तरक़्क़ी के लिए इन आयतों को ज़ैतून के चार पत्तों पर लिखकर मकान, दुकान या बाग़ के चारों कोनों में दफ़्न कर दे, बहुत तरक़्क़ी और आबादी हो।

6. अल्हलीमु (बुर्दबार)

ख़ासियत– अगर रईस आदमी इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, उसकी सरदारी ख़ूब जमे और राहत से रहे और अगर काग़ज़ पर लिखकर पानी से धोकर अपने पेशे के आलों और औज़ारों पर मले तो इस पेशे में बरकत हो। अगर कश्ती हो, डूबने से बची रहे। अगर जानवर हो हर आफ़त से बचा रहे।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ط قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ
وَّلَا بِكْرٌ ط عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ط فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ٥ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ
لَّنَا مَا لَوْنُهَا ط قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ٥ قَالُوا ادْعُ
لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا ط وَإِنَّآ إِن شَآءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ

7. कालुदउ़ ल ना रब्ब क युबय्यिल ल ना माहि य क़ा ल इन्न हू यक़ूलु इन्न हा ब क़ र तुल् ला फ़ारिज़ुंव्व ला बिकरुन अ़वानुम बै न ज़ालि क फ़ फ़् अ़ लू मा तुअ्मरून० का लु द अ़ु ल ना रब्ब क युबय्यिल ल ना मा लौनु हा का ल इन्न हू यक़ूलु इन्नहा ब क़ रतुन सफ़राउ फ़ाक़िउल्लौनु हा तसुर्रुन्नाज़िरीन० कालुदउ़ ल ना रब्ब क युबय्यिल ल ना माहिय० इन्नल ब क़ र तशाब ह अ़ लैना व इन्ना इन्शा अल्लाहु ल मुहतदून०

(पारा 1, रुकूअ़ 8)

ख़ासियत– जो शख़्स कोई जानवर या लिबास या मेवा या और कोई चीज़ ख़रीदना चाहे और उसको मंज़ूर हो कि अच्छी चीज़ मिले तो उस चीज़ के देखने-भालने के वक़्त इन आयतों को पढ़ता रहे। इन्शा अल्लाह तआ़ला मनचाही चीज़ मिले।

٨ إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرٰتٍ بِأَمْرِهِ ط أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ط تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِينَ ○

8.. इन्न रब्बकुमुल्लाहु ल्लज़ी ख़ ल क़ स्समावाति वल अर ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन,सुम्मस्त वा अ़लल् अ़र्शि युग़्शिल् लैलन् न हा र य त लुबुहु हसीसंव्व श्शम स व ल क़ म र वन्नुजू म मुसख़्ख़ रातिम बि अम्रिही अला ल हु ल ख़ल्क़ु वल्अम्रु तबारकल् लाहु रब्बुल् आ़ ल मीन०

(पारा 8, रुकूअ 14)

ख़ासियत– अगर यह आयत सूर: बराअत की आख़िरी आयतों के साथ मकान, दुकान या अस्बाब व माल पर पढ़ दी जाए तो हर तरह की हिफ़ाज़त रहे।

10. मज़दूर की मुश्किल आसान हो

اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۚ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

अल्आ न ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अ़न्कुम व अ़लि म अन्न फ़ी कुम ज़अ़् फ़ा फ़इंय्यकुम् मिन्कुम मि अतुन साबिरतुंय् यग़ लिबू मि अतैनि व इंय्यकुम् मिन्कुम अल्फ़ुंय्यग़लिबू अल्फ़ैनि बिइज़्निल्लाहि वल्लाहु म अ़स्साबिरीन०

(पारा 10, रुकूअ़ 5)

ख़ासियत– बोझ उठाने वाले और मुश्किल काम करने वाले अगर इस आयत को जुमा की अस्र से शुरू करके अगले जुमे की नमाज़ पर ख़त्म करें, पांचों नमाज़ों के बाद और कामों से फ़ारिग़ होने के बाद पढ़ा करें, तो काम में तख़्फ़ीफ़ और आसानी हर क़िस्म की हासिल हो।

11. बला व मुसीबत से नजात हासिल होना

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ۝

हस्बुनल्लाहु व निअ़् मल वकील, (पारा 4, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा– हमको हक़ तआ़ला काफ़ी है और वही सब काम सुपुर्द करने के लिये अच्छा है।

ख़ासियत– जो कोई किसी मुसीबत और बला में मुब्तला हो, इस आयत को पढ़ा करे, इन्शा अल्लाह तआ़ला उसकी मुसीबत जाती रहेगी।

ع اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ۝

2. अन्नी मस्सनियज़्ज़ुर्रु व अन् त अर्हमुर्राहिमीन०

(पारा 17, रुकूअ़ 6)

तर्जुमा– मुझको यह तक्लीफ़ पहुंच रही है और आप सब मेहरबानों

से ज़्यादा मेहरबान हैं।

ख़ासियत- बला और मुसीबत के वक़्त पढ़े, इन्शा अल्लाह तआ़ला नजात होगी।

12. दुआ क़ुबूल होने के लिये

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی
الْاَلْبَابِ ۙ الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰی جُنُوْبِهِمْ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝
رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا
سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ
عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۚ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا
یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّیْ لَاۤ اُضِیْعُ عَمَلَ
عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰی ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا
مِنْ دِیَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِیْ سَبِیْلِیْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ
وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ لَا یَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِی الْبِلَادِ ؕ مَتَاعٌ
قَلِیْلٌ ۟ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ
جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَیْرٌ
لِّلْاَبْرَارِ ۝ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ یُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكُمْ
وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِمْ خٰشِعِیْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا یَشْتَرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ اُولٰٓىِٕكَ
لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ
اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

इन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि लआयातिल् लिउलिल् अल्बाबि॰ अल्लज़ी न यज़्कुरू नल्ला ह क़ियामंव्व क़ुअूदंव्व अ़ला जुनूबिहिम व य त फ़क्करू न फ़ी ख़ल्क़ि स्समावातिवल अर्ज़ि रब्ब ना मा ख़ लक़ त हा ज़ा बातिलन सुब्हा न क फ़ क़िना अज़ाबन्नारि॰

रब्ब ना इन्न क मन तुद ख़िलिन्ना र फ़ क़द अख़ज़ैतहू व मा लिज़्ज़ालिमी न मिन अन्सा र॰ रब्बना इन्न ना समिअ् ना मुनादियंय्युनादी लिल् ईमानि अन् आमिनू बिरब्बिकुम फ़ आमन्ना रब्ब ना फ़ग़् फ़िर ल ना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर अ़न्ना सय्यि आतिना व तवफ़्फ़ना मअ़ल् अबरारि॰ रब्ब ना व आति ना मा व अ़त्त ना अ़ला रुसुलि क वला तुख़्ज़ि ना यौमल क़ियाम ति इन्न क ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़दि॰ फ़स्तजा ब लहु म रब्बु हुम अन्नी ला उज़ीअ़ु अ़ म ल आ़मिलिम मिन्कुम मिन ज़ क रिन औ उन्सा बअ़ज़ुकुम मिम् बाज़िन फ़ल्ल ज़ी न हा ज रू व उख़्रि जू मिन दियारिहिम व ऊ ज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू व क़ुतिलू ल उकफ़्फ़िरन्न अ़न्हुम सय्यि आतिहिम व ल उद्ख़िलन्न हुम जन्नातिन तज्री मिन तह्ति ह ल अन्हारु सवाबम् मिन अ़िन्दिल्लाहि वल्लाहु इन्द हू हुस्नुस्सवाब॰ ला यग़ुर्रन्न क तक़ल्लु बुल् लज़ी न क फ़ रू फ़िल बिलादि मताउ़न क़लीलुन् सु म् म मा वाहुम जहन्न मु व बिसल मिहाद॰ लाकिनिल्लज़ीनत्त क़ौ रब्बहुम लहुम जन्नातुन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ी हा नु ज़ु ल म मिन अ़िन्दिल्लाहि व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुल लिल् अब्रारि॰ व इन्न मिन अह्लिल् किताबि लमंय्यूमिनु बिल्लाहि व मा उन्ज़ि ल इलैकुम व मा उन्ज़ि ल इलैहिम ख़ाशिईन लिल्लाहि ला यशतरू न बि आयातिल्लाहि स म न न क़ली लन् उलाइ क लहुम अज्रुहुम इन्द रब्बिहिम इन्नल्ला ह सरीउ़ल हिसाब॰ या अय्युहल्लज़ी न आम नूस्बिरू व साबिरू व राबितू वत्त क़ुल्ला ह लअ़ल्लकुम तुफ़ लि हून॰

(पारा 4, रुकूअ़ 11)

ख़ासियत– रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तहज्जुद की नमाज़ के बाद इस रुकूअ़ को पढ़ा करते थे, इससे बढ़ कर और क्या फ़ज़ीलत होगी कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इसको पढ़ा करते थे। इसको

उस वक़्त पढ़ कर जो दुआ मांगे इन्शा अल्लाह तआ़ला पूरी होगी।

२. وَإِذَا جَآءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَآ أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ

2. व इ ज़ा जा अत् हुम आयतुन क़ा लू लन नू मि न हत्ता नूता मिस्ल मा ऊतिय रुसुलुल्लाहि अल्लाहु आल मु है सु यज्अ़लू रिसा ल त हू०

(पारा 8 रुकूअ़ 2)

तर्जुमा– और जब इनको कोई आयत पहुँचती है तो कहते हैं कि हम हर्गिज़ ईमान नहीं लायेंगे जब तक कि हम को भी ऐसी ही चीज़ न दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी गयी है, इस मौक़े को तो ख़ुदा ही ख़ूब जानता है।

ख़ासियत– जहां पैग़ाम भेजना हो, इन दो आयतों में लफ़्ज़ अल्लाह दो जगह मिला हुआ है। जो शख़्स इन दोनों लफ़्ज़ अल्लाह के दर्मियान दुआ़ मांगे इन्शा अल्लाह तआ़ला वह ज़रूर क़ुबूल हो जाए।

३. فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَارًا ۝

3. फ़क़ुल्तुस् तग़्फ़िरू रब्ब कुम इन्नहू का न ग़फ़्फ़ारंय् युर्सिलिस्समाअ अ़लैकुम मिद्रारंव्व युम्दिद् कुम बिअम्वालिंव्व बनी न व यज्अ़ल् लकु म जन्नातिंव्व यज्अ़ल्लकुम अन्हारा० (पारा 29, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा– और मैंने कहा कि तुम अपने परवरदिगार से गुनाह बख़्शवाओ, बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला है। तुम पर ज़्यादा बारिश भेजेगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा।

ख़ासियत- कुछ लोग हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि के पास आये। किसी ने पानी न बरसने की शिकायत की और किसी ने औलाद न होने की शिकायत की और किसी ने दूसरी ज़रूरत के लिए कहा। आपने सब के जवाब में फ़रमाया कि इस्तिग़फ़ार किया करो। एक शख़्स ने पूछा कि हज़रत ! इसकी क्या वजह कि आपने सबको इस्तिग़फ़ार ही के लिए फ़र्माया है। आपने जवाब में इन तीनों आयतों को पढ़ा और फ़रमाया कि देखो, अल्लाह तआ़ला ने अपने कलाम पाक में इसी को इर्शाद फ़रमाया है।

٤ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝

4. अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल्हय्युल् क़य्यू मु ला ता ख़ु ज़ु हू सि न तुंव्व ला नौ मुन लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी यश फ़अु इन्द हू इल्ला बिइज़्निही यअ़लमु मा बै न ऐदीहिम व मा ख़ल्फ़ हुम व ला युहीतू न बिशैइम मिन् इल्मिही इल्ला बि मा शा अ व सि अ़ कुर्सिय्यु हुस्स मा वाति वल्अर्ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हु व ल अ़लिय्युल अ़ज़ीम०

(पारा 3, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा- अल्लाह (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं। ज़िंदा है, संभालने वाला है, न उसको ऊंघ दबा सकती है और न नींद। उसी के मम्लूक हैं सब, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। ऐसा कौन शख़्स है जो उसके पास सिफ़ारिश कर सके, बिना उसकी इजाज़त के। वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व ग़ायब हालात को और वह मौजूदात उसके मालूमात में से किसी चीज़ को अपने इल्म के इहाते

में नहीं ला सकते, मगर जिस क़दर चाहे, उसकी कुर्सी ने तमाम ज़मीनों और आसमानों को अपने घेरे में ले रखा है और अल्लाह तआला को इन दोनों की हिफ़ाज़त कुछ गरां नहीं गुजरती। वह आलीशान है।

ख़ासियत– जुमा के रोज़ नमाज़ अस्र के बाद तन्हाई में सत्तर बार पढ़ने से क़ल्ब (दिल) में अजीब कैफ़ियत पैदा होगी। इन हालात में जो दुआ करे क़ुबूल हो।

5. अस्समीअु (सुनने वाले)

ख़ासियत– जुमरात के रोज़ नमाज़े चाश्त के बाद पांच सौ मर्तबा पढ़ कर जो दुआ करे क़ुबूल हो।

6. अलमुजीबु (क़ुबूल करने वाले)

ख़ासियत– दुआ के साथ इसका ज़िक्र करना दुआ की क़ुबूलियत की वजह है।

13: ज़रूरत पूरी होना

1. सूरः यासीन

ख़वास– जिस ज़रूरत के लिए 41 बार पढ़े, वह पूरी हो, ख़ौफ़ज़दा हो अम्न में हो जाये, बीमार हो बीमारी से अच्छा हो जाये, या भूखा हो पेट भर जाये।

दीगर– सूरः यासीन में चार जगह लफ़्ज़ 'अर्रहमान' आया है और तीन जगह लफ़्ज़ अल्लाह और इसी तरह सूरः 'तबारकल्लज़ी' में, बस जो शख़्स सूरः यासीन पढ़े और जहां लफ़्ज़ रहमान आये दाहिने हाथ की एक उंगली बन्द कर ले और जहां लफ़्ज़ अल्लाह आए, बाएं हाथ की उंगली बन्द कर ले, यहां तक कि सूरः के ख़त्म पर दाहिने हाथ की चार उंगलियां

बन्द हो जायेंगी और बायें हाथ की तीन उंगलियां, फिर सूरः तबारकल्लज़ी पढ़े और लफ़्ज़ रहमान पर दाहिने हाथ की एक उंगली खोल दे और लफ़्ज़ अल्लाह पर बायें हाथ की उंगली खोल दे। उसकी तमाम ज़रूरतें पूरी हों और दुआयें क़ुबूल हों और उंगलियों का खोलना-बन्द करना कन् उंगलयों से शुरू होगा।

2. पूरी सूरः अ़न्आम (पारा 7)

ख़ासियत– जिस मुहिम और ग़रज़ के लिए चाहे इस सूरः को पढ़कर दुआ़ करे, इन्शा अल्लाह तआ़ला पूरी होगी।

3. नून और जितने मुक़त्तआ़त क़ुरआन शरीफ़ में हैं।

ख़ासियत– इन सब को अंगुश्तरी पर खुदवा कर जो शख़्स अपने पास रखेगा तो इन्शा अल्लाह तआ़ला उसकी सब ज़रूरतें पूरी होंगी और ख़ैर व ख़ूबी से बसर होगी।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

4. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को बारह हज़ार बार इस तरह पढ़े कि जब एक हज़ार बार हो जाए, दो रकअ़त पढ़कर अपनी ज़रूरत के वास्ते दुआ़ करे, फिर पढ़ना शुरू करे, एक हज़ार के बाद फिर इसी तरह दो रकअ़त पढ़े, ग़रज़ इस तरह बारह हज़ार मर्तबा ख़त्म करे, इन्शा अल्लाह उसकी ज़रूरत पूरी होगी।

5. अल्मुलकु के हर्फ़ जुदा-जुदा इस तरह लिखे अलिफ़ लाम मीम् लाम काफ़ और हर रोज़ दर्मियान के हर्फ़ यानी मीम् को चालीस बार यह आयत (क़ुलिल्ला हुम्म मालि कल मुल्कि से बिग़ैरि हिसाब० तक) पढ़ता हुआ देखे। अल्लाह तआ़ला दुनिया व आख़िरत के सामान उसके लिए दुरुस्त फ़रमायें और सब हाजतें पूरी फ़रमायें।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝

6. फ़ इन् तवल्लौ फ़ क़ुल हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि

तवक्कल्तु व हु व रब्बुल अर्शिल अ़ज़ीम० (पारा 11, रुकूअ 5)

ख़ासियत- हज़रत अबू दर्दा रज़ि० से मन्क़ूल है कि जो शख़्स इस आयत को हर रोज़ सौ बार पढ़े, तमाम मुहिम्माते दुनिया व आख़िरत के लिए उसको काफ़ी है, और एक रिवायत में है कि वह शख़्स गिर पड़ने, डूब मरने, सख़्त चोट लगने से न मरेगा। लैस बिन सअ़ीद से मन्क़ूल है कि किसी शख़्स की रान में चोट लग गई थी, जिससे हड्डी टूट गई थी। कोई शख़्स उसके ख़्वाब में आया और कहा कि जिस मौक़े में दर्द है, उस जगह अपना हाथ रखकर यह आयत पढ़ो, उसकी रान अच्छी हो गई और उसकी ख़ासियत यह भी है कि उसको लिखकर, बांध कर जिस हाकिम के रूबरू जिस काम के लिए जाये वह उसकी हाजत ख़ुदा के हुक्म के साथ पूरी करे।

7. **दीगर-** मुहम्मद बिन दस्तौविया से नक़ल किया गया है कि मैंने इमाम शाफ़ई की बियाज़ में उनके हाथ का लिखा हुआ देखा कि यह नमाज़े हाजत है हज़ार हाजत के वास्ते । हज़रत ख़िज़्र ने किसी आ़बिद को सिखाई थी। दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, अव्वल में सूरः फ़ातिहा एक बार और क़ुल या अय्युहल् काफ़िरू न दस बार । दूसरी रक्अ़त में सूरः फ़ातिहा एक बार और क़ुल हुवल्लाहु ग्यारह बार, फिर सलाम फेर कर सज्दे में जाये और उसमें दस बार-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ــــــ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अ़ज़ीम और दस बार-

रब्ब ना आतिना फ़िद्दुन्या हस न तंव्व फ़िल आख़ि रति हस न तंव्व क़िना अज़ाबन्नारि' पढ़ कर अपनी ज़रूरत मांगे। हकीम अबुल क़ासिम फ़रमाते हैं कि मैंने उस आ़बिद के पास क़ासिद भेजा कि मुझ को यह नमाज़ सिखलाइए। उन्होंने बतला दी। मैंने पढ़कर इल्म व हिक्मत की दुआ़ की। अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाया और हज़ार ज़रूरतें मेरी पूरी फ़रमाईं।

हकीम साहब फ़रमाते हैं कि जो शख़्स इस नमाज़ को पढ़ना चाहे, जुमा की रात में नहाए, पाक कपड़े पहने और आख़िर में ज़रूरत पूरी करने की नीयत से पढ़े, इन्शा अल्लाह वह ज़रूरत पूरी हो।

14. ज़रूरत पूरी होने के अ़मल

इब्ने सीरीन रहमतुल्लाह अ़लैहि से नक़ल किया गया है कि हम किसी सफ़र में थे। एक नहर पर ठहरना हुआ। लोगों ने डराया कि यहां लुट जाते हैं। मेरे सब साथी वहां से चल दिए, मगर चूंकि मैं आयाते हिर्ज़ पढ़ा करता था, इसलिए वहां ठहरा रहा। जब रात हुई, अभी मैं सोने भी न पाया था कि कुछ आदमी नंगी तलवार लिए हुए आए, मगर मुझ तक न पहुंच सकते थे। जब सुबह को वहां से चला, एक शख़्स घोड़े पर सवार मिला और मुझ से कहा कि हम लोग रात में सौ बार से ज़्यादा तेरे पास आये, मगर बीच-बीच में एक लौहे की दीवार रोक बन जाती है। मैंने कहा कि यह उन आयात की बरकत है। उस शख़्स ने अह्द किया कि अब यह काम न करूंगा।

आयतें इस तरह हैं-

الٓمٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى
مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ
سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ
اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا
بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ۝ لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى لَا انْفِصَامَ
لَهَا وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓئُهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا
وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ
عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ

لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا وقفہ وَاغْفِرْ لَنَا وقفہ وَارْحَمْنَا وقفہ اَنْتَ مَوْلٰـنَا فَانْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۞ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ
وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ۭ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۭ تَبٰرَكَ
اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۞
وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۭ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ
الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ
سَبِيْلًا ۞ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۞
وَالصّٰۗفّٰتِ صَفًّا ۙ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ اِنَّ اِلٰهَكُمْ
لَوَاحِدٌ ۭ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۭ اِنَّا زَيَّنَّا
السَّمَاۗءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِ ۙ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ
لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۙ دُحُوْرًا وَّ
لَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۞
فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ
لَّازِبٍ ۞ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۞ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ
اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ
الَّذِىْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝
هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ
الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ قُلْ اُوْحِىَ اِلَىَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ
فَقَالُوْۤا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ يَّهْدِىْۤ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ
بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝

ये 33 आयतें हैं। इनके पढ़ने से आसेब व दरिंदे, चोर और हर क़िस्म की बला और आफ़त दूर हो जाती है। कहा गया है कि इनमें सौ बीमारियों से शिफ़ा है। मुहम्मद बिन अली फ़रमाते हैं कि हमारे एक बूढ़े को फ़ालिज हो गया था, उस पर ये आयतें पढ़ी, उनको शिफ़ा हो गयी।

9. अ-हक्क़ु (सज़ावारे ख़ुदाई)

ख़ासियत- एक चौकोर (वर्ग) काग़ज़ के चारों कोनों पर लिखकर उसको हथेली पर रखकर रात के आख़िरी हिस्से में आसमान की तरफ़ हाथ उठाये तो मुहिम्मों में किफ़ायत हो।

10. अल-वकीलु (कार साज़)

ख़ासियत- हर ज़रूरत के लिए इसकी ज़्यादती फ़ायदा देती है।

11. अल मुक़्तदिर (क़ुदरत वाले)

ख़ासियत- जब सो कर उठे इसे ज़्यादा पढ़े तो जो उसकी मुराद हो, उसका उपाय अल्लाह तआ़ला आसान कर दे।

आमाले क़ुरआनी यानी ख़वास्से फ़ुर्क़ानी

दूसरा हिस्सा

1. इल्म की तरक़्क़ी और ज़ेहन का बढ़ना

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّن لِّسَانِي ۝ يَفْقَهُوا قَوْلِي ۝

रब्बिश्रह ली सद्री व यास्सिर ली अम्री वह्लुल उक़्दतम मिल्लिसानी यफ़्क़हू क़ौली० (पारा 16, रुकूअ़ 11)

तर्जुमा- ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरा हौसला बढ़ा दीजिए और मेरा (यह) काम (तब्लीग़ का) आसान फ़रमा दीजिए और मेरी ज़बान से गिरह (हकलेपन को) हटा दीजिए, ताकि लोग मेरी बात समझ सकें।

ख़ासियत- इल्म की तरक़्क़ी और ज़ेहन के बढ़ने के लिए हर दिन सुबह की नमाज़ के बाद बीस बार पढ़ा करे, आज़माया हुआ है-

1. रब्बि ज़िद्नी अ़िल्मा० رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝ (पारा 16, रुकूअ़ 15)

तर्जुमा- ऐ मेरे रब ! मेरा इल्म बढ़ादे !

ख़ासियत- इल्म की तरक़्क़ी के लिए हर नमाज़ के बाद जिस क़दर हो सके, पढ़ा करे

٢ الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ
اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ
فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۭ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ اِلَى اللّٰهِ
مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

2. अलिफ़-लाम-रा किताबुन उह्किमत आयातुहू सुम् म फ़ुस्सिलत मिल्लदुन हकीमिन ख़बीर० अल्ला तअ्बुदू इल्लल्लाह इन्ननी लकुम मिन्हु नज़ीरुंव्व बशीर०व अनिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम सुम् म तूबू इलैहि युमत्तिअ्कुम मताअ़न ह स ना०इला अ ज लिम मुसम्मंव्व युअ्ति कुल् ल ज़ी फ़ज़्लिन फ़ज़्लहू व इन तवल्लौ फ़ इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम अ़ज़ा ब यौमिनकबीर० इलल्लाहि मर्जिअुकुम व हु व अ़लाकुल्लि शैइन क़दीर०

(पारा 11, रुकूअ 17)

तर्जुमा- अलिफ़-लाम-रा। यह (क़ुरआन) ऐसी किताब है कि इसकी आयतें (दलील से) मज़बूत की गयी हैं, फिर साफ़-साफ़ (भी) बयान की गयी हैं। (वह किताब ऐसी है कि) एक हकीम, बाख़बर (यानी अल्लाह तआ़ला)की तरफ़ से यह (है) कि अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी की इबादत मत करो, मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं और यह कि तुम लोग अपने गुनाह अपने रब से माफ़ कराओ, फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो। वह तुमको वक़्ते मुक़र्ररा तक (दुनिया में)

ख़ुशी-ऐश देगा और (आख़िरत में) हर ज़्यादा अ़मल करने वाले को ज़्यादा सवाब देगा, और अगर (ईमान लाने से) तुम लोग कतराते रहे तो मुझको तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का अंदेशा है। तुम (सब) को अल्लाह ही के पास जाना है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।

ख़ासियत– हरी अर्वी के पत्ते पर सूरज निकलने के वक़्त मुश्क व गुलाब से लिख कर जिस कुएं से इस अर्वी में पानी दिया जाता हो, उसके पानी से धोकर चार दिन तक सुबह व शाम पिए, तालीमे क़ुरआन व इल्म व हाफ़िज़ा और ज़ेहन में तरक़्क़ी व आसानी हो और ख़ूब दिल खुल जाए।

2. रोज़गार लगना और निकाह का पैग़ाम मंज़ूर होना

1. रजब की नौचन्दी जुमरात को चांदी के नगीने पर यह हर्फ़ खुदवा कर पहने, तो हर डर से अम्न में रहे। अगर हाकिम के पास जाए, तो उस की क़द्र हो और सब काम पूरे हों और ग़ज़ब नाक आदमी के सर पर हाथ फेर दे, तो उसका ग़ुस्सा जाता रहे और अगर प्यास की तेजी में उसको चूस ले तो सुकून हो जाए और अगर बारिश के पानी में उसको रात के वक़्त डाल कर सुबह को नहार-मुंह पिए तो हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाए और जो बेकार आदमी पहने, काम से लग जाए और मिरगी वाले को पहना दिया जाए तो मिरगी जाती रहे। वे हुरूफ़ ये हैं।

ع١ الٓمٓ. الٓمٓصٓ. الٓمٓرٰ. كٓهيٰعٓصٓ- طٰهٰ- طٰسٓ- طٰسٓمٓ
يٰسٓ. صٓ- حٰمٓ عٓسٓقٓ- قٓ. نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ٥

(1) अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-मीम-

रा-काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, ता-हा, ता-सीन, ता-सीन-मीम, या-सीन, स्वाद, हा-मीम, ऐन-सीन-काफ़, काफ़, नून वल क़लमि व मा यस्तुरून०

٢۔ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۚ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ (پ۳ - ع ۱۶)

2. क़ुल इन्नल फ़ज़् ल बियदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्लाहु वासिअुन अ़लीम० यख़्तस्सु बिरहमतिही मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल फ़ज़्लिल अज़ीम० (पारा 3, रुकूअ़ 16)

तर्जुमा– आप कह दीजिए कि बेशक फ़ज़्ल तो ख़ुदा के क़ब्ज़े में है, वह उसको जिसे चाहें अ़ता फ़रमायें और अल्लाह तआ़ला बड़ी वुसअ़त वाले हैं, ख़ुब जानने वाले हैं। ख़ास कर देते हैं अपनी रहमत व फ़ज़्ल के साथ जिसको चाहें और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं।

ख़ासियत– जुमरात के दिन, वुज़ू करके किसी क़िस्मती आदमी के कुर्ते के टुकड़े पर इस आयत को लिखकर दुकान या मकान या ख़रीद व फ़रोख़्त की जगह में लटकाये, ख़ूब आमदनी होगी।

3. अल-बदीअु (ईजाद करने वाले)।

ख़ासियत– इसको हज़ार बार पढ़े तो हाजत पूरी हो और ख़तरा दूर हो।

4. दीगर– और इसको किसी काग़ज़ पर लिख कर किसी बेकार आदमी के बाज़ू पर बांध दिया जाए, बा कार हो जाए या जिसने कहीं निकाह का पैग़ाम भेजा हो, उसके बाज़ू पर बांध दिया जाए, उसका पैग़ाम मंज़ूर हो जाए।

٥ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ
إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۝ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۚ
إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۚ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا
حَيْثُ يَشَاءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَاءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝

5. पारा 13 रुकूअ़ 1 'व क़ालल मलिकुअ्तूनी से अज्रल मुह्सिनीन॰ तक।

तर्जुमा- और (सुन कर) बादशाह ने कहा कि उन को मेरे पास लाओ, मैं उनको ख़ास अपने लिए रखूंगा, पस जब बादशाह ने उन से बातें कीं तो बादशाह ने कहा कि तुम हमारे नज़दीक आज (से) बड़े इज़्ज़तदार और एतबारी हो। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुल्की ख़ज़ानों पर मुझ को लगा दीजिए मैं हिफ़ाज़त रखूंगा और ख़ूब जानकार हूं। और हमने ऐसे तौर पर यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) को बा-इख़्तियार बना दिया कि उसमें जहां चाहें, रहें-सहें, हम जिस पर चाहें, अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें और हम नेकी करने वालों का अज्र बर्बाद नहीं करते।

ख़ासियत- जिस को रोज़गार न मिलता हो, या रोज़गार से मुअ़त्तल हो गया हो, महीने में जो अव्वल जुमरात और जुमा आये, उनमें रोज़ा रखे और जुमा की रात में बिस्तर पर लेटते वक़्त यह सूरः पढ़े, फिर जुमा के दिन ज़ुहर और अस्र के दर्मियान इस सूरः को लिखे फिर इफ़्तार कर के इस सूरः को पढ़े, फिर इशा पढ़ कर इस सूरः को पढ़े, फिर बिस्तर पर जाकर इस सूरः को पढ़े और सौ बार 'ला इला ह इल्लल्लाह' कहे और

सौ बार अल्लाहु अक्बर और सौ बार अल-हम्दु लिल्लाह और सौ बार सुब्हानल्लाह और सौ बार इस्तिग़्फ़ार और सौ बार दरूद शरीफ़ पढ़ कर सो रहे। जब सुबह हो घर से निकल कर लिखी हुई सूरः को तावीज़ बना कर बांध ले और पक्का इरादा और नीयत करे कि किसी पर कभी ज़ुल्म न करूंगा और अपने हक़ से ज़्यादती न करूंगा इन्शाअल्लाह तआला जल्द ही रोज़गार से लग जाए। जो शख़्स पढ़ना न जानता हो, वह लिखे हुए को सर के तले रख ले, बाक़ी लाइलाह इल्लल्लाह' पहले की तरह कहे।

3. हमेशा ख़ुश रहना, ग़म का दूर होना

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

1. व मा ज अ़ ल हुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लि तत्मइन् न बिही क़ुलूबुकुम व मन्नस्रु इल्ला मिन अ़िन्दिल्लाहि इन्नल्ला ह अ़ज़ीज़ुन हकीम०

(पारा 9, रुकूअ़ 15)

तर्जुमा– और अल्लाह तआ़ला ने यह मदद सिर्फ़ (इस हिक्मत) के लिए की कि (ग़लबे की) ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिलों को क़रार हो जाए और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, जो कि ज़बरदस्त हिक्मत वाले हैं।

ख़ासियत– रमज़ान की 27 वीं को एक पर्चे पर यह आयत लिख कर अंगूठी के नगीने के नीचे रख ले तो हमेशा महफ़ूज़, ख़ुश और कामियाब रहे।

2. सूरः नूह– (पारा 29)

ख़ासियत– हर क़िस्म की ज़रूरत पूरी करने के लिए और ग़म व

वहम के दूर करने के लिए फ़ायदेमंद है।

डर दूर करने के लिए एक और- इब्नुल कल्बी से नक़ल किया गया है कि किसी ने किसी शख़्स को क़त्ल की धमकी दी। उसको डर हुआ, उसने किसी आ़लिम से ज़िक्र किया। उन्होंने फ़रमाया कि घर से निकलने से पहले सूरः यासीन पढ़ लिया करो, फिर घर से निकला करो। वह शख़्स ऐसा ही करता था और जब अपने दुश्मन के सामने आता था, उसको हरगिज़ नज़र न आता था।

3. अस्सबूरु (सब्र करने वाले)

ख़ासियत- सूरज निकलने से पहले सौ बार पढ़े तो कोई तक्लीफ़ न पहुंचे।

4. अल-बाक़ी (हमेशा रहने वाले)

ख़ासियत- हज़ार बार पढ़े तो ज़रूर ग़म से ख़लासी हो।

5. अल-वारिसु (मालिक)

ख़ासियत- मग़्रिब इशा के दर्मियान हज़ार बार पढ़े तो हैरानी दूर हो।

4. मुश्किल आसान होना

अल्लाहु (अल्लाह)

ख़ासियत- जो शख़्स हज़ार बार रोज़ाना पढ़े, अल्लाह तआ़ला उसको कमाल दर्जे का यक़ीन नसीब फ़रमायें और जो आदमी जुमा के दिन जुमा की नमाज़ से पहले पाक व साफ़ हो कर ख़लवत (तन्हाई) में दो सौ बार पढ़े, उसकी मुश्किल आसान हो और जिस मरीज़ के इलाज से डाक्टर आ़जिज़ आ गये हों, उस पर पढ़ा जाए तो अच्छा हो जाए, बशर्ते कि मौत

का वक़्त न आ गया हो।

5. मुराद पूरी होना

1. अल-मुअ्ती (देने वाले)

ख़ासियत- हर मुराद हासिल होने के लिए फ़ायदेमंद है।

2. अल-मानिउ (रोकने वाले)

ख़ासियत- जो अपनी मुराद तक पहुंच न सके, इसको सुबह व शाम पढ़ा करे, मुराद हासिल हो।

3. अल-हफ़ीज़ु (निगहबान)

ख़ासियत- इसका ज़िक्र करने वाला या लिख कर पास रखने वाला ख़ौफ़ से बचा रहे। अगर दरिंदों के दर्मियान सो रहे, तो नुक़्सान न पहुंचे।

4. अल-मुक़ीतु (क़ुव्वत यानी ताक़त देने वाले)

ख़ासियत- अगर रोज़ेदार इसको मिट्टी पर पढ़ कर या लिख कर इसको तर करके सूंघे तो ताक़त व ग़िज़ाइयत (पौष्टिकता) हासिल हो और अगर मुसाफ़िर कूज़े पर सात बार पढ़ कर , फिर उसको लिख कर उससे पानी पिया करे तो सफ़र की वह्शत (घबराहट) से बचा रहे।

5. अर-रक़ीबु (निगहबान)

ख़ासियत- इसके ज़िक्र करने से माल व अ़याल महफ़ूज़ रहे और जिसकी कोई चीज़ गुम हो जाए, इसको पढ़े तो वह इन्शाअल्लाह तआ़ला मिल जाए और अगर हमल के गिरने का अन्देशा हो तो इसको सात बार पढ़े तो न गिरे और सफ़र के वक़्त जिस बाल-बच्चे की तरफ़ से फ़िक्र हो, उसकी गरदन पर हाथ रख कर सात बार पढ़े तो अम्न व चैन से रहे।

6. हर मुसीबत से बचाव के लिए

آمَنَ الرَّسُولُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ط كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ قف لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ قف وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ○ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ط لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ط رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ج رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ج رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ج وَاعْفُ عَنَّا قف وَاغْفِرْ لَنَا قف وَارْحَمْنَا قف اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○

ख़ासियत– जो शख़्स ये सब आयतें पढ़ कर सो रहे तो इन्शाअल्लाह तआला चोर और हर चीज़ से महफ़ूज़ रहेगा।

2. अबू जाफ़र नुहास ने यह हदीस नक़ल की है कि आयतल कुर्सी और सूरः आराफ़, सूरः साफ़्फ़ात व सूरः रहमान की ये आयतें–

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ج وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ ط اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ط تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ط اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ○ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ط اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ○ (پ ۸ ع ۱۴)

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۙ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۙ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ نِالْكَوَاكِبِ ۙ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى

اور سورۂ رحمٰن کی یہ آیتیں سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ط لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ (پارہ ۲۷ ع ۱۲)

ख़ासियत– ये सब आयतें अगर कोई दिन में पढ़े तो तमाम दिन और अगर रात को पढ़े तो तमाम रात सरकश शैतान, नुक़्सान पहुंचाने वाले जादूगर और ज़ालिम हाकिम और तमाम चोरों, डाकुओं और दरिंदों से बचा रहेगा।

3. हुरूफ़े मुक़त्तआत जो सूरतों के शुरू में आते हैं, वे यह हैं–

الٓمٓ ۔ الٓمٓصٓ ۔ الٓرٰ ۔ الٓمٓرٰ ۔ كٓهٰيٰعٓصٓ ۔ طٰهٰ ۔ طٰسٓمٓ ۔ طٰسٓ ۔ يٰسٓ ۔

صٓ ۔ حٰمٓ ۔ حٰمٓ عٓسٓقٓ ۔ قٓ ۔ نٓ

अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-रा, अलिफ़ लाम मीम रा, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीन-मीम, ता-सीन, या-सीन, स्वाद, हा-मीम, हाम-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़, क़ाफ़, नून
जिन में ये हुरूफ़ आये हैं–

الف ۔ حا ۔ صاد ۔ سین ۔ کاف ۔ عین ۔ طا ۔ قاف ۔ را ۔ ھا ۔ ن ۔ میم ۔ یا

अलिफ़, हा० स्वाद, सीन, काफ़, ऐन, त्वा क़ाफ़, रा, हा, नून, मीम, या, इन का लक़ब इस्तिलाह में हुरूफ़े नूरानी है और हर एक हर्फ़ के साथ अल्लाह के कुछ नामों को ताल्लुक़ है, मसलन अलिफ़ के साथ अल्लाह, अहद, हे से हय्यु, स्वाद से समद, सीन से समीअ, सुब्बूह, सलाम, काफ़ से करीम, ऐन से अ़लीम, अ़ज़ीम, अ़ज़ीज़ त्व से तैयब, क़ाफ़ से क़्य्यूम, रे से रहमान रहीम, हे से हादी, नून से नूर, नाफ़िअ़, मीम से मालिकि यौमिद्दीन, मालिकुल मुल्क, मुहयी, मुमीत, लाम से लतीफ़ वग़ैरह।

ख़वास्स– हुरूफ़े नूरानी को लिख कर अगर अपने माल व मताअ़ या खेत या घर वग़ैरह में रखे, तो हर बला से महफ़ूज़ रहे।

4. आयतल कुर्सी

ख़वास्स– जो शख़्स आयतल कुर्सी को हर नमाज़ के बाद और सुबह व शाम और घर में जाने के वक़्त और रात को लेटते वक़्त पढ़ा करे तो फ़क़ीर से ग़नी हो जाए और बे-गुमान रोज़ी मिले, चोरी से बचा रहे, रोज़ी बढ़े, कभी उपवास न हो और जहां पढ़े, वहां चोर न जाए।

ﮯ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ٥

5. इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्लज़्ज़िक र व इन्ना लहू ल हाफ़िज़ून॰

(पारा 14, रुकूअ़ 1)

तर्जुमा– हमने क़ुरआन को नाज़िल किया है और हम ही उसकी हिफ़ाज़त करने वाले और निगहबान हैं।

ख़ासियत– चांदी के मुलम्मा के पत्तरे पर इस को लिख कर जुमा की रात को यह आयत चालीस बार पढ़े, फिर उसको अंगूठी के नगीने के नीचे रख कर वह अंगूठी पहन ले। उस का माल व जान और सब हालात हिफ़ाज़त से रहें।

6. सूरः मरयम (पारा 16)

ख़ासियत– इसको लिख कर शीशे के गिलास में रख कर अपने घर में रखने से ख़ैर व बरकत हो, ज़्यादा ख़ुशी के सपने दीख पड़ें और जो शख़्स उसके पास सोये, वह भी अच्छे ख़्वाब देखे और जो शख़्स उसे लिख कर मकान की दीवार में लगाये, सब आफ़तों से बचा रहे, और जो डरा हुआ हो और पीले तो डर जाता रहे।

ﻉ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ٥ وَقُلْ رَّبِّ أَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ٥

7. फ़ इज़स्तवै त अन त व मम् म अ क अ़लल् फ़ुल्कि फ़ क़ुलिल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी नज्जाना मिनल कौमिज़्ज़ालिमीन० व क़ुरर्ब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़लम मुबा र कंव्व अन त ख़ैरुल मुन्ज़िलीन०

(पारा 18, रुकूअ़ 2)

ख़ासियत– इसको पढ़ने से चोर, दुश्मन और जिन्न वग़ैरह से हिफ़ाज़त रहती है।

8. सूरः अल-अ़स्र (पारा 30)

ख़ासियत– माल वग़ैरह दफ़्न करने के वक़्त इसको पढ़ने से वह हर आफ़त से बचा रहेगा।

7. दफ़ीने का पता लगाना

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيهَا ط وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ط كَذٰلِكَ يُحْيِي اللّٰهُ الْمَوْتٰى لا وَيُرِيكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

1. व इज़ क़तल्तुम नफ़्सन फ़द्दारअ्तुम फ़ीहा वल्लाहु मुख़्रिजुम मा कुन्तुम तक्तुमून० फ़ क़ुल्नज़्रिबूहु, बिबअ्ज़िहा कज़ालि क युह्यिल्लाहुल मौता व युरीकुम आयातिही ल अ़ल्लकुम तअ़्किलून०

(पारा 1, रुकूअ़ 9)

ख़ासियत– कुछ अल्लाह वालों से नक़ल किया गया है कि ये आयतें और सूरः शुअ़रा काग़ज़ पर लिख कर एक सफ़ेद मुर्ग़ की गरदन में, जिसका ताज शाख़-शाख़ हो, बांध कर जिस जगह दफ़ीने का शुब्हा हो, वहां छोड़ दिया जाए, वह मुर्ग़ वहां जाकर खड़ा हो जाएगा और अगले दिन मर जाएगा। मगर मुझको इसमें शुबहा है कि हैवान का हलाक करना अ़मल से ना-जायज़

है।

٢ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ز وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

2. क़ुलिल्लाहुम् म मालिकल मुल्कि तुअ्तिल मुल क मन तशाउ व तन्ज़िअुल मुल क मिम्मन तशाउ व तुइज़्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन तशाउ बियदिकल ख़ैरु इन न क अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर॰ तूलिजुल्लै ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा र फ़िल्लैलि व तुख़्रिजुल हय्य मिनल मय्यिति व तुख़्रिजुल मय्यित मिनलहय्यि व तर्ज़ुक़ु मन तशाउ बिग़ैरि हिसाब॰ (पारा 3, रुकूअ़ 11)

ख़ासियत- जो शख़्स दफ़ीनों व ख़ज़ानों का पता पाना चाहे, तो इन आयतों को तांबे के बर्तन पर मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखे, फिर आबे हुलैला ज़र्द व आबे तूबा व आबे मेवा-ए-सब्ज़ से उसके हुरूफ़ धोकर काली मुर्ग़ी का पित्ता या काली बत्तख़ का पित्ता और पांच मिस्क़ाल सुर्मा अस्फ़हानी लेकर उस पानी में मिला कर ख़ुब बारीक पीसे, यहां तक कि वह बारीक सुर्मा हो जाए और रात के वक़्त पीसा करे ताकि उस पर धूप न पड़े। जब वह सुरमा बन जाए, कांच की शीशी में रख ले और आबनूस की सलाई से उसका इस्तिमाल करे, इस तरह कि अव्वल जुमरात के दिन रोज़ा रखे, जब आधी रात का वक़्त हो, सत्तर बार दरूद शरीफ़ पढ़े, फिर उसी सलाई से दोनों आंखों में तीन-तीन सलाई इस सुर्मे की लगाए और दायीं में पहले लगाये, इसी तरह सात जुमरात तक करे कि दिन में रोज़ा रखे और रात को दरूद शरीफ़ और इस्तिग़्फ़ार पढ़े और सुर्मा लगाये। इस शख़्स को कुछ शख़्स नज़र आएंगे, उनसे जो पूछना हो, वह पूछ ले, वे सवाल का जवाब देंगे।

8. गुम शुदा की तलाश

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝

1. इन्ना लिल्ला हि व इन्ना इलैहि राजिऊन॰ (पारा 2, रुकूअ़3)

तर्जुमा– वे कहते हैं कि हम तो (मय माल व औलाद हक़ीक़तन) अल्लाह तआ़ला ही की मिल्क हैं और हम सब (दुनिया से) अल्लाह तआ़ला के पास जाने वाले हैं।

ख़ासियत– अगर यह आयत पढ़ कर गुम हुई चीज़ तलाश की जाए तो इन्शाअल्लाह तआ़ला ज़रूर मिल जाएगी, वरना ग़ैब से कोई चीज़ उससे उ़म्दा मिलेगी।

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

2. व लि कुल्लि विज्हतुन हु व मुवल्ली हा फ़स्तबिक़ुल ख़ैरात॰ऐ न मा तकूनू यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीआ़॰इन्नल्ला ह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर॰ (पारा 2, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा– और हर शख़्स (मज़हब वाले) के वास्ते एक क़िब्ला रहा है, जिसकी तरफ़ वह (इबादत में) मुंह करता रहा है, सो तुम नेक कामों में दौड़-भाग करो, तुम चाहे कहीं होगे (लेकिन) अल्लाह तआ़ला तुम सब को हाज़िर कर देंगे। बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं।

ख़ासियत– इस आयत को कोरे कपड़े के गोल कटे टुकड़े पर लिख कर चोर या भागे हुए आदमी का नाम लिख कर जिस मकान में चोरी हुई है या जिस मकान से कोई भागा है, उसकी दीवार में खूंटे से गाड़ दिया

जाय, इन्शाअल्लाह तआला चोरी गया या गुम गया माल वापस आ जाएगा।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُنَا وَلَا یَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰۤی اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِی اسْتَهْوَتْهُ الشَّیٰطِیْنُ فِی الْاَرْضِ حَیْرَانَ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ یَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰی ؕ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝

3. क़ुल अ नद् अ़ू मिन दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुना व ला यज़ुर्रुना व नुरद्दु अ़ला अअ़्क़ाबिना बअ़् द इज़ हदानल्लाहु कल्लज़िस्त ह्वत हुश्श्यातीनु फ़िल अर्ज़ि हैरा न लहू अस्हाबुंय् यदअ़ू न हू इलल हुदअ़्तिना क़ुल इन्न हुद ल्लाहि हुवल हुदा व उमिर्ना लिनुस्लि म लिरब्बिल आ़ ल मीन० (पारा 7, रुकूअ़ 15)

तर्जुमाः–आप कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ की इबादत करें कि वह न हमको नफ़ा पहुंचाए और न वह हमको नुक़्सान पहुंचाए और क्या हम उलटे फिर जाएं, इसके बाद कि हमको अल्लाह तआ़ला ने हिदायत कर दी है, जैसे कोई शख़्स हो कि उसको शैतानों ने कहीं जंगल में बे-राह कर दिया हो और वह भटकता फिरता हो। उसके कुछ साथी भी थे कि वे उसको ठीक रास्ते की तरफ़ बुला रहे हैं कि हमारे पास आ। आप कह दीजिए कि यक़ीनी बात है कि सीधी राह वह ख़ास अल्लाह ही की राह है और हमको यह हुक्म हुआ है कि हम पूरे मुतीअ़ (इताअ़त गुज़ार) हो जाएं परवरदिगारे आ़लम के।

ख़ासियत– यह चोर के वास्ते है। किसी पुरानी मश्क का टुकड़ा या सूखे कद्दू का पोस्त लेकर परकार से उस पर गोल दायरा बनाया जाए और दायरे के अन्दर यह आयत और दायरे से ख़ारिज चोर का नाम मय उसकी मां के नाम के लिख कर ऐसी जगह दफ़्न करे, जहां कोई न चलता

हो। इन्शाअल्लाह तआ़ला चोर हैरान व परेशान होकर वापस आ जाएगा :

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقَاعِدِيْنَ ○

4. व लौ अरादुल ख़ुरू ज ल अअ़द्दू लहू उ़द्दतंव व ला कि न करिहल्लाहुम्बिआ़ स हुम फ़ सब्ब त हुम व क़ीलक़्अुदू मअ़ल क़ाअ़िदीन०
(पारा 10, रुकूअ़ 13)

तर्जुमा– और अगर वे लोग (लड़ाई में) चलने का इरादा करते तो उसका फिर कुछ सामान तो दुरुस्त करते, लेकिन (ख़ैर हुई,) अल्लाह तआ़ला ने उनके जाने को पसन्द नहीं किया, इसलिए उनको तौफ़ीक़ नहीं दी और यों कह दिया गया कि अपाहिज लोगों के साथ तुम भी यहां ही धरे रहो।

ख़ासियत– यह आयत चोर के लिए है। कतान के धुले हुए कपड़े के क्व्वारे (गोल कटा हुआ चांद) पर शुरू महीने में यह आयत लिखी जाए और उसके चारों तरफ़ उस शख़्स का नाम मय मां के नाम लिखें और जिस जगह कोई न देखता हो, जाकर एक खूंटा क्व्वारे पर ठोंक दें और उसको मिट्टी से छिपा दें। वह चोर अल्लाह के हुक्म से वापस आ जाएगा।

5. सूरतुज़्ज़ुहा (पारा 30)

ख़ासियत– जिसकी कोई चीज़ गुम हो गयी हो या कोई शख़्स भाग गया हो, इसको सात बार पढ़ने से वापस आ जाएगा।

6. जाफ़र ख़ालिदी का एक नग दजला में गिर गया। उन्होंने यह दुआ़ पढ़ी–

اَللّٰهُمَّ يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ اِجْمَعْ عَلَيَّ ضَالَّتِيْ

अल्लाहुम म या जामिअन्नासि लि यौ मिल्ला रै ब फ़ीहि इज्मअ़ अ़लय्य ज़ाल्लती०

एक दिन काग़ज़ात देख रहे थे, उन काग़ज़ात में वह नग मिल गया।

7. सूरः वज़्ज़ुहा पढ़े और इस आयत को तीन बार पढ़े-

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۝

व व ज द क ज़ाल्लन फ़-ह्-दा०

8. **दिगर :** यह आयत रोटी या किसी खाने की चीज़ पर लिख कर जिस पर शुब्ह़ा चोरी का हो, उसको खिलाए, चोर खा न सकेगा-

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝

व इज़ क़तल्तुम नफ़सन फ़द्दारअ्तुम फ़ीहा वल्लाहु मुख़्रिजुम मा कुन्तुम तक्तुमून०

और

يَتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ۝

य त जर्रअुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यातीहिल मौतु मिन कुल्लि मकानिंव्व मा हु व बिमय्यित व मिंव व राइही अ़ज़ाबुन ग़लीज़०

और اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝

अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी युख़्रिजुल ख़ब्अ फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व यअ़्लमु मा तुख़्फ़ू न व मा तुअ़्लिनून० अल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम०

और

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝

व बिल हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल हक़्क़ि न ज़ल व मा अर्सल्ना क इल्ला मुबश्शिरंव व नज़ीरा०

और صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ

सल्लल्लाहु अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिंव्व आलिही व सहबिही व सल्लम०

9. जिस दरवाज़े से चोरी का माल निकला है, उसमें खड़े होकर सूरः वत्तारिक़ पढ़ने से इन्शाअल्लाह तआ़ला वापस आ जाएगा या उसको ख़्वाब वग़ैरह में देख लेगा।

ख़ासियत– इस आयत को एक रोटी के टुकड़े पर लिख कर जिस शख़्स को भागने की आदत हो या जिस औरत को ना-फ़रमानी और सरकशी की आदत हो, उसको खिला देने से वह आदत जाती रहती है।

10. अपने रूमाल वग़ैरह के कोने पर फ़ातिहा और सूरः इख़्लास और मुअ़व्वज़तैन और क़ुल या अय्युहल काफ़िरून-हर सूरः तीन-तीन बार और सूरः तारिक़ एक बार और सूरः वज़्ज़ुहा तीन बार पढ़ कर उसमें गिरह लगायें, इन्शाअल्लाह तआ़ला चोर न जाने पाएगा।

11. अर्रक़ीबु (निगहबान)

ख़ासियत– इसके ज़िक्र करने से माल व अ़याल बचा रहे और जिसकी कोई चीज़ गुम हो जाए, इसको बहुत पढ़े, तो वह इन्शाअल्लाह तआ़ला मिल जाए और सफ़र के वक़्त जिस बाल-बच्चे की तरफ़ से फ़िक्र हो, उसकी गरदन पर हाथ रख कर सात बार पढ़े तो वह अम्न से रहे।

12. अल-जामिअ़ु (जमा करने वाले)

ख़ासियत– इसे बराबर पढ़ने से. मक़्सदों और दोस्तों से मिला रहे

और जिसकी कोई चीज़ गुम हो जाए, इसको पढ़े तो मिल जाए।

9. भागे हुए की वापसी

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞

1. फ़ रदद्नाहु इला उम्मिही कै तक़र र ऐनुहा व ला तह्ज़न वलितअ्ल म अन्न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव व ला किन्न अक्सर हुम ला यअ्ल मून०

(पारा 20, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा– ग़रज़ हमने मूसा अ़लै० को उनकी मां के पास अपने वायदे के मुवाफ़िक़ वापस पहुंचा दिया ताकि उनकी आंखें ठंडी हों और ताकि (जुदाई के) ग़म में न रहें और ताकि इस बात को जान लें कि अल्लाह तआ़ला का वायदा सच्चा (होता) है, लेकिन (अफ़सोस की बात है कि) अक्सर लोग (इसका) यक़ीन नहीं रखते।

ख़ासियत– अगर कोई शख़्स भाग गया हो, तो इस आयत को लिख कर चर्ख़े में बांध कर साठ बार हर दिन चालीस दिन तक उल्टा घुमाएं। इन्शाअल्लाह तआ़ला इस अ़मल की बरकत से वह शख़्स जल्द वापस आ जाएगा।

اِنَّ الَّذِىْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ

2. इन्नल्ल ज़ी फ़ र ज़ अ़लैकल क़ुरआ न ल राद्दु क इला म आ़द०

(पारा 20, रुकूअ़ 12)

तर्जुमा– जिस ख़ुदा ने आप पर क़ुरआन (के हुक्मों पर अ़मल और उसकी तब्लीग़) को फ़र्ज़ किया है, वह आपको (आप के) वतन (यानी मक्का) में फिर पहुंचाएगा।

ख़ासियत– दो रुक्अ़त नफ़्ल पढ़ कर इस आयते करीमा को एक सौ उन्नीस बार चालीस दिन तक पढ़े इसकी बरकत से जो शख़्स भाग गया हो, वापस आ जाएगा।

2 يَا بُنَيَّ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمٰوٰتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللّٰهُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝

2. या बुनय य इन्नहा इन तकु मिस्क़ा ल हब्बतिम मिन ख़र्द लिन फ़ तकुन फ़ी सख़रतिन औ फ़िस्समावाति औ फ़िल अर्ज़ि यअ्ति बिहल्लाहु इन्नल्ला ह लतीफ़ुन ख़बीर० (पारा 21, रुकूअ 11)

तर्जुमा– बेटा ! अगर कोई अ़मल राई के दाने के बराबर हो, फिर वह किसी पत्थर के अन्दर हो या वह आसमान के अन्दर हो या वह ज़मीन के अन्दर हो, तब भी उसको अल्लाह तआ़ला हाज़िर कर देगा। बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बारीकबीं, बा-ख़बर है।

ख़ासियत– इसकी बरकत से जो शख़्स भाग गया हो, वापस आ जाएगा। ऊपर की तर्कीब के मुताल्लिक़ अ़मल में लाएं।

बीवी व शौहर से मुताल्लिक़

1. लड़की का निकाह होना

1. शेख़ शर्फ़ुद्दीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि का क़ौल है कि जो शख़्स हिरन की झिल्ली पर चौदहवीं की रात को किसी महीने इशा की नमाज़ के बाद गुलाब व ज़ाफ़रान से ये आयतें लिख कर एक नलकी में रख कर उसका मुंह नये छत्ते के मोम से बन्द करके उसको चमड़े में सिलवा कर अपने दाहिने बाज़ू पर बांधे, उसके दिल में बे-ख़ौफ़ी पैदा हो। दुश्मन के दिल में उसकी हैबत पैदा हो, दुनिया की नज़र में मक़्बूल हो। अगर मुहताज हो, ग़नी हो जाए और डरा हुआ हो, तो अम्न में हो जाए और अगर जादू या जेल या जुनून में मुब्तला हो, तो उससे ख़लासी हासिल हो। अगर क़र्ज़दार

हो, तो अल्लाह तआ़ला उसका कर्ज़ अदा कर दे। अगर किसी फ़िक्र में मुब्तला हो, वह फ़िक्र दूर हो जाए, और अगर मुसाफ़िर हो, सही व सालिम अपने घर आ जाए। जब किसी औ़रत का निकाह न होता हो तो इसके पास रखने से लोगों को उसके निकाह से चाव पैदा हो। अगर किसी दुकान में रखा जाए तो ख़ूब नफ़ा हो, अगर बच्चों के बांधा जाए तो तमाम आफ़तों से बचे रहें और जिस के पास रहे, वह शख़्स जो हाजत अल्लाह तआ़ला से मांगे, पूरी हो, वे आयतें यह हैं-

الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۗ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○

1. अलिफ़-लाम-मीम॰ ज़ालिकल किता बुला रैब फ़ीहि हुदल्लिलमुत्तक़ीनल्ल ज़ी न युअ्मिनून बिल ग़ैबि व युक़ीमूनस्सला त व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून वल्लज़ी न युअ्मिनू न बिमा उन्ज़ि ल इलै क व मा उन्ज़ि ल मिन क़ब्लि क व बिल आख़िरति हुम यूक़िनून॰ उलाइ क अ़ला हुदम मिर रब्बिहिम व उलाइ क हुमुल मुफ़लिहून॰

(पारा 1, रुकूअ़ 1)

तर्जुमा- अलिफ़-लाम-मीम। यह किताब ऐसी है, जिसमें कोई शुब्हा नहीं, राह बतलाने वाली है, ख़ुदा से डरने वालों को। वे ख़ुदा से डरने वाले लोग ऐसे हैं कि यक़ीन लाते हैं छिपी हुई चीज़ों पर और क़ायम रखते हैं नमाज़ को और जो कुछ दिया है, हम ने उनको, उसमें से ख़र्च करते हैं और वे लोग ऐसे हैं कि यक़ीन रखते हैं उस किताब पर भी जो आपकी तरफ़ उतारी गयी है और उन किताबों पर भी जो आपसे पहले उतारी जा

चुकी हैं और आख़िरत पर भी वे लोग यक़ीन रखते हैं। पस ये लोग हैं ठीक राह पर जो उन के परवरदिगार की तरफ़ से मिली है और ये लोग हैं पूरे कामियाब।

٢ـ الٓمّٓ ۚ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۙ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۙ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ

2. अलिफ़-लाम-मीम० अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम नज़् ज़ ल अ़लैकल किता ब बिल हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै न यदैहि व अनज़ लत्तौरा त वल इं जी ल मिन क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़लल् .फ़ुर्क़ा न०

(पारा 3, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा- अलिफ़-लाम-मीम। अल्लाह तआ़ला ऐसे हैं कि उन के सिवा माबूद बनाने के क़ाबिल, कोई नहीं और वह ज़िंदा हैं। सब चीज़ों के संभालने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला ने आपके पास क़ुरआन भेजा है हक़ के साथ, इस तरह कि वह तस्दीक़ करता है उन किताबों की, जो इससे पहले हो चुकी हैं और भेजा था तौरात और इंजील को इससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते और अल्लाह तआ़ला ने भेजे मोजज़े।

٣ـ الٓمّٓصٓ ۚ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ○

3. अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद० किता बुन उन्ज़ि ल इलै क फ़ ला यकुन फ़ी सद्रि क ह र जुम मिन्हु लि तुन्ज़ि र बिही व ज़िक्रा लिल मुअ्मिनीन०

(पारा 8, रुकूअ़ 8)

तर्जुमा- अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद। यह एक किताब है जो आपके पास इस लिए भेजी गयी है कि आप इसके ज़रिए से डराएं, पस आपके दिल

में इससे बिल्कुल तंगी न होना चाहिए और यह नसीहत है ईमान वालों के लिए।

٤ الٓمٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ط وَالَّذِىْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ٥

4. अलिफ़-लाम-मीम-रा० तिल क आयातुलकि ताबि वल्लज़ी उन्ज़ि ल इलै क मिरींब्बि कलहक़्क़ु वला किन न अक्सरन्नासि ला युअ् मिनून०

(पारा 13, रुकूअ़ 7)

तर्जुमा– अलिफ़-लाम-मीम-रा। ये आयतें हैं एक बड़ी किताब की और जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ़ से नाज़िल किया जाता है,वह बिल्कुल सच है और लेकिन बहुत से आदमी ईमान नहीं लाते।

٥ كٓهٰيٰعٓصٓ ۚ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۚ

5. काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद० ज़िक्रु रहमति रब्बिक अ़ब्द हू ज़ क रिय्या०

(पारा 16, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा– काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, यह तज़्किरा है आपके परवरदिगार के मेहरबानी फ़रमाने का अपने बन्दे ज़करिय्या अ० पर।

٦ طٰهٰ ۚ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ٥

6. त्वा-हा० मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल क़ुरआ न लि तश्का०

(पारा 16 रुकूअ़ 10)

तर्जुमा– त्वा-हा। हमने आप पर क़ुरआन मजीद इसलिए नहीं उतारा कि आप तक्लीफ़ उठाएं।

٧ طٰسٓمٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ٥

7. त्वा-सीम-मीम० तिल क आयातुल किताबिल मुबीन०

(पारा 19, रुकूअ़ 5)

तर्जुमा– त्वा-सीम-मीम। यह किताब वाज़ेह (यानी क़ुरआन) की आयतें हैं।

٨ طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ

8. त्वा-सीन॰ तिल क आयतुल क़ुरआनि व किताबिम मुबीन॰

(पारा 19, रुकूअ़ 16)

तर्जुमा– त्वा-सीन। ये आयतें हैं क़ुरआन की और एक वाज़ेह किताब की।

٩ يٰسٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ

9. या सी न॰ वल क़ुरआनिल हकीम॰ (पारा 22, रुकुअ़ 18)

तर्जुमा– यासीन। क़सम है हिक्मत वाले क़ुरआन की।

١٠ صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ۭ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ○

10. स्वाद॰ वल् क़ुरआनि ज़िज़्ज़िक्रि बलिल्लज़ी न क फ़ रू फ़ी अ़िज़्ज़तिंव्व शिक़ाक़॰

(पारा 23, रुकूअ़ 10)

तर्जुमा– स्वाद। क़सम है क़ुरआन की जो हिक्मत से भरा हुआ है, बल्कि (ख़ुद) ये कुफ़्फ़ार (ही) तास्सुब और मुख़ालफ़त में हैं।

١١ حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ○

11. हा-मीम॰ तंज़ीलुल किताबि मिनल्लाहिल अ़ज़ीज़िल अ़लीम॰ ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल अ़िक़ाबि ज़ित्तौलि ला इला ह इल्लाहु व इलैहिल मसीर॰

(पारा 24, रुकूअ़ 6)

तर्जुमा– हा-मीम। यह किताब उतारी गयी है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है, हर चीज़ का जानने वाला है गुनाह बख़्शने वाला है,

और तौबा क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला है क़ुदरत वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। उसके पास जाना है।

١٢ حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوحِيٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

12. हा मीम० ऐन-सीन-क़ाफ़० कज़ालि क यूही इलै क व इलल्लज़ी न मिन क़ब्लि क अल्लाहुल अज़ीज़ुल हकीम० -पारा 25, रुकूअ़ 2

तर्जुमा- हा-मीम। ऐन-सीन-क़ाफ़। इसी तरह आप पर और जो आप से पहले हो चुके हैं, उन पर अल्लाह तआ़ला, जो ज़बरदस्त हिक्मत वाला है, वह्य भेजता रहा है।

١٣ قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۝

13. क़ाफ़० वल क़ुरआनिल मजीद० (पारा 26, रुकूअ़ 15)

तर्जुमा- क़ाफ़। क़सम है क़ुरआन मजीद की।

١٤ نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝

14. नून० वल् क़ ल मि व मा यस्तुरून० (पारा 29, रुकूअ़ 3)

तर्जुमा- नून। क़सम है क़लम की और उनके लिखने की।

15. सूर: ताहा (पारा 16)

ख़ासियत- इसको लिख कर हरीर के कपड़े में लपेट कर पास रखे । अगर निकाह का पैग़ाम भेजे, कामियाबी हो । अगर दो शख़्सों में या दो लश्करों में सुलह कराना चाहे, इन्कार न करें और उसको पी ले, तो बादशाह से मतलब हासिल हो और जिस औरत की शादी न हो तो उसको इसके पानी से ग़ुस्ल दे तो निकाह आसान हो।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَٱلْعَٰقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۝

16. व ला तमुद्दन न ऐनै क इला मा मत्तअ़्ना बिही अज़्वाजम मिन हुम ज़ह्रतल हयातिद्दुन्या लि नफ़्ति न हुम फ़ीहि व रिज़्क़ु रब्बि क ख़ैरु वंव अब्क़ा वअ्मुर अह्ल क बिस्सलाति वस्तबिर अ़लैहा ला नस्अलु क रिज़्क़न नह्नु नर्ज़ुक़ु क वल आ़क़िबतु लित्तक़्वा।

-पारा 16, रुकूअ़ 17

तर्जुमा- और हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ आप आंख उठा कर न देखें, जिनसे हमने कुफ़्फ़ार के मुख़्तलिफ़ गिरोहों को उनकी आज़माइश के लिए मुतमत्तअ कर रखा है कि वे सिर्फ़ दुनिया की ज़िंदगी की रौनक़ है और आपके रब का अतिय्या कई दर्जे बेहतर है और देर तक क़ायम रहने वाला है और अपने मुताल्लिक़ लोगों को नमाज़ का हुक्म करते रहिए और ख़ुद भी उसके पाबन्द रहिए। हम आप से रोज़ी (कमवाना) नहीं चाहते। मआश तो आप को हम देंगे। आख़िरत तक़्वा वालों के लिए है।

ख़ासियत- इसको लिख कर बाज़ू पर बांधे तो अगर बेशादी है, शादी हो जाए, भूल का मर्ज़ हो तो ख़त्म हो जाए, मरीज़ हो तो शिफ़ा हो, फ़क़ीर हो तो तवंगर हो जाए।

17. सूरः अह्ज़ाब (पारा 21)

ख़ासियत- लड़कियों के पैग़ाम ज़्यादा से ज़्यादा आएं, इसके लिए इसे हिरन की झिल्ली या काग़ज़ पर लिख कर एक डिब्बे में बन्द करके घर में रख दे।

2. शौहर को मेहरबान बनाना

ط وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ط وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ط وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ۝ (پارہ ۲ رکوع ۴)

1. व मिनन्नासि मंय्यत्तख़िज़ु मिन दूनिल्लाहि अन्दा दंय्युहिब्बूनहुम क हुब्बिल्लाहि वल्लज़ी न आमनू अशद्दु हुब्बल्लिल्लाहि व लौ यरल्लज़ी न ज़ लमू इज़ यरौनल अज़ा ब अन्नल क़ुव्वत लिल्लहि जमीअन व अन्नल्ला ह शदीदुल अज़ाब०   -पारा 2, रुकूअ 4

ख़ासियत- जिसका शौहर नाराज़ हो, इस आयत को मिठाई पर पढ़ कर खिलाये, इन्शाअल्लाह तआला मेहरबान हो जाएगा, मगर वाज़ेह रहे कि ना-जायज़ महल में असर न होगा।

3. बीवी का मुहब्बत करना

1. सूरः युसूफ़ को अगर लिख कर और तावीज़ बना कर बाज़ू पर बांधे तो उसकी बीवी उसको बहुत चाहने लगे।

2. अल-मुग्नी (तवंगर करने वाले)

ख़ासियत- हज़ार बार पढ़े तो तवंगरी हासिल हो और अगर जिमाअ़ के वक़्त ख़्याल से पढ़े तो बीवी उससे मुहब्बत करने लगे।

4. औलाद वाला होना

ط رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝

1. रब्बि हब ली मिल्लदुन क ज़ुर्रीयतन तय्यिबतन इन्न क समी

अुद्दुआ इ० (पारा 3, रुकूअ़ 12)

तर्जुमा- (हज़रत ज़करिय्या ने अर्ज़ किया) ऐ मेरे रब ! इनायत कीजिए मुझको ख़ास अपने पास से कोई अच्छी औलाद। बेशक आप दुआ़ के सुनने वाले हैं।

ख़ासियत- जिसको औलाद से मायूसी हो गयी हो, इस आयत को पढ़ा करे, अल्लाह इस आयत की बरकत से नेक लड़का अता फ़रमायेगा, इन्शाअल्लाह तआ़ला।

۲ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝

2. रब्बि ला तज़र्नी फ़र्द वंव अन त ख़ैरुल वारिसीन०

(पारा 17, रुकूअ़ 6)

तर्जुमा- ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझको ला-वारिस मत रखियो (यानी मुझे फ़रजंद दीजिए कि मेरा वारिस हो) और सब वारिसों से बेहतर आप ही हैं।

ख़ासियत- जिसको औलाद से मायूसी हो, हर नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ा करे, इन्शाअल्लाह तआ़ला औलाद वाला हो जाएगा। यह दुआ़ हज़रत ज़करिय्या अ़लैहिस्सलाम की है।

۳ وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ۝ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ۝

3. वस्समा अ बनैना हा बि अयदिंव्व इन्ना ल मूसिअ़ून वल् अर्ज़ फ़रश्नाहा फ़ नि अ़मल माहिदून० (पारा 27, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा- और हमने आसमानों को (अपनी) क़ुदरत से बनाया और हम बड़ी क़ुदरत वाले हैं और हमने ज़मीन को फ़र्श बनाया, सो हम (कैसे)

अच्छे बिछाने वाले हैं।

ख़ासियत– जिसको औलाद से मायूसी हो, तो वह दो अंडे रोज़ ज़ोश करके और पोस्त दूर करके एक पर 'वस्समा अ बनैना हा बि अयदिंव्व इन्ना ल मूसिअ़ून और दूसरे पर 'वल् अर्ज़ फ़रश्नाहा फ़निअ़्मल माहिदून०' लिखे। पहला अंडा मर्द और दूसरा अंडा औरत खाये। इसी तरह चालीस दिन तक यह तर्कीब करे और इस दर्मियान में क़ुर्बत भी करता जाए, इन्शाअल्लाह तआ़ला हमल ठहर जाएगा।

٤ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۙ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ وَّيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ أَنْهٰرًا ۗ

4. फ़क़ुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्ब कुम इन्नहु का न ग़फ़्फ़ारंय्युर्सिलिस्समा अ अ़लैकुम मिदरारा०व युम्दिदकुम बिअम्वालिंव व बनी न व यजअ़ल्लकुम जन्नातिंव व यजअ़ल्लकुम अन्हारा० (पारा 29, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा– और मैंने कहा कि तुम अपने परवरदिगार से गुनाह बख़्शवाओ, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है। तुम पर बहुत ज़्यादा बारिश भेजेगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा।

ख़ासियत– कुछ लोग हज़रत हसन बसरी रह० के पास आये। किसी ने पानी न बरसने की शिकायत की और किसी ने औलाद न होने की शिकायत की और किसी ने दूसरी ज़रूरत के लिए कहा। आपने सबके जवाब में फ़रमाया कि 'इस्तिग़फ़ार' किया करो। एक आदमी ने पूछा कि या हज़रत! इसकी क्या वजह कि आपने सबको इस्तिग़फ़ार ही के लिए फ़रमाया है। आपने जवाब में इन ही आयतों को पढ़ा और फ़रमाया कि देखो अल्लाह तआ़ला ने अपने कलाम पाक में इसी को इर्शाद फ़रमाया है।

5. बांझपन ख़त्म होना

۱ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَاءِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ
وَلِيًّا ۝ يَرِثُنِي وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ق وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝ يَا زَكَرِيَّا إِنَّا
نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيَىٰ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ
لِي غُلَامٌ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ كَذَٰلِكَ
قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ
لِي آيَةً قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ
الْمِحْرَابِ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ أَنْ سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝ يَا يَحْيَىٰ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ
وَآتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝ وَحَنَانًا مِنْ لَدُنَّا وَزَكَاةً ط وَكَانَ تَقِيًّا ۝ وَبَرًّا
بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝ وَسَلَامٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ
وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝

1. व इन्नी ख़िफ़्तु से व यौ म युब्अ़सु हय्यन॰ तक
(पारा 16, रुकूअ़ 4)

ख़ासियत– जिस औरत को हमल न रहता हो, दोनों मियां-बीवी जुमा के दिन रोज़ा रखें और शकर और बादाम और रोटी से इफ़्तार करें और पानी बिल्कुल न पिएं और ये आयतें शीशे के जाम पर शहद से, जिसको आग न पहुंची हो, लिख कर पाक मीठे पानी से धोकर सफ़ेद नख़ूद दो सौ चालीस दाने पर ये आयतें पढ़ कर इस पानी को हंडिया में डाल कर वह नख़ूद उसमें डाल दें और ख़ूब तेज़ आंच कर दें, फिर इशा की नमाज़ पढ़ कर सूर: मरयम पढ़े। जब नख़ूद ख़ूब पक जाएं, पानी से निकाल लें और उसमें थोड़ा अंगूर के पानी को बढ़ाकर आधा-आधा दोनों मियां-बीवी पिएं और थोड़ी देर सो रहें, फिर उठ कर मुबाशरत करें। इन्शाअल्लाह तआ़ला उसी रोज़ हमल रह जाएगा और तीन रात तक खाना खाने से पहले इसी

तरह करें तो औलाद बहुत अच्छी हो।

٢۔ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۚ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۚ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۚ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۚ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝

2. व ल कद ख़लक़्नल इंसा न मिन सुलालतिम मिन तीन सुम म जअ़ल्नाहु नुत्फ़तन फ़ी क़रारिम मकीन॰ सुम म ख़लक़्नन नुत्फ़ त अ़ल कतन फ ख़लक़्नल अ़ ल क़ त मुज़्ग़तन फ़ख़लक़्नल मुज़्ग़ त अ़िज़ामन फ़कसौनल अ़िज़ा म लह्मन सुम म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न आख़र फ़ तबा रकल्लाहु अह्सनुल ख़ालिक़ीन॰ (पारा 18, रुकूअ़ 1)

ख़ासियत- औरत के हामिला होने के वास्ते ये तीन आयतें रैहान अतर्जी के सात पत्तों पर लिख कर औरत उनको एक-एक पत्ता करके निगल जाए और हर पत्ते पर पीले रंग की गाय का दूध एक घूंट पी जाए। इन्शाअल्लाह तआ़ला उसको हमल क़रार पाए।

3. जिस दिन औरत हैज़ से पाक होकर ग़ुस्ल करे, एक बकरी का बच्चा फ़रबा ज़िब्ह करके एक देगचे में थोड़े पानी में यख़नी के तौर पर पकाया जाए और वह पानी औरत को पिला दिया जाए और एक बर्तन में सूरः फ़ातिहा, दरूद शरीफ़ और अबजद से ज़ज़्ज़ग़ तक लिख कर और दूसरे बर्तन में- قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝ فَحَمَلَتْهُ بِعَوْنِ اللّٰهِ فَحَمَلَتْهُ بِلُطْفِ اللّٰهِ فَحَمَلَتْهُ بِلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ فَانْتَبَذَتْ

بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝

का ल इन्नमा अना रसूलु रब्बिकि लि अ ह ब लकि ग़ुलामन ज़किय्या॰ कालत अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव व लम् यम्सस्नी ब-श-रुंव व लम अकु बग़िय्या॰ का ल कज़ालि कि का ल रब्बुकि हु व अ़लय य हय्यिनुवंव लि न जुअ़ लहू आय तल्लिन्नासि व रहमतम मिन्ना व का न अम्रम मक़्ज़िय्या॰ फ़ ह म लतहु बिऔ़निल्लाहि फ़ हमलतहु बिलुत्फ़िल्लाहि फ़ हम लतहु बि ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहि फ़न्त ब ज़त बिही मकानन क़सिय्या॰ इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा द शैअन अंय्यक़ू ल लहू कुन फ़ यकून॰

लिख कर पानी में हल करके शौहर क़ुर्बत के वक़्त पी ले, इन्शाअल्लाहु तआ़ला हमल रह जाएगा।

4. बांझ के लिए-

बांझ औरत के वास्ते हिरन की झिल्ली पर गुलाब और ज़ाफ़रान से यह आयत लिखे-

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ بَل لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ط

व लौ अन् न क़ुरआनन सुय्यिरत बिहिल जिबालु अव क़ुत्तिअ़त बिहिल अर ज़ु औ कुल्लि म बिहिल मौता बल-लिल्लाहिल अम्रु जमीअ़न- फ़िर उस तावीज़ को गरदन में बांधे।

5. बांझ के लिए-

चालीस लौंगों पर सात बार इस आयत को पढ़े -

أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكَدْ يَرَاهَا وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ۝

औ क ज़ुलुमातिन फी बह्रिल्लुज्जीयिन यग़शाहु मौजुम मिन फौक़िही सहाबुन ज़ुलुमातुम बअ़ज़ुहा फौ क बअ़जिन इज़ा अख़ रज य द हू लम यकद यराहा व मल्लम यज्अ़लिल्लाहु लहु नूरन फ़मा लहू मिन नूर०

और एक लौंग को हर दिन खाये और शुरू करे हैज़ के ग़ुस्ल होने से और उन दिनों में उसका ज़ौज़ (पति) उस से सोहबत करता रहे।

फ़ायदा- मौलाना ने फ़रमाया और शर्त इस अ़मल की यह भी है कि लौंग रात को खाये और उस पर पानी न पिए।

6. अल-बरिउल मुसव्विर (बनाने वाले, सूरत बनाने वाले)

ख़ासियत- ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से नयी-नयी सन्अ़तों का ईजाद आसान हो। अगर बांझ औरत सात रोज़ तक रोज़ा रखे और पानी से इफ़्तार करे और इफ़्तार के बाद 21 बार पढ़े तो इन्शाअल्लाहु तअ़ाला हमल क़रार पाये और औलाद हो।

6. हमल की हिफ़ाज़त

ﷲ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ط
وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝

1. अल्लाहु यअ़लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा वमा तग़ीज़ुल अर्हामु व मा तज़्दादु व कुल्लु शैइन अ़िन्दहू बिमिक़्दारिन० (पारा 13, रुकूअ़ 8)

तर्जुमा- अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर रहती है, जो कुछ किसी औरत को हमल रहता है (लड़का या लड़की) और जो कुछ रहम में कमी-बेशी होती है और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाजे से है।

ख़ासियत- अगर हमल गिर जाने का डर हो या हमल न ठहरता हो, तो यह आयत और ऊपर वाली आयत इन दोनों को लिख कर औरत

के रहम पर बांधे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला हमल महफ़ूज़ रहेगा और अगर न ठहरता होगा, तो करार पायेगा।

٢ يَآاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ

2. या अय्युहन्नासुत्त क़ू रब्बकुम इन न ज़लज़लतस्सा अ़ति शैउ़न अ़ज़ीम० (पारा 17, रुकूअ़ 8)

तर्जुमा– ऐ लोगो ! अपने रब से डरो (क्योंकि) यकीनन क़ियामत (के दिन का) ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ होगी।

ख़ासियत– हमल की हिफ़ाज़त के लिए फ़ायदेमंद है। हर नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ा करे।

٣ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ج اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ط وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ط وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ج وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْٓ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ط كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ج قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ط قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ○

3. पारा 3, रुकूअ़ 12 से इज़ कालतिम र अ तु............बिग़ैरि हिसाब०

ख़ासियत– यह आयत हमल की हिफ़ाज़त और बच्चों को आफ़तों और तबदीलियों और दूसरे ऐबों और बुरी नज़र से बचाये रखने के लिए है। इन आयतों को गुलाब और ज़ाफ़रान से हिरन की झिल्ली पर लिख कर

हामिला औरत की दाहिनी कोख पर बांध दे, बच्चा होने तक बंधा रहे। इन्शाअल्लाहु तआला तमाम आफतों से बची रहेगी।

وَالَّتِىٓ اَحۡصَنَتۡ فَرۡجَهَا فَنَفَخۡنَا فِيۡهَا مِنۡ رُّوۡحِنَا وَجَعَلۡنٰهَا وَابۡنَهَاۤ اٰيَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ○ اِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمۡ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡنِ ○ وَتَقَطَّعُوۡۤا اَمۡرَهُمۡ بَيۡنَهُمۡ ؕ كُلٌّ اِلَيۡنَا رٰجِعُوۡنَ ○

4. वल्लती अह्सनत फ़र्जहा फ़ न फ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना व जअल्नाहा वब्नहा आयतल्लिल आलमीम० इन न हाज़िही उम्मतुकुम उम्मतंव वाहिदतन व अना रब्बुकुम फ़अबुदूनि० व तक़त्तअू अम्रहुम बैनहुम कुल्लुन इलैना राजिअुन० (पारा 17, रुकूअ 6)

ख़ासियत– हमल की हिफ़ाज़त और बच्चा सही व सालिम पैदा होने के लिये ये आयतें लिख कर शुरु हमल में चालीस दिन तक हामिला औरत के बांध दें, फिर खोल कर नवें महीने फिर बांधे, फिर पैदाइश के बाद तावीज़ खोल कर बच्चे के बांध दें।

5. सूरतुल हुजुरात (पारा 26)

ख़ासियत– काग़ज़ पर लिख कर दीवारों पर चस्पां कर दे तो आसेब न आए। लिख कर पिलाने से दूध बढ़े और हमल की हिफ़ाज़त रहे।

6. सूरः अल-हाक़्क़ा (पारा 29)

ख़ासियत– हामिला के बांधने से बच्चा हर आफ़त से बचा रहे। अगर बच्चा होने के वक़्त उसको पढ़ा हुआ पानी मुंह में लगाएं, तो उसको अक़्लमंदी हासिल हो और हर मर्ज़ और हर आफ़त से, जिसमें बच्चे मुब्तला हो जाते हैं, बचा रहे और अगर रोग़ने ज़ैतून पढ़ कर बच्चे को मल दें तो बहुत फ़ायदा बख़्शे और सब कीड़े-मकोड़े और मूज़ी जानवरों से बचा रहे

और यह तेल तमाम ज़िस्मानी दर्दों को नफ़ा देता है।

7. हमल या फलों के गिरने से बचाने के लिए यह लिख कर बांध दिया जाए-

إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ
تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ۚ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا
غَفُوْرًا ۝ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِى الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَلَبِثُوْا فِىْ كَهْفِهِمْ
ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ

इन्नल्ला ह युम्सिकुस्समावाति वल् अर्ज़ अन् तज़ूला व लइन ज़ा ल ता इन अम्स क हुमा मिन अ ह दिम मिम बअ़दिही इन्नहू का न हलीमन ग़फ़ूरा० व लहू मा स क न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हुवस्समीअ़ुल अ़लीम वल बिसू फ़ी कह्फ़िहिम सला स मि अतिन सिनी न वज़्दादू त्तिस् अ़न व लाहौ ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम०

8. या इसे किसी बर्तन पर लिख कर पिलाया जाए-

٩ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ———— اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ
شَىْءٍ حَىٍّ ۭ وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝ وَاَيُّوْبَ اِذْ
نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ
رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَالَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا
فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

9. अल-मुब्दी उ (पैदा करने वाले)

ख़ासियत- हामिला के पेट पर रात के आख़िरी हिस्से में पढ़े तो हमल महफ़ूज़ रहे और गिरे नहीं।

7. विलादत में आसानी

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝
وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝

1. इज़स्समाउन शक़्क़त॰ व अज़िनत लिर ब्बिहा व हुक़्क़त॰ व इज़ल अर्ज़ु मुद्दत व अल्क़त मा फ़ीहा व तख़ल्लत॰ (पारा 30, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा- जब आसमान फट जाएगा और अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह (आसमान) इसी लायक़ है और जब ज़मीन खींच कर बढ़ा दी जाएगी और वह (ज़मीन) अपने अन्दर की चीज़ों को (यानी मुर्दों को) बाहर उगल देगी और ख़ाली हो जाएगी।

ख़ासियत- इन आयतों को लिख कर विलादत की आसानी के लिए बायीं रान में बांध दें। इन्शाअल्लाहु तआ़ला बहुत आसानी से विलादत होगी, मगर विलादत के बाद तावीज़ को फ़ौरन खोल देना चाहिए और उसी औरत के सर के बाल की धुनी मक़ामे ख़ास पर देना विलादत में फ़ायदेमंद है।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ
وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ
اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

2. क़ुल मंय्यर्ज़ुक़ुकुम मिनस्समाइ वल अर्ज़ि अम्मंय्यम्लिकुस्सम अ़ वल अब्सा र व मंय्युख़्रिजुल हय य मिनल मय्यिति व युख़्रिजुल मय्यित मिनल हय्यि व मंय्युदब्बिरुल अम्र फ़ स यक़ूलूनल्लाहु फ़क़ुल अ फ़ ला तत्तक़ून (पारा 11, रुकूअ़ 9)

ख़ासियत– यह आयत विलादत में आसानी के लिए और कान के दर्द और रिज़्क़ (रोज़ी) की आसानी के लिए है मीठे कद्दू के पोस्त पर स्याही से लिख कर बच्चा जनने के दर्द वाली औरत के दाहिने बाज़ू पर बांध देने से विलादत में आसानी होती है और क़लईदार तांबे की तश्तरी पर अर्क़ गुंदना से लिख कर साफ़ शहद से धोकर आग पर पका कर, जिसके कान में दर्द हो, तीन बूंदें छोड़ दें। इन्शाअल्लाहु तआला नफ़ा हो और जो काग़ज़ पर लिख कर नीले कपड़े में तावीज़ बना कर दाहिने बाज़ू पर बांधे, रोज़ी मिलने में उसके लिए आसानी हो।

٣ اَوَلَمْ يَرَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ○

3. अ व लम यरल्लज़ी न क फ़ रू अन्नस्समावाति वल अर ज़ कानता र त क़न फ़ फ़तक़्नाहुमा व जअ़ल्ना मिनल माइ कुल् ल शैइन हय्यिन अ-फ़ ला यूमिनून○ (पारा 17, रुकूअ़ 3)

ख़ासियत– जो औ़रत बच्चा जनने के दर्द में मुब्तला हो, उसके पेट या कमर पर उसको दम कर दे या लिख कर बांध दे तो विलादत आसानी से हो।

4. बच्चा जनने के दर्द को दूर करने के लिए-जिस औ़रत को बच्चा जनने का दर्द तक्लीफ़ दे तो पर्चा काग़ज़ में यह आयत लिखे-

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ اَهْيًا اَشْرَاهِيًا

व अल्क़त माफ़ीहा व तख़ल्लत व अज़िनत लिर ब्बिहा व हुक़्क़त अह्यन अशरा अहय्यन○

और पर्चे को कपड़े में लपेटे और उसकी बायीं रान में बांध दे तो

वह जल्दी जनेगी।

5. अगर अव्वल सूरः इन्शिक़ाक़ से हुक़्क़त तक मीठी चीज़ पर पढ़े और हामिला को खिलाए तो भी जल्दी जने।

8. दूध बढ़ना

1. सूरतुल हिज्र (पारा 13)

ख़ासियत– जो शख़्स उसको ज़ाफ़रान से लिख कर किसी औरत को पिलाए उसका दूध बढ़ जाए। सूरः यासीन को लिख कर पिलाने से दूध पिलाने वाली औरत का दूध बढ़ जाए।

2. सूरतुल हुजुरात (पारा 26)

ख़ासियत– काग़ज़ पर लिख कर दीवार पर चस्पां कर दे तो आसेब न आए, लिख कर पिलाने से दूध बढ़े और हमल महफ़ूज़ रहेगा, इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

9. दूध छुड़ाना

1. सूरः बुरूज (पारा 30)

ख़ासियत– जिसका दूध छुड़ाना मंज़ूर हो, उसके बांध दे, वह आसानी से दूध छोड़ दे।

10. औलादे नरीना (लड़कों) का नेक होना

1. सूरः अअ़्ला (पारा 30)

ख़ासियत– शुरू महीने हमल में अगर औरत की दाहीनी पसली पर यह सूरः लिख दे तो इन्शाअल्लाहु तआ़ला लड़का पैदा हो।

2. **ऐसी औरत के लिए जो लड़का न जनती हो**–जो औरत सिवाए लड़की के लड़का न जनती हो, तो हमल पर तीन महीने गुज़रने से पहले हिरन की झिल्ली पर ज़ाफ़रान और गुलाब से इस आयत को लिखे-

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ

وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝

अल्लाहु यअ़लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल अर्हामु व मा तज़्दादु व कुल्लु शैइन ज़िन्दहू बिमिक़्दारिन आ़लिमुल ग़ैबिवश्शहादतिल कबीरुल मुतआ़लि०

और इस आयत को लिखे-

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

या ज़ क रिय्या इन्ना नुबश्शिरु क बिग़ुलामि-नि-स्मुहू यह्या लम नज्अ़ल लहू मिन क़ब्लु समिय्या०

फिर यह लिखे-

بِحَقِّ مَرْيَمَ وَعِيْسٰى ابْنًا صَالِحًا طَوِيْلَ الْعُمُرِ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ

बिहक़्क़ि मर यम व ओ़सा इब्नन सालिहन तविलल् उ़म्रि बिहक़्क़ि मुहम्मदिंव आलिही०

फिर इस तावीज़ को हामिला बांधे रहे।

3. **लड़का पैदा होने के लिए**– और यह भी उसी एतिमाद वाले शख़्स ने मुझको ख़बर दी है कि जो औरत सिवाए लड़की के लड़का न जनती हो, उसके पेट पर गोल लकीर खींचे और सत्तर बार उगंली फेरने के साथ 'या मतीनु' कहे।

4. **नेक लड़का पैदा होने के लिए**– पूरी सूरः यूसुफ़ लिख कर

हामिला के तावीज़ बांध दे, लड़का, नेक और दीनदार पैदा हो।

5. अल-मुतकब्बिरु (तकब्बुर करने वाले)

ख़ासियत– बहुत ज़्यादा पढ़ने से बुज़ुर्गी में बरकत हो और मिलन की रात में बीवी के पास जाकर मुबाशरत से पहले दस बार ज़िक्र करे तो लड़का, नेक पैदा हो।

6. सूरः फ़ज्र (पारा 30)

ख़ासियत– आधी रात में पढ़ कर जिमाअ़ करने से औरत नेक-बख़्त पैदा हो।

7. अल-बर्रु (नेक कार)

ख़ासियत– अगर सात बार पढ़ कर बच्चे पर दम किया करे तो नेक-बख़्त उठे।

11. बच्चों की हिफ़ाज़त

1. इज़ क़ा ल तिम र अ तु ज़िम रा न से बिग़ैरि हिसाब तक
إِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرَانَ ...... بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ (पारा 3, रुकूअ़ 12)

ख़ासियत– अगर मुश्क व ज़ाफ़रान से लिख कर तांबे या लोहे की नलकी में रख कर बच्चे के गले में लटका दिया जाए तो रोने और डरने और बुरे ख़्वाब देखने से बचा रहे और मां के थोड़े दूध से पेट भर जाए और अगर दूध कम हो तो बढ़ जाए और बच्चा ख़ूब पले-बढ़े।

2. सूरः जासिया (पारा 25)

ख़ासियत– बच्चे की पैदाइश के वक़्त इसको लिख कर बांधने से तमाम आसेब व तक्लीफ़ देने वाले जानवरों से बचा रहेगा।

3. इन्नी तवक्कल्तु अ़लल्लाहि से अ़ला कुल्लि शैइन हफ़ीज़० तक
إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ ۔ تا عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝ (पारा 12, रुकूअ़ 5)

ख़ासियत– तावीज़ बना कर बच्चे के गले में डालने से जितने मर्ज़ बच्चों को हो जाते हैं, सबसे हिफ़ाज़त रहती है।

4. सूरः इब्राहीम अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलामु० (पारा 13)

ख़ासियत– सफ़ेद रेशम के टुकड़े पर इसको वुज़ू करके लिख कर लड़के के गले में बांध दे तो रोना-डरना और बुरी नज़र, सब दूर हो जाए और दूध छोड़ना आसान हो।

5. सूरः बलद (पारा 30)

ख़ासियत– पैदाइश के वक़्त लिख कर बच्चे के बांध देने से सब तक्लीफ़ देने वाले जानवर और पेचिश से महफ़ूज़ रहे।

12. बच्चों का पलना-बढ़ना

ع١ الَّذِيٓ أَحۡسَنَ كُلَّ شَيۡءٍ خَلَقَهُۥۖ وَبَدَأَ خَلۡقَ ٱلۡإِنسَٰنِ مِن طِينٖ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسۡلَهُۥ مِن سُلَٰلَةٖ مِّن مَّآءٖ مَّهِينٖ ۝ ثُمَّ سَوَّىٰهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِن رُّوحِهِۦۖ وَجَعَلَ لَكُمُ ٱلسَّمۡعَ وَٱلۡأَبۡصَٰرَ وَٱلۡأَفۡـِٔدَةَۚ قَلِيلٗا مَّا تَشۡكُرُونَ ۝

1. अल्ल ज़ी अह्स न कुल ल शैइन ख़ल्क़ हू व ब द अ ख़ल्क़ल इन्सानि मिन तीन. सुम म ज अ़ ल नस्लहू मिन सुला लतिम मिम माइम महीन. सुम म सव्वाहु व न फ़ ख़ फ़ीहि मिर्रूहिही व ज अ़ ल लकुमुस्स म् अ़ वल् अब्सा र वल्अफ़्इ द त क़लीलम मा तश्कुरून०

(पारा 21, रुकूअ़ 14)

ख़ासियत– जब बच्चे को पैदा हुए सत्तर दिन गुज़र जाएं, इसको शीशे के बर्तन में लिख कर बारिश के पानी से धोकर दो हिस्से करे। एक हिस्सा उस बच्चे के खाने की चीज़ में मिलाये और एक हिस्सा बोतल में रख छोड़े और सात दिन तक उसमें से बच्चे को पिलाये और मुंह को मले।

इन्शाअल्लाहु तआला ख़ूब पले-बढ़े।

13. जिमाअ़ की ताक़त

1. जिमाअ़ की ताक़त पाने के लिए-हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि से ज़िक्र किया गया कि फ़लां शख़्स ने निकाह किया, मगर औ़रत पर क़ादिर न हुआ। आपने दो अंडे जोश दिए हुए मंगाये और छिल्का उतार कर एक पर यह आयत लिखी-

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ۝

वस्समा अ बनैनाहा बि अय्दिंव्व इन्ना ल मूसिअ़ून०

और मर्द को खाने के लिए दे दिया और दूसरे पर यह आयत लिखी-

وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ۝

वल अर ज़ फ़रश्नाहा फ़निअ़मल माहिदून०

और वह औ़रत को खाने के लिए दे दिया और कहा कि अब मतलब हासिल करो चुनांचे वह कामियाब रहा।

14. लड़के का ज़िंदा न रहना

1. उस औ़रत के लिए जिसका लड़का ज़िंदा न रहे- और उस शख़्स ने, जिस पर एतिमाद है, ख़बर दी है कि जिस औ़रत का लड़का ज़िंदा न रहता हो, तो अजवाइन और काली मिर्च ले, दोनों चीज़ों पर दोशंबा की दोपहर को चालीस बार 'सूरः वश्शम्स' पढ़े और हर बार दरूद शरीफ़ पढ़ कर शुरू करे और उ़सी पर ख़त्म करे, उसको हर दिन औरत खाया करे, हमल के दिन से लड़के के दुध छुड़ाने तक।

15. छिपी बातों का मालूम करना

ـــ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى تا اَلْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝

1. अल्लाहु यअ्लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा से अल-कबीरुल मुताआलि- तक (पारा 13, रुकूअ् 8)

तर्जुमा– अल्लाह तआला को सब ख़बर रहती है, जो कुछ किसी औरत को हमल रहता है (लड़का या लड़की) और जो कुछ रहम में कमी-बेशी होती है और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाज़े से है। वह तमाम छिपी और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है, सबसे बड़ा आलीशान है।

ख़ासियत– जो शख़्स किसी छिपी बात को मालूम करना चाहे, जैसे हामिला के पेट में क्या है या दफ़्न किया हुआ ख़ज़ाना कहां है या कोई चीज़ दफ़्न करके भूल गया, उसकी जगह मालूम करनी है या ग़ायब कब तक आयेगा या मरीज़ कब तक अच्छा हो जाएगा तो वुज़ू करके इत्र लगाये और पीर के दिन रोज़ा रखे और रात को वुज़ू करके सोए और मंगल के दिन सूरज निकलने से पहले इन आयतों को एक हरे कपड़े पर ज़ाफ़रान और गुलाब ख़ालिस से लिखे, फिर उस कपड़े को अूद व अंबर से धूनी देकर उसको एक डिब्बे के अन्दर बन्द कर दे, इस तरह कि न कोई आदमी उसको देखे और न चांद, सूरज का सामना हो। जब बुध की रात हो तो इशा की नमाज़ पढ़कर उस डिब्बे को हाथ में लेकर यों कहे-

يَا عَالِمَ الْخَفِيَّاتِ فِى الْاُمُوْرِ يَا مَنْ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ اِطَّلِعْنِىْ عَلٰى كُلِّ مَا اُرِيْدُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝

या आलिमल ख़फ़िय्याति फ़िल उमूरि या मन हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर इत्तलिअ़नी अ़ला कुल्लि मा उरीदु इन्न क अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

फिर अल्लाह का ज़िक्र करता हुआ सो जाए। ख़्वाब में कोई चाही बात बतला जाएगा। अगर उस रात को नज़र न आए तो जुमरात को रोज़ा रख कर जुमा की रात में इसी तरह करे, इन्शाअल्लाहु तआला ज़रूर कोई न कोई ख़्वाब में उसको ख़बर देगा।

रोज़ी और क़र्ज़ का अदा करना

1. क़र्ज़ का अदा करना

١ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

1. क़ुलिल्लाहुम म मालिकलमुल्कि तुअ्‌ तिल मुल क मन तशाउ व तन्ज़िअुल मुल क मिम्मन त शाउ व तुअिज़्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन तशाउ बियदिकल ख़ैरु इन न क अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

(पारा 3, रुकूअ़ 11)

तर्जुमा– (ऐ मुहम्मद !) आप यों कहिए कि ऐ अल्लाह ! मालिक तमाम मुल्क के, आप मुल्क जिसको चाहें दे देते हैं और जिस से चाहें आप मुल्क ले लेते हैं और जिसको चाहें बा-इज़्ज़त कर देते हैं, और जिसको आप चाहें, ज़लील कर देते हैं। आप ही के इख़्तियार में सब भलाई है। बेशक आप हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं।

ख़ासियत– क़र्ज़ अदा करने के लिए सात बार सुबह व शाम पढ़ लिया करे तो इन्शाअल्लाहु तआला क़र्ज़ अदा हो जाएगा।

٢ ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ تا وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

2. पारा 4, रुकूअ़ 7 में सुम् म अन् ज़ ल अ़लैकुम मिम् बअ़्दिल ग़म्मि से वल्लाहु अ़लीमुम बिज़ातिस्सुदूर० तक।

तर्जुमा– फिर अल्लाह तआ़ला ने इस ग़म के बाद तुम पर चैन भेजी यानी ऊंघ कि तुममें से एक जमाअ़त पर तो उसका ग़लबा हो रहा था और एक जमाअ़त वह थी कि उनको अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी। वे लोग अल्लाह तआ़ला के साथ सच्चाई के ख़िलाफ़ सोचने लगे थे, जो कि सिर्फ़ बेवक़ूफ़ी का ख़्याल था। वे यों कह रहे थे कि हमारा कुछ इख़्तियार चलता है? (यानी कुछ नहीं चलता)! आप फ़रमा दीजिए कि इख़्तियार तो सब अल्लाह ही का है। वे लोग अपने दिलों में ऐसी बात छिपाये रखते हैं, जिसको आप के सामने (खुल कर) ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं कि अगर हमारा कुछ इख़्तियार चलता (यानी हमारी राय पर अ़मल होता) तो हम (में जो मक़्तूल हुए, वे) यहां मक़्तूल न होते। आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम लोग अपने घरों में भी रहते, तब भी जिन लोगों के लिए क़त्ल मुक़द्दर हो चुका था, वे लोग उन जगहों की तरफ़ निकल पड़ते, जहां वे (क़त्ल हो-हो कर) गिरे हैं और जो कुछ हुआ, इस लिए हुआ ताकि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे बातिन की बात (यानी ईमान) की आज़माइश करे और ताकि तुम्हारे दिलों की बात को साफ़ कर दे और अल्लाह तआ़ला बातिन की सब बातों को ख़ूब जानते हैं और बेशक हमने तुमको ज़मीन पर रहने की जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें ज़िंदगी का सामान पैदा किया। तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करते हो।

ख़ासियत– रोज़ी बढ़ाने के लिए इन आयतों को शुरू महीने के जुमा से चालीस जुमा तक मग़रिब के बाद ग्यारह बार पढ़े और इस दूसरी आयत यानी–

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

व ल क़द मक्कन्नाकुम फ़िल अर्ज़ि व जअ़ल्ना लकुम फ़ीहा मआ़इ श क़लीलम मा तश्कुरून॰ (पारा 8, रुकूअ़ 8)

को हर जुमा के बाद काग़ज़ पर लिख कर कुएं में डालता जाए। पूरी उम्मीद है कि इन्शाअल्लाहु तआ़ला इस अ़मल से ग़नी व मालदार हो जाएगा। अगर क़र्ज़ा हो तो अदा हो जाएगा।

3. सूरः कह्फ़ (पारा 15)

ख़ासियत– इसको लिख कर एक बोतल में रख कर घर में रखने से मुहताजी और क़र्ज़े से बे-ख़ौफ़ रहे और उसके घर वालों को कोई तक्लीफ़ न दे सके और जो अनाज की कोठी में रख दे सब ख़तरों से बचा रहे।

4. सूरः तह्रीम (पारा 28)

ख़ासियत– मरीज़ पर दम करने से दर्द को सुकून और मिरगी वाले को फ़ायदा हो और जिसको नींद न आती हो, नींद आ जाए और मुद्दतों का क़र्ज़ अदा हो।

2. बरकत होना

1. और जो शख़्स सूरः अल-हिज्र को जेब में रखे, उसकी कमाई में बरकत हो और मामलों में कोई शख़्स उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न करे।

3. ज़्यादा से ज़्यादा सुख-चैन

1. सूरः 'इन्ना अन्ज़ल्नाहु' और सूरः 'क़ुल या अय्युहल काफ़िरून' और सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अ हद' ग्यारह-ग्यारह बार पाक पानी पर दम करके नये कपड़े पर छिड़क दे, तो उसके इस्तेमाल तक सुख-चैन में रहे।

2. मालिकल मुल्कि (बादशाही का मालिक)

ख़ासियत– इसे हमेशा पढ़े तो माल व तवंगरी हासिल हो।

3. अल-मुग्नी (तवंगर करने वाले)

ख़ासियत– हज़ार बार पढ़े तो तवंगरी हासिल हो।

4. भूख-प्यास ख़त्म करने के लिए

1. सूरः इख़्लास (पारा 30)

ख़ासियत– जो शख़्स हमेशा इसको पढ़ा करे, हर क़िस्म की भलाई हासिल हो और हर क़िस्म की बुराई से बचा रहे और जो भूख में पढ़े तो पेट भर जाए, और जो प्यास में पढ़े, प्यास मिट जाए।

और अगर ख़रगोश की झिल्ली पर लिख कर अपने पास रखे, कोई इन्सान व जिन्न व तक्लीफ़ पहुंचाने वाला जानवर उसके पास न आए।

2. पूरी सूरः वाक़िआ (पारा 27, रुकूअ़ 14)

ख़ासियत– हदीस में है कि जो शख़्स इस सूरः को रात के वक़्त एक बार पढ़ लिया करे, वह कभी भूखा न रहेगा।

۳ : وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ○

3. व इज़िस्तस्क़ा मूसा लिक़ौमिही फ़ क़ुल्नज़्रिब बिअ़सा कल ह ज र फ़न्फ़ ज रत मिन्हुस्नता अशर त ऐना क़द अ़लि म कुल्लु उनासिम मशरब हुम कुलू वशरबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ़सौ फ़िल अर्ज़ि मुफ़्सिदीन०
(पारा 1, रुकूअ़ 7)

तर्जुमा– और जब (हज़रत) मूसा ने पानी की दुआ़ मांगी अपनी क़ौम के वास्ते, उस पर हमने हुक्म दिया कि अपने इस असा (डंडा-लाठी) को फ़्लां पत्थर पर मारो० पस फ़ौरन उससे फूट निकले बारह चश्मे। मालूम कर लिया हर शख़्स ने अपने पानी पीने की जगह, खाओ और पियो अल्लाह

तआला की रोज़ी से और हद से मत निकलो फ़साद करते हुए ज़मीन में।

ख़ासियत– जिसको सफ़र में पानी न मिले या ऐसे मर्ज़ में मुब्तला हो, जिसमें पानी ज़्यादा पिए और प्यास न बुझे तो इन आयतों को मिट्टी के किसी चिकने बरतन में जो तेल या घी से चिकना हो गया हो या कांच या पत्थर के बर्तन पर लिख कर रबी के बारिश के पानी से धोकर-एक शीशी में भर कर तीन दिन रहने दे। फिर उसमें लाल बकरी का दूध मिला कर आंच पर उसको गाढ़ा करे। प्यास में सुबह के वक़्त दो दिरहम और मरीज़ सोते वक़्त उतना ही पिया करे।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

4. व लहू मा स क न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हुवस्समीअुल अ़लीम॰

(पारा 7, रुकूअ़ 8)

तर्जुमा– और अल्लाह ही की मिल्क है सब कुछ, जो रात में और दिन में रहते हैं और वही है बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला।

ख़ासियत– यह आयत ग़ुस्से को ठंडा करने और प्यास बुझाने और रंज दूर करने के लिए है और अगर खड़ा हो तो बैठ जाए और बैठा हो तो खड़ा हो जाए और यह आयत ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े।

5. अस्समदु (बे-नियाज़)

ख़ासियत– रात के आख़िर में एक सौ पचीस बार पढ़े, तो सिद्क़ और सिद्दीक़ियत की निशानियां ज़ाहिर हों और जब तक इस का ज़िक्र करता रहे, भूख का असर न हो।

5. बे-मशक़्क़त रोज़ी

1. सूरः फ़ातिहा एक सौ ग्यारह बार पढ़ कर बेड़ी-हथकड़ी पर दम करने से क़ैदी जल्दी रिहाई पाये। रात के आख़िर में 41 बार पढ़ने से

बे-मशक़्क़त रोज़ी मिले।

2. सूरः यासीन

ख़ासियत– जिस ज़रूरत के लिए 41 बार पढ़े, वह पूरी हो, डरा हुआ हो, अम्न में हो जाए या बीमार हो, चंगा हो जाए या भूखा हो, पेट-भरा हो जाए।

6. रोज़ी बढ़ाने के लिए

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِنْكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَاهُنَا ۗ قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

1. सुम म अन ज़ ल अ़ले कुम से वल्लाहु अ़लीमुम बिज़ातिस्सुदूर० तक (पारा 4, रुकूअ़ 7)

ख़ासियत– रोज़ी बढ़ाने के लिए इन आयतों को शुरु महीने के जुमा से चालीस जुमा तक, मग़रिब के बाद ग्यारह बार पढ़े और इस दूसरी आयत यानी– وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ۝

व लक़द मक्कन्नाकुम फ़िल अर्ज़ि व जअ़ल्ना लकुम फ़ीहा मआ़यिश क़लीलम मा तश्कुरून० (पारा 8, रुकूअ़ 8)

को हर जुमा को काग़ज़ पर लिख कर कुएं में डालता जाए। पुरी उम्मीद है कि इन्शाअल्लाहु तआला इस अमल से ग़नी और तवंगर हो जाएगा। 2. اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ

2. अल्लाहु लतीफ़ुम बि अ़ि बादि ही यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ व हुवल कविय्युल अ़ज़ीज़० (पारा 25, रुकूअ़ 3)

तर्जुमा– अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर मेहरबान है, जिसको चाहता है, रोज़ी देता है और वह ताक़त वाला ज़बर्दस्त है।

ख़ासियत– रोज़ी बढ़ाने के लिए नमाज़ के बाद ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे।

ع وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ط اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ط قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا٥

3. व मंय्य त वक्कल अ़लल्लाहि फ़ हु व हस्बुहू इन्नल्ला ह बालिग़ु अम्‌रिही क़द ज अ़ लल्लाहु लिकुल्लि शैइन क़द्रा० (पारा 28, रुकूअ़ 17)

तर्जुमा– और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए काफ़ी है। अल्लाह तआ़ला अपना काम पूरा करके रहता है। अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ का अन्दाज़ा (अपने इल्म में) मुक़र्रर रखा है।

ख़ासियत– रोज़ी की ज़्यादती के लिए और जिस मुहिम में चाहे उसको पढ़े, इन्शाअल्लाहु तआ़ला तंगदस्ती दूर हो जाएगी और मुहिम आसान होगी।

4. पूरी सूरः मुज़्ज़म्मिल (पारा 29, रुकूअ़ 13)

ख़ासियत– रोज़ी बढ़ाने के लिए बहुत ही फ़ायदेमंद है। इसकी तर्कीब यह है कि एक चिल्ले तक हर दिन तैशुदा वक़्त पर 11 बार दरूर शरीफ़ पढ़े, फिर ग्यारह मर्तबा 'या मुग़्नी' पढ़े। इस के बाद ग़्यारह मर्तबा सूरः मुज़्ज़म्मिल शरीफ़ पढ़े और फिर आख़िर में भी ग्यारह बार दरूद शरीफ़

पढ़ ले।

जो इस अ़मल को करेगा, अल्लाह तआ़ला ग़ैब से उसकी तरह-तरह की मदद फ़रमाएगा।

5. आयतल कुर्सी मय बिस्मिल्लाह-ख़ालिदून तक, पूरी सूरः फ़लक़ मय बिस्मिल्लाह और पूरी सूरः नास और यह आयत-

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلٰنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

क़ुल लंय युसी बना इल्ला मा क त बल्लाहु लना हुव मौलाना व अ़लल्लाहि फ़ल य त वक्कलिल मुअ्मिनून॰ (पारा 10 रुकूअ़ 13)

तर्जुमा- फ़रमा दीजिए हमको कोई हादसा नहीं पेश आ सकता, मगर वही जो अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाया है। वह हमारा मालिक है और अल्लाह के तो सब मुसलमानों को अपने काम सुपुर्द रखने चाहिए।

ख़ासियत- जो शख़्स आयतल कुर्सी को हर नमाज़ के बाद पढ़ा करे, शैतान के वस्वसे और सरकश शैतानों की चालों व तक्लीफ़ों से बचा रहे और फ़क़ीर से ग़नी हो जाए और ऐसे तरीक़े से रोज़ी मिले कि उसको गुमान भी न हो। और जो इसको सुबह व शाम और घर में जाने के वक़्त और बिस्तर पर लेटने के वक़्त हमेशा पढ़ा करे तो चोरी और डूबने और जलने से अम्न में रहे और सेहत नसीब हो और हर क़िस्म के ख़ौफ़ और अन्देशे से बचा रहे और इसको ठीकरियों पर लिखकर ग़ल्ले में रख दे तो ग़ल्ला चोरी और घुन से बचा रहे और इसमें बरकत हो और जो इसको अपनी दुकान या मकान में किसी ऊंची जगह रख दे तो रोज़ी बढ़े और कभी फ़ाक़ा न हो और वहां चोर न आए और अगर सफ़र या किसी भयानक जगह रहने का इत्तिफ़ाक़ हो तो यह आयतल कुर्सी मय सूरः इख़्लास और

मुअव्वज़तैन और "क़ुल लंय युसीब ना" (आख़िर तक) पढ़कर अपने गिर्द दायरा खींच लिया जाए, इनशाअल्लाहु तआला कोई तक्लीफ़ देने वाला जानवर न पहुंच सकेगा।

६ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۡ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

6. क़ुलिल्लाहुम म से बिग़ैरि हिसाब तक (पारा 3, रुकूअ़ 11)

ख़ासियत- जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इन आयतों को फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद और नफ़्लों के बाद और सोते वक़्त पढ़ा करे, उस को रोज़ी और वुसअ़त नसीब हो, उसके माल में तरक़्क़ी हो और तंगदस्ती दूर हो।

७ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

7. इज़ कालल हवारिय्यून या ईसब न मर य म हल यस्ततीअ़ु रब्बु क अंय्युनज़्ज़ि ल अ़लैना माइदतम मिनस्समाइ कालत्तक़ुल्ला ह इन कुन्तुम मुअ् मिनीन॰ कालूनुरीदु अन नाकु ल मिन्हा व तत्मइन्न क़ुलू बुना व न अ़्ल म अन् कद सदक़्तना व नकू न अ़लैहा मिनश्शाहिदीन का ल ईसब्नु मरयम अल्लाहुम म रब्बना अन्ज़िल अ़लैना माइदतम मिनस्समाइ तकूनु लना ईदल लिअव्वलिन। व आख़िरिना व आयतम मिन क व वर्ज़ुक़्ना व अन्त ख़ैरुराज़िक़ीन॰ (पारा 7, रुकूअ़ 5)

तर्जुमा- वह वक़्त याद के क़ाबिल है, जबकि हवारियों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ ईसा बिन मरयम (अ़लैहिस्सलाम) ! क्या आपके परवरदिगार ऐसा कर सकते हैं कि हम पर आसमान से कुछ खाना नाज़िल फ़रमाएं। आपने फ़रमाया कि ख़ुदा से डरो अगर तुम ईमानदार हो। वे बोले कि हम यह चाहते हैं कि इसमें से खाएं और हमारे दिलों को पूरा इत्मीनान हो जाए और हमारा यक़ीन और बढ़ जाए कि आपने हमसे सच बोला है और हम गवाही देने वालों में से हो जायें। ईसा बिन मरयम ने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर आसमान से खाना नाज़िल फ़रमाइए कि वह हमारे लिए यानी हम में जो अव्वल हैं और बाद में हैं, सबके लिए एक ख़ुशी की बात हो जाए और आप की तरफ़ से एक निशानी हो जाए और आप हम को अता फ़रमाइए और आप सब अता करने वालों से अच्छे हैं।

ख़ासियत- ये आयतें रोज़ी के बढ़ाने और तंगी को दूर करने के लिए हैं। झाऊ की लकड़ी के बरतन में उनको वुज़ू करके लिखे, अपने पास रखे। जब ज़रूरत हो, उसमें पानी भरकर घर या खेत या बाग़ में छिड़के और अगर दिल चाहे तो तीन हफ़्ते लगातार वह पानी पिए। इन्शाअल्लाहु तआ़ला जान व माल में बरकत होगी।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ

8. व लक़द मक्कन्नाकुम फ़िल अर्ज़ि व जअ़ल्ना लकुम फ़ीहा मआ़इश क़लीलम मा तश्कुरुन॰ (पारा 8, रुकूअ़ 8)

तर्जुमा- और बेशक हमने तुमको ज़मीन पर रहने की जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें ज़िंदगी का सामान पैदा किया। तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करने वाले हो।

ख़ासियत- रोज़ी की ज़्यादती के लिए जुमा के दिन जब नमाज़ से

फ़ारिग़ हो जायें, लिखकर दुकान या मकान में रखने से रोज़ी बढ़ती है।

٩ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝

9. क़ुल मंय्यर्ज़ुक़ुकुम मिनस्समाइ वल अर्ज़ि अम्मंय्यम्लिकुस्सम अ़ वल अब्सार व मंय्युख़्रिजुल हय य मिनल मय्यिति व युख़्रिजुल मय्यि त मिनल हय्यि व मंय्युदब्बिरुल अम्र फ़ यक़ूलूनल्लाहु फ़क़ुल अ फ़ ला तत्तक़ून०

(पारा 11, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा- आप कहिए कि वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता है या वह कौन है जो कानों और आंखों पर पूरा इख़्तियार रखता है और वह कौन है जो जानदार को बे-जान से निकालता है और बे-जान को जानदार से निकालता है और वह कौन है जो तमाम कामों की तद्बीर करता है, सो ज़रूर वे यही कहेंगे कि अल्लाह (है) तो उनसे कहिए कि फिर (शिर्क से) क्यों नहीं परहेज़ करते।

ख़ासियत- यह आयत विलादत की आसानी और कान के दर्द और रोज़ी की आसानी के लिए है। मीठे कद्दू के पोस्त पर स्याही से लिखकर बच्चा जनने वाली के दाहिने बाज़ू पर बांध देने से विलादत में आसानी होती है और क़लईदार तांबे की तश्तरी पर अर्क़े गुदनी से लिखकर साफ़ शहद से धोकर आग पर पका कर जिसके कान में दर्द हो, तीन क़तरे छोड़ दे। इन्शाअल्लाहु तआ़ला नफ़ा हो और जो काग़ज़ पर लिखकर नीले कपड़े में तावीज़ बनाकर दाहिने बाज़ू पर बांधे, रोज़ी की चीज़ें उसके लिए आसान हों।

10. सूरः यूसुफ़ अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलाम

(पारा 12, रुकूअ़ 11)

ख़ासियत– जो शख़्स इस को लिखकर पिए, उसकी रोज़ी बढ़े और हर आदमी के नज़दीक क़द्र के क़ाबिल हो।

11. सूरः नम्ल (पारा 19)

ख़ासियत– जो शख़्स उसको हिरन की झिल्ली पर लिख कर बनाये हुए चमड़े में रखकर अपने पास रखे कोई नेमत उसकी ख़त्म न हो और अगर संदूक़ में रख दे, तो उस घर में सांप-बिच्छू, दरिंदा और कोई तक्लीफ़ देने वाला जानवर न आए।

12. सूरः फ़तह (पारा 26)

ख़ासियत– रमज़ान शरीफ़ के चांद को देखते वक़्त तीन बार पढ़ने से तमाम साल रोज़ी बढ़े, लिखकर जंग के वक़्त पास रखने में अम्न में रहे और जीत हो जाए। कश्ती में सवार होकर पढ़ने से डूबने से बचा रहे।

13. सूरः क़ाफ़ (पारा 26)

ख़ासियत– जिस घर में पढ़ी जाए, उसकी दौलत क़ायम रहे।

14. सूरः वाक़िआ (पारा 27)

ख़ासियत– लिखकर बांधने से बच्चा आसानी से पैदा हो। वुज़ू के साथ सुबह व शाम पढ़ने से तंगी व प्यास दूर हो।

۱۵ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰهُ اللّٰهُ ۭ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ
نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰهَا ۭ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝

15. व मन क़ुदि र अ़लैहि रिज़्क़ुहू फलयुन्फिक़ मिम्मा आताहुल्लाहु ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला मा आताहा स यज अ़लुल्लाहु बअ़ द अ़ुसरिन युसरा॰ (पारा 28, रुकूअ़ 17)

तर्जुमा– और जिसकी आमदनी कम हो, उसको चाहिए कि अल्लाह

तआला ने जितना उसको दिया है, उसमें से ख़र्च करे। अल्लाह तआला किसी शख़्स को इससे ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता, जितना उसको दिया है। अल्लाह तआला तंगी के बाद जल्दी फ़राग़त भी देगा (गो ज़रूरत के मुताबिक़ सही)।

ख़ासियत- जिसकी रोज़ी तंग हो, गुनाहों से तौबा करे और नेक कामों का इरादा करे और जुमा की रात की आधी रात को उठ कर इस्तिग़फ़ार सौ बार दरूद शरीफ़ सौ बार यह आयत सौ बार, फिर दरूद शरीफ़ सौ बार पढ़ कर सो रहे। ख़्वाब में मालूम हो जाएगा कि क्या तद्बीर करे कि रोज़ी की तंगी दूर हो।

16. सूरः नून (पारा 29)

ख़ासियत- नमाज़ में पढ़ने से फ़क़्र व फ़ाक़ा दूर हो।

17. सूरः मुज़्ज़म्मिल (पारा 29)

ख़ासियत- इसको पढ़ने से रोज़ी बढ़े।

18. सूरः आदियात (पारा 30)

ख़ासियत- लिखकर पास रखना रोज़ी की आसानी और अम्न व ख़ौफ़ के लिए फ़ायदामंद है।

19. सूरः क़ारिआ (पारा 30)

ख़ासियत- इसका ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ना रोज़ी को बढ़ाता है।

20. आयतुल कुर्सी

ख़ासियत- जो शख़्स इसको तीन सौ तेरह बार पढ़े, अनगिनत भलाई उस को हासिल हो।

21. सूरः वाक़िआ (पारा 27)

ख़ासियत- एक मज्लिस में 41 बार पढ़ने से ज़रूरत पूरी हो, ख़ास तौर से जो रोज़ी के बारे में हो।

22. सूर: ताहा

ख़ासियत- सुबह सादिक़ के वक़्त इसके पढ़ने से रोज़ी मिले और सब ज़रूरतें पूरी हों और लोगों के दिल क़ाबू में हों और दुश्मनों पर ग़लबा हो।

23. या मुग्नी

ख़ासियत- मेरे मुर्शिद क़द्दस सिर्रहू ने मुझको वसीयत की 'या मुग्नी' हमेशा पढ़ते रहने की, हर दिन ग्यारह सौ बार और सूर: मुज़्ज़म्मिल पढ़ने की चालीस बार। सौ अगर न हो सके तो ग्यारह बार और फ़रमाया कि दोनों अमल दिली और ज़ाहिरी दोनों ग़िना के वास्ते मुजर्रब (तजुर्बा किए हुए) हैं और मुझको दरूद के हमेशा पढ़ते रहने की वसीयत की और फ़रमाया कि इसी की वजह से हमने पाया जो पाया।

24. अल-मलिकु (बादशाह)

ख़ासियत- जो शख़्स ज़वाल के वक़्त एक सौ तीस बार पढ़ा करे, अल्लाह तआला उसको दिल की सफ़ाई और ग़िना अता फ़रमायें।

25. अल-अ़ज़ीज़ु (सब से ग़ालिब)

ख़ासियत- चालीस दिन तक हर दिन 41 बार पढ़ें तो ज़ाहिरी व बातिनी ग़िना हासिल हो और किसी मख़्लूक़ का मुहताज न हो।

26. अल-ग़फ़्फ़ारु (बख़्शने वाले)

ख़ासियत- जुमा की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े तो मग़्फ़िरत की निशानियां पैदा हों और तंगी दूर हो और बे गुमान रोज़ी मिले।

27. अल-वह्हाबु (बड़े देने वाले)

ख़ासियत- ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से ग़िना और क़ुबूलियत और हैबत व बुज़ुर्गी पैदा हो।

28. अर्रज़्ज़ाक़ु (रिज़्क़ देने वाले)

ख़ासियत– फ़ज्र की नमाज़ से पहले घर के सब कोनों में दस-दस बार कहे और जो कोना क़िब्ले की दिशा की दाहिनी तरफ़ हो, उससे शुरू करे तो रिज़्क़ में ज़्यादती पैदा हो।

29. अल-फ़त्ताहु (खोलने वाले)

ख़ासियत– फ़ज्र की नमाज़ के बाद सीने पर हाथ रख कर 71 बार पढ़े तो तमाम मामलों में आसानी हो और दिल में तहारत व नूरानियत हो और रोज़ी में आसानी हो।

30. अल-क़ाबिज़ु (बन्द करने वाले)

ख़ासियत– चालीस दिन तक रोटी के लुक़्मे पर इसको लिख कर खाए तो भूख से तक्लीफ़ न हो।

31. अल-बासितु (खोलने वाले)

ख़ासियत– नमाज़ चाश्त के बाद दस बार पढ़ने से रिज़्क़ में फ़ैलाव हो।

32. अल-लतीफ़ु (मेहरबान)

ख़ासियत– एक सौ तैंतीस बार पढ़ने से रोज़ी में फ़ैलाव हो, तमाम काम मज़े से पूरे हों।

33. अल-अ़लिय्यु (बुलंद सब से)

ख़ासियत– अगर लिख कर मुसाफ़िर अपने पास रखे तो जल्द ही अपने अ़ज़ीज़ों से आ मिले। अगर मुहताज रखे तो ग़नी हो जाए।

34. अल-वासिअ़ु (फ़ैलाव वाले)

ख़ासियत– ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से ज़ाहिरी व बातिनी ग़िना हासिल हो और काफ़ी हौसला और बुर्दबारी पैदा हो।

मुहब्बत और क़ाबू में रखने की बात

1. हाकिम का नाराज़ होना

ا فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

1. फ़ स यक्फ़ी क हुमु ल्लाहु व हु वस्समी अुल अ़लीमु॰

(पारा 1, रुकूअ़ 16)

तर्जुमा– तो (समझ लो कि) तुम्हारी तरफ़ से जल्द ही निमट लेंगे। अल्लाह तआ़ला सुनते हैं जानते हैं।

ख़ासियत– जिससे हाकिम नाराज़ व ख़फ़ा हो, वह इस आयत को पढ़ा करे या लिख कर बाज़ू पर बांध ले । इन्शाअल्लाहु तआ़ला हाकिम मेहरबान हो जाएगा।

٢ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

2. कम आतैना हुम मिन आयतिन बय्यिनतिन व मंय्युबद्दिल निअ़मतल्लाहि मिम् बअ़्दि मा जाअत हु फ़ इन्नल्ला ह शदीदुल अ़िक़ाब॰

(पारा 2, रुकूअ़ 10)

तर्जुमा– हमने उनको कितनी वाज़ेह दलीलें दी थीं और जो अल्लाह तआ़ला की नेमत को बदलता है, उसके पास पहुंचने के बाद तो यक़ीनन हक़ तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाले हैं।

ख़ासियत– जिससे हाकिम सख़्त ख़फ़ा व नाराज़ हो, इन आयतों को तीन बार पढ़ कर अपने ऊपर दम करके उसके सामने जाए, इन्शाअल्लाहु तआ़ला मेहरबान हो जाएगा।

3. काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद (पारा 16, रुकूअ़ 4), हा-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़ (पारा 25, रुकूअ़ 2)

ख़ासियत- अगर हाकिम ख़फ़ा हो तो पहले तीन बार बिस्मिल्लाह पढ़े। उसके बाद काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद के हर हर्फ़ को पढ़ता जाए और दाहिने हाथ की उंगली को हर हर्फ़ पर बन्द करता जाए। इसी तरह हा-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़ के हर हर्फ़ को पढ़ता जाए और बाएं हाथ की उंगली को बन्द करता जाए। फिर काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद के हर हर्फ़ को पढ़ता जाए और दाहिने हाथ की उंगली खोलता जाए। इसी तरह हा-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़ के हर हर्फ़ को पढ़ता जाए और बाएं हाथ की उंगली खोलता जाए। इस तर्कीब के बाद नज़र बचा कर हाकिम की तरफ़ दम करे। इन्शाअल्लाहु तआ़ला मेहरबान हो जाएगा।

ع ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

4. सुम म क़सत क़ुलूबुकुम मिम बअ़दि ज़ालि क फ़हि य कल हिजारति औ अशद्दु क़सवतन व इन् न मिनल हिजारति लमा यत फ़ज्जरु मिन्हुल अन्हारु व इन् न मिन्हा ल मा यश्शक़्क़क़ु फ़ यख़्रुजु मिन्हुल माउ व इन न मिन्हा लमा यह्बितु मिन ख़श्यतिल्लाहि व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन अ़म्मा तअ़्मलून० (पारा 1, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा- ऐसे-ऐसे वाक़िओं के बाद तुम्हारे दिल भी सख़्त ही रहे। तो उनकी मिसाल पत्थर की-सी है, बल्कि सख़्ती में पत्थर से भी ज़्यादा

सख़्त और कुछ पत्थर तो ऐसे हैं जिनसे (बड़ी-बड़ी) नहरें फूट कर चलती हैं और इन ही पत्थरों में कि जो फट जाते हैं, फिर उनसे पानी निकल आता है और इन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं जो अल्लाह के ख़ौफ़ से ऊपर से नीचे लुढ़क आते है और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बे-ख़बर नहीं हैं।

ख़ासियत- जिस आदमी का दिल किसी से सख़्त हो जाए या अपने घर वालों से तंगी करे और मिज़ाज बिगड़ जाए तो एक कोरी पाक ठीकरी लेकर आस की लकड़ी से उस शख़्स का नाम उस ठीकरी पर लिखे और कुछ शहद, जिसको आंच न लगी हो और अंगूरी सिरका लेकर उससे यह आयत उस नाम के गिर्द लिखे और उस ठीकरी को कुएं या नहर में डाल दे, जिससे वह शख़्स पानी पीता हो। इसी तरह अगर कोई बादशाह रियाया से बिगड़ जाए, तो इस आयत को काग़ज़ पर मय नाम बादशाह और उसकी मां के लिखकर पहाड़ में किसी ऊंची जगह रख दे। इन्शाअल्लाहु तआला उसकी हालत दुरुस्त हो जाएगी।

5. आयाते हिज़्बे चहल काफ़- أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ (پ۲ ع۱۶)

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝ (پ۴ ع۱۰)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۚ وَالْآخِرَةُ

خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۗ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ (پارہ ۵ رکوع ۸)
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ
مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ۭ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ۭ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ
اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ (۲۷)

ख़ासियत- उनकी ख़ासियत दुश्मनों के मुक़ाबले में इज़्ज़त व ग़लबा मिलता है। अगर परचम पर लिख लिया जाए तो मुक़ाबले में हरगिज़ हार न हो और दुश्मनों पर फ़त्ह व कामियाबी हासिल हो और अगर काग़ज़ पर लिख कर सरदारों और हाकिमों के पास जाए, तो उसकी क़द्र व अ़ज़्मत उनकी आंख में हो।

٦ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ
عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ
ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ
اِلَّا اللّٰهُ ۗ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰي مَا فَعَلُوْا وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُھُمْ
مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۭ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝

6. अल्ल ज़ी न युन्फ़िक़ू न से ....अज्रुल आ़मिलीन० तक
(पारा 4, रुकूअ़ 5)

तर्जुमा- जो लोग कि ख़र्च करते हैं फ़राग़त में और तंगी में भी और गुस्से के ज़ब्त करने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले हैं, तो अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक लोगों को महबूब रखता है और (कुछ) ऐसे लोग कि जब कोई ऐसा काम कर गुज़रते हैं, जिसमें ज़्यादती हो या अपनी ज़ात पर नुक़्सान उठाते हैं तो अल्लाह तआ़ला को याद कर लेते हैं। फिर अपने गुनाहों की माफ़ी चाहने लगते हैं और अल्लाह तआ़ला के सिवा और है कौन जो गुनाहों

को बख़्शता है और वे लोग अपने (बुरे) काम पर हठ नहीं करते और वे जानते हैं कि उन लोगों की जज़ा बख़्शिश है, उनके रब की तरफ़ से और ऐसे बाग़ हैं कि उनके नीचे से नहरें चलती होंगी, यह हमेशा इन ही में रहेंगे और यह बहुत अच्छा हक़्क़ुल ख़िदमत (ख़िदमत का हक़) है, उन काम करने वालों का।

ख़ासियत- ये आयतें तेज़ी से सुकून, नफ़्स व ग़ज़ब और ज़ालिम सुल्तान और जाहिल दुश्मन के लिए है। जुमा की रात में इशा की नमाज़ के बाद काग़ज़ पर लिख कर बांध ले और सुबह को उन लोगों के पास जाए, इन्शाअल्लाहु तआ़ला उनकी बुराई से बचा रहे।

ﷺ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ؗ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

7. सुब्हानल्लाहि व तआ़ला अ़म्मा युशिरकून॰ व रब्बु क यअ़्लमु मा तुकिन्नु सुदूरु हुम व मा युअ़्लिनून॰ वहुवल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व लहुल हम्दु फ़िल ऊला वल् आख़िरति व लहुल हुक्मु व इलैहि तुर्जअ़ून॰

(पारा 20, रुकूअ़ 10)

तर्जुमा- अल्लाह तआ़ला उनके शिर्क से पाक और बरतर है और आप का रब सब चीज़ों की ख़बर रखता है, जो उनके दिलों में पोशीदा रहता है और जिसको ये ज़ाहिर करते हैं और वही है उसके सिवा कोई माबूद (होने के क़ाबिल) नहीं। हम्द (व सना) के लायक़ दुनिया व आख़िरत में वही है और क़ियामत में हुकूमत भी उसी की होगी और तुम सब उसी के पास लौट कर जाओगे।

ख़ासियत- अगर किसी को झूठी गवाही या हाकिम के ग़लत फ़ैसले

और ज़ुल्म से अंदेशा हो तो मुक़दमे की पेशी के वक़्त ये आयतें सात बार पढ़े और तीन बार यह कहे-

वल्लाहु ग़ालिबुन अ़ला अम्रिही。 وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ

इन्शाअल्लाहु तआ़ला सब बुराइयों से महफ़ूज़ रहेगा।

8. सूरतुन्नबा (पारा 30)

ख़ासियत- इसको पढ़कर या बांध कर हाकिम के पास जाने से उसकी बुराई से बचा रहे।

9. सूरतुल मुअ़व्वज़तैन (पारा 30)

ख़ासियत- हर क़िस्म के दर्द व बीमारी व जादू व बुरी नज़र वग़ैरह के लिए पढ़ना और दम करना और लिख कर बांधना मुफ़ीद है और सोते वक़्त बांधने से हर क़िस्म की आफ़त से बचा रहे और अगर इसको लिख कर बच्चों के बांध दे तो 'उम्मुस्सिब्यान' वग़ैरह से हिफ़ाज़त रहे और अगर हाकिम के सामने जाने के वक़्त पढ़ ले तो उसकी बुराई से बचा रहे।

2. ज़ालिम के लिए

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝ ١

1. व लक़ द फ़तन्ना सुलैमा न व अल्क़ैना अ़ला कुर्सिय्यिही ज स द न सूम म अनाब。 (पारा 23, रुकूअ़ 12)

तर्जुमा- और हमने सुलैमान अ़लै。 को (एक और तरह भी) इम्तिहान में डाला और हमने उनके तख़्त पर एक (अधूरा) धड़ डाला। फिर उन्होंने (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ़ किया।

ख़ासियत- अगर किसी शरीर ज़ालिम को शहर से निकालना हो,

तो हर रोज़ सात सुर्ख़ घूंघची पर एक बार सात दिन तक पढ़े और हर दिन उस घूंघची को कुएं में डालता जाए, इन्शाअल्लाहु तआला वह शख़्स जल्द चला जाएगा। इस अ़मल में हैवानात का छोड़ना लाज़िम है, मगर उसको नाजायज़ जगह पर अ़मल न करे, वरना नुक़्सान उठाएगा।

2. अबू जाफ़र नुहास रज़ि॰ ने हदीस नक़ल की है कि आयतल कुर्सी पारा 3 रुकूअ़ 2 और सूर: आराफ़ की तीन आयतें-

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ
رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ○
وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا اِنَّ رَحْمَتَ
اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ○

इन् न रब्बकुमुल्लाहु ल्लज़ी से ....क़रीबुम मिनल मुह्सिनीन॰ तक (पारा 8, रुकूअ़ 14)

और

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ○ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ○ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ○
اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ○ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ○
اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِۨالْكَوَاكِبِ ○ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ
مَّارِدٍ ○ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ○ دُحُوْرًا وَّ
لَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ○ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ○

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न॰ से.......फ़ अत् ब अ़ हू शिहाबुन साक़िब॰ तक (पारा 23, रुकूअ़ 5)

और सूरः रहमान की ये आयतें-

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۚ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ
تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ

सनफ़रुग़ु लकुम से ....नुहासुन फ़ ला तन्तसिरान॰ तक

(पारा 27, रुकूअ़ 12)

ख़ासियत– ये सब आयतें अगर कोई शख़्स दिन में पढ़े तो तमाम दिन और रात को पढ़े तो तमाम रात सरकश शैतान, नुक़्सान पहुंचाने वाला जादूगर और ज़ालिम हाकिम और तमाम चोरों और दरिंदों से बचा रहेगा।

٣ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۭ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ۭ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۤ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۭ
قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

3. व इज़ अख़ज़्ना मीसा क़ कुम व र फ़अ़ना फ़ौ क़ कुमुत्तू र ख़ुज़ू मा आतैनाकुम बि क़ुव्वतिंव वस्मअ़ू क़ालू समिअ़्ना व अ़सैना व उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल अ़िज ल बिकुफ़्रिहिम क़ुल बिअ् स मा यअ् मुरु कुम बिही ईमानु कुम इन कुन्तुम मुअ्मिनीन॰ (पारा 1, रुकूअ़ 11)

तर्जुमा– और जब हमने तुम्हारा क़ौल व क़रार लिया था और तूर को तुम्हारे (सरों के) ऊपर ला खड़ा किया था, तो जो कुछ (अह्काम) हमने तुमको दिए हैं, हिम्मत (और पुख़्तगी) के साथ पकड़ो और सुनो। उस वक़्त उन्होंने ज़बान से कह दिया कि हमने सुन लिया और हम से अ़मल न होगा (और वजह उसकी यह है कि) उनके दिलों में वही गोशाला-बस

गया था। उनके कुफ़्र (पिछले) की वजह से आप फ़रमा दीजिए कि ये काम बहुत बुरे हैं, जिनकी तालीम तुम्हारा ईमान तुमको कर रहा है, अगर तुम ईमान वाले हो।

ख़ासियत– जो शख़्स अपनी ज़िहानत से ज़ुल्म के तरीक़े ईजाद करके लोगों को तक्लीफ़ देता हो और उसकी समझ को ख़त्म करना हो तो यह आयत हफ़्ते के दिन मिठाई पर लिख कर उसको नहार मुंह खिलाये। इन्शाअल्लाहु तआला फिर कोई बात उसकी समझ में न आएगी।

٤ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۖ لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ○

4. या अय्युहल्लज़ी न आ म नू ला तुब्तिलू स द क़ातिकूम बिल मन्नि वल अज़ा कल्लज़ी युन्फ़िक़ु मा ल हू रिआअन्नासि व ला युअ्मिनु बिल्लाहि वल यौमिल आख़िरि फ़ म स लु हू क म स लि सफ़्वानिन अ़लैहि तुराबुन फ़ अ सा ब हू वाबिलुन फ़ तर क हू सल्दा. ला यक़्दिरू न अ़ला शैइम मिम्मा क स बू वल्लाहु ला यह्दिल क़ौमल काफ़िरीन○ (पारा 3, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा– ऐ ईमान वालो ! तुम एहसान जता कर या तक्लीफ़ पहुंचा कर अपनी ख़ैरात को बर्बाद मत करो, जिस तरह वह शख़्स, जो अपना माल ख़र्च करता है, लोगों को दिखलाने की ग़रज़ से और ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर, सो उस शख़्स की हालत ऐसी है, जैसे एक चिकना पत्थर, जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर ज़ोर की बारिश पड़ जाए, सो उसको बिल्कुल साफ़ कर दे, ऐसे लोगों को अपनी कमाई भी हाथ न लगेगी और अल्लाह तआ़ला काफ़िर लोगों को रास्ता न

बताएंगे।

ख़ासियत– अगर कोई ज़ालिम दुश्मन हो और उसको वीरान करना मंज़ूर हो तो शरअ़ी फ़त्वा मालूम करने के बाद हफ़्ते के दिन एक ठीकरी पक्की तैयार करो और किसी पुराने क़ब्रस्तान की थोड़ी मिट्टी हफ़्ते के दिन लो और थोड़ी सी वीरान घर की लो और थोड़ी मिट्टी किसी ख़ाली घर की लो, जिसके रहने वाले मर गए हों और इन आयतों को इस ठीकरी पर लिखो और ख़ूब बारीक पीस लो, दूसरी मिट्टियों के साथ मिलाओं, फिर इन सब को मिला कर उसके घर में हफ़्ते के दिन पहली साअ़त में बिखेर दो।

٥ قُلْ يَٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ إِلَّآ أَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ٥ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۚ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۚ أُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ٥

5. क़ुल या अह्लल किताबि हल तन्क़िमू न मिन्ना इल्ला इन आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि ल इलैना वमा उन्ज़ि ल मिन क़ब्लु व अन् न अक् स र कुम फ़ासिक़ून० क़ुल हल उनब्बिउकुम बिशर्रिम मिन ज़ालि क मसूबतन अ़िन्दल्लाहि मन ल अ़ नहुल्लाहु व ग़जिब अ़लैहि व ज अ़ ल मिन्हुमुल कि र दत वल् ख़नाज़ी र व अ़ ब दत्तागूत.उलाइ क शर्रुम मकानंव व अज़ल्लु अन सवाइस्सबील० (पारा 6, रुकूअ़ 13)

तर्जुमा– आप कहिए कि ऐ अह्ले किताब ! तुम हम में कौन-सी बात ऐबदार पाते हो, इसके अलावा कि हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उस पर जो हमारे पास भेजी गयी है और उस पर जो पहले भेजी जा चुकी है, बावजूद इसके कि तुममें अक्सर लोग ईमान से निकले हुए हैं। आप कहिए

कि क्या मैं तुमको ऐसा तरीक़ा बताऊं जो इससे भी ख़ुदा के यहां बदला मिलने में ज़्यादा बुरा हो, वह उन लोगों का तरीक़ा है जिनको अल्लाह ने दूर कर दिया हो और उन पर ग़ज़ब फ़रमाया हो और उनको बन्दर और सुअर बना दिया हो और उन्होंने शैतान की पूजा की हो। ऐसे लोग मकान के एतिबार से भी बहुत बुरे हैं और सीधे रास्ते से भी बहुत दूर हैं।

ख़ासियत- जो शख़्स ना-हक़ तक्लीफ़ देता हो और ज़ुल्म करता हो, तो जुमरात का रोज़ा रखे और नमाज़ इशा की पढ़ कर इन आयतों को किसी वक़्फ़ी घर की एक मुट्ठी मिट्टी लेकर तीस बार पढ़ कर उस शख़्स के घर में वह मिट्टी छोड़ दो, फिर उसकी जान व माल का तमाशा देख लो।

ع إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۚ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ
بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ○ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ
بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ○

6. इन्नी तवक्कल्तु अ़लल्लाहि रब्बी वरब्बिकुम मामिन दाब्बतिन इल्ला हु व आख़िज़ुम बिनासि य ति हा इन् न रब्बी अ़ला सिरातिम मुस्तक़ीम० फ़ इन तवल्लौ फ़ क़द अब्लग़तुकुम मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन ग़ै र कुम व ला तज़ुर्रू न हू शैआ. इन् न रब्बी अ़ला कुल्लि शैइन हफ़ीज़० (पारा 12, रुकूअ़ 5)

तर्जुमा- मैंने अल्लाह पर तवक्कुल कर लिया है जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है। जितने धरती पर चलने वाले हैं, सब की चोटी उसने पकड़ रखी है, यक़ीनन मेरा रब सीधे रास्ते पर (चलने से

मिलता) है, फिर अगर (इस बयान के बाद भी) तुम (हक़ के रास्ते से) फिरे रहोगे, तो मैं (तो मजबूर समझा जाऊंगा, क्यों कि) जो पैग़ाम देकर मुझको भेजा गया था वह तुमको पहुंचा चुका हूं और तुम्हारी जगह मेरा रब दूसरे लोगों को ज़मीन में आबाद कर देगा और उसका तुम कुछ नुक़्सान नहीं कर रहे। बेशक मेरा रब हर चीज़ की निगहदाश्त करता है।

ख़ासियत- जिसको किसी ज़ालिम आदमी या तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवर का डर हो, इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे जब बिस्तर पर लेटे, जब सोये, जब जागे, सुबह के वक़्त, शाम के वक़्त, इन्शाअल्लाहु तआ़ला महफ़ूज़ रहेगा।

7. सूरः रअ़द (पारा 13)

ख़ासियत- इसको किसी बड़ी नयी रकाबी पर अंधेरी रात में जिसमें गरज-चमक हो, लिख कर बारिश के पानी से धोकर अंधेरी रात में उस पानी को ज़ालिम हाकिम के दरवाज़े पर छिड़क दें। इन्शाअल्लाहु तआ़ला उसी दिन निकाल दिया जाएगा। इमाम का क़ौल है, जो शख़्स उसको इशा के बाद अंधेरी रात में आग की रोशनी में लिख कर उसी वक़्त ज़ालिम बादशाह या ज़ालिम हाकिम के दरवाज़े पर डाल दे, उसकी रियाया और लश्कर उससे दूर हो जाएं और कोई कहना न माने और उसका दिल ख़ूब तंग हो।

فَسَتَذْكُرُونَ مَآ أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأُفَوِّضُ أَمْرِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بَصِيرٌۢ بِٱلْعِبَادِ ۝

8. फ़ स तज़्कुरू न माअक़ूलु लकुम व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाहि इन्नल्ला ह बसीरुम बिल ़िबादि० (पारा 24, रुकूअ़ 10)

तर्जुमा- आगे चल कर तुम मेरी बात को याद करोगे और मैं अपना

मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं। अल्लाह तआला सब बन्दों का निगरां है।

ख़ासियत– ज़ालिम के सामने पढ़ने से उसके नुक़्सान से बचा रहेगा।

9. सूरः तग़ाबुन (पारा 28)

ख़ासियत– यह सूरः पढ़ कर किसी ज़ालिम के पास चला जाए तो उसकी बुराई से बचा रहेगा।

10. अल-जब्बारु (दुरुस्त करने वाले)

ख़ासियत– सुबह व शाम 216 बार पढ़े तो ज़ालिमों की बुराई से बचा रहेगा।

11. अर्राफ़िउ (बुलंद करने वाले)

ख़ासियत– सत्तर बार पढ़ने से ज़ालिमों से अम्न हो।

12. अलख़बीरु (ख़बर रखने वाले)

ख़ासियत– सात दिन तक ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने से छिपी ख़बरें मालूम होने लगेंगी और जो किसी ज़ालिम, तक्लीफ़ पहुंचाने वाले के पंजे में गिरफ़्तार हो, उसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने से हालत दुरुस्त हो जाए।

13. अल-क़विय्यु (तवाना)

ख़ासियत– अगर कम हिम्मत पढ़े, हिम्मत वाला हो जाए, अगर कमज़ोर पढ़े, ताक़त वाला हो और अगर मज़्लूम अपने ज़ालिम के मग़्लूब करने को पढ़े, वह मग़्लूब हो जाए।

3. इज़्ज़त बढ़ना

١. الٓمّٓ ۚ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ ۚ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۚ

1. सूरः आले इम्रान-'अलिफ़-लाम-मीम० अल्लाहु ला इला ह इल्ला हु वल हय्युल कय्यूम.नज़् ज़ ल अ़लै कल किता ब बिल हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै न यदैहि व अन ज़ लत्तौरा त वल इंजी ल मिन क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन ज़ लल् फ़ुर्क़ान० (पारा 3, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा– अलिफ़-लाम-मीम० अल्लाह तआ़ला ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं। वह जिंदा (हमेशा-हमेशा) हैं, चीज़ों के संभालने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला ने आपके पास क़ुरआन भेजा है, सच्चाई के साथ, इस तरह कि वह तस्दीक़ करता है उन (आसमानी) किताबों की, जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं और इसी तरह भेजा था तौरेत और इंजील को इससे पहले, लोगों की हिदायत के वास्ते और अल्लाह तआ़ला ने मोजज़े भेजे हैं।

ख़ासियत– हिरन की झिल्ली पर बारीक क़लम से लिख कर अंगूठी के नग के नीचे रख दिया जाए, जो शख़्स वुज़ू करके पहने, जाह व क़ुबूलियत हासिल हो जाए और दुश्मन से बचा रहे।

٢. یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَیَاْبَى اللّٰهُ اِلَّاۤ اَنْ یُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّیْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝

2. युरीदू न अंय्युत् फ़िऊ नूरल्लाहि बिअफ़्वाहिहिम व याबल्लाहु इल्ला अंय् युतिम् म नू र हू व लौ करिहल काफ़िरून० हुवल्लज़ी अर्सल रसूल हू

बिल हुदा व दीनिल हक़्क़ि लियुज़्हि र हू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल मुश्रिकून० (पारा 10, रुकूअ़ 11)

तर्जुमा– वे लोग यों चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह तआ़ला इसके अ़लावा कि अपने नूर को कमाल तक पहुंचा दे, मानेगा नहीं, गो काफ़िर लोग कैसे ही ना-ख़ुश हों। (चुनांचे) वह अल्लाह ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी क़ुरआन मजीद) और सच्चा दीन देकर भेजा है, ताकि उसको बाकी तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, गो मुश्रिक कैसे ही ना-ख़ुश हों।

ख़ासियत– आबगीना के आब ना रसीदा बरतन में ज़ाफ़रान व गुलाब से इस आयत को लिख कर औ़द की धूनी देकर रोग़न चंबेली ख़ालिस से उसको धोकर हरी शीशी में उठा रखे। जब किसी के पास जाने की ज़रूरत हो, थोड़ा तेल अपने भवों पर मल कर जाए, इन्शाअल्लाह तआ़ला क़ुबूलियत व मुहब्बत और इज़्ज़त व जह लोगों के दिलों में पैदा हो।

ع وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝

3. वज़्कुर फ़िल किताबि इद्री स इन्नहू का न सिद्दीक़न नबिय्या व रफ़अ़्नाहु मका नन अ़लिय्या० -पारा 16, रुकूअ़ 7

तर्जुमा– और इस किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह बड़े दोस्ती वाले नबी थे और हमने उनको (कमालात में) बुलंद रुत्बे तक पहुंचाया।

ख़ासियत– रुत्बे और शान बढ़ने के लिए रेशम के टुकड़े पर ज़ाफ़रान से, जो शहद में हल की गयी हो, लिख कर तावीज़ बना लें और मोम को कुन्दुर में गोंध कर उससे तावीज़ को धुनी दें, और बांध लें, हर

जगह इज़्ज़त व आबरू हो।

يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا ۝ وَّدَاعِيًا إِلَى اللّٰهِ بِإِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۝ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيلًا ۝

4. या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना क शाहिदंव व मुबश्शिरंव व नज़ीरंव व दाञियन इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम मुनीरा० व बश्शिरिल मुअ् मिनी न बि अन न लहुम मिनल्लाहि फ़ज़लन कबीरा० व ला तुतिञिल काफि री न वल मुनाफ़िक़ी न व दअ् अज़ाहुम व त वक्कल ञलल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला० -पारा 22, रुकूअ् 3

तर्जुमा- ऐ नबी ! हमने बेशक आपको इस शान का रसूल बना कर भेजा है कि आप गवाह होंगे और आप (मोमिनों के) ख़ुश ख़बरी देने वाले हैं और (काफ़िरों के) डराने वाले हैं और (सब को अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाले हैं) आप एक रोशन चिराग़ हैं और मोमिनों को बशारत दीजिए कि उन पर अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल होने वाला है और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहना न कीजिए और उनकी तरफ़ से जो तक्लीफ़ पहुंचे, उसका ख़्याल न कीजिए और अल्लाह पर भरोसा कीजिए। अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है।

ख़ासियत- रोग़न चम्बेली में मुश्क व ज़ाफ़रान हल करके सुबह की नमाज़ के बाद इन आयतों को सात दिन तक इस पर दम करके शीशी में रख छोड़ें, भवों और गालों को लगा कर जिसके सामने जाएं, वह उसकी इज़्ज़त करे और इज़्ज़त और भले तरीक़े से पेश आए, जो मांगे वह दे और

सब पर उसका रौब हो।

5. अल-अज़ीमु (बुज़ुर्ग)

ख़ासियत– ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से इज़्ज़त और हर मर्ज़ से शिफ़ा हो।

6. अल-जलीलु (बुज़ुर्ग)

ख़ासियत– इसको ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से मुश्क व ज़ाफ़रान से लिख कर पास रखने से क़द्र व मंज़िलत ज़्यादा हो।

7. ज़ुल जलालि वल इक्रामि (बुज़ुर्गी और इनाम वाला)

ख़ासियत– इसके ज़िक्र करने से इज़्ज़त व बुज़ुर्गी हासिल हो।

4. मुहब्बत के लिए

१. يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ

1. युहिब्बुहुम व युहिब्बू न हू अज़िल्लति न अलल् मुअ् मि नी न अ ज़िज़् तिन अल ल् काफ़िरीन॰ –पारा 6 रुकूअ़ 12

तर्जुमा– जिनसे अल्लाह तआ़ला को मुहब्बत होगी और उनको अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत होगी, मेहरबान होंगे मुसलमानों पर तेज़ होंगे काफ़िरों पर।

ख़ासियत– इस आयत को मिठाई पर दम करके खिलाए जिसको खिलाए, इन्शाअल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत हो जाएगी।

२. هُوَالَّذِیْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْاَنْفَقْتَ مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

2. हुवल्लज़ी अय्य द क बि नसरि ही बिल् मुअ्मिनी न व अल् लफ़ बैन क़ुलूबिहिम लौ अन्फ़क्त मा फ़िल अर्ज़ि जमीअ़म मा अल्लफ़्त बै न क़ुलू बिहिम व लाकिन्नल्ला ह अल्ल फ़ बै न हुम इन्नहू अ़ज़ी-ज़ुन हकीम० (पारा 10, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा– और वही है जिसने आपको अपनी (ग़ैबी) मदद (फ़रिश्तों) से और (ज़ाहिरी मदद) मुसलमानों से ताक़त दी और उनके दिलों में एकता पैदा कर दी और अगर आप दुनिया भर का माल ख़र्च करते, तब भी उनके दिलों में एकता पैदा न कर सकते। लेकिन अल्लाह ही ने उनमें आपसी एकता पैदा कर दी। बेशक वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

ख़ासियत– मुहब्बत के लिए मिठाई पर दम करके खिलाये, दिली मुहब्बत इन्शाअल्लाह तआ़ला हो जाएगी।

٣ يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ۝ وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَن نَّفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

3. यूसुफ़ु अअ़्रिज़ अ़न हाज़ा वस्तग़्फ़िरी लि ज़म्बि कि इन्नकि कुन्ति मिनल ख़ातिईन० व क़ा ल निस्वतुन फ़िल मदी न तिम र अ तुल अ़ज़ीज़ि तुराविदु फ़ता हा अ़न नफ़्सि ही क़द श ग़ फ़ हा हुब्बन इन्ना ल न राहा फ़ी ज़लालिम मुबीन० -पारा 12, रुकूअ़ 13

तर्जुमा– ऐ यूसुफ! इस बात को जाने दो और (औरत से कहा) ऐ औरत! तू (यूसुफ़ से) अपने क़ुसूर की माफ़ी मांग। बेशक सर ता सर तू ही क़ुसूरवार है और कुछ औरतों ने जो कि शहर में रहती थीं, यह बात कही कि अ़ज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम को उससे ना-जायज़ मतलब हासिल करने के लिए फुसलाती है। इस ग़ुलाम का इश्क उसके दिल में जगह

कर गया है। हम तो उसको खुली ग़लती में देखते हैं।

ख़ासियत– यह मुहब्बत की आयतों में से हैं, जिसकी तर्कीब ऊपर दो जगह गुज़र चुकी है।

إِنِّيٓ أَحۡبَبۡتُ حُبَّ ٱلۡخَيۡرِ عَن ذِكۡرِ رَبِّي حَتَّىٰ تَوَارَتۡ بِٱلۡحِجَابِ
رُدُّوهَا عَلَيَّۖ فَطَفِقَ مَسۡحَۢا بِٱلسُّوقِ وَٱلۡأَعۡنَاقِ ۝

4. इन्नी अह्बब्तु हुब्बल ख़ैरि अ़न ज़िक्रि रब्बी हत्ता तवारत बिल हिजाबि रुद्दूहा अ़लय्य फ़ तफ़ि क़ मस्हम बिस्सूक़ि वल अअ़्-नाक़ि॰

(पारा 23, रुकूअ़ 12)

तर्जुमा– मैं उस माल की मुहब्बत में अपने रब की याद से ग़ाफ़िल हो गया, यहां तक कि सूरज (पश्चिम) के पर्दे में छिप गया। (फिर नौकरों-चाकरों को) हुक्म दिया कि इन घोड़ों को ज़रा फेर कर मेरे सामने लाओ। उन्होंने उनकी पिंडलियों और गरदनों पर (तलवार से) हाथ साफ़ करना शुरू कर दिया।

ख़ासियत– मुहब्बत की आयतों में से है। तर्कीब ऊपर गुज़र चुकी है।

وَٱعۡتَصِمُواْ بِحَبۡلِ ٱللَّهِ جَمِيعٗا وَلَا تَفَرَّقُواْۚ
وَٱذۡكُرُواْ نِعۡمَتَ ٱللَّهِ عَلَيۡكُمۡ إِذۡ كُنتُمۡ أَعۡدَآءٗ فَأَلَّفَ بَيۡنَ قُلُوبِكُمۡ
فَأَصۡبَحۡتُم بِنِعۡمَتِهِۦٓ إِخۡوَٰنٗا وَكُنتُمۡ عَلَىٰ شَفَا حُفۡرَةٖ مِّنَ ٱلنَّارِ فَأَنقَذَكُم
مِّنۡهَاۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمۡ ءَايَٰتِهِۦ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُونَ ۝ وَلۡتَكُن مِّنكُمۡ
أُمَّةٞ يَدۡعُونَ إِلَى ٱلۡخَيۡرِ وَيَأۡمُرُونَ بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ ٱلۡمُنكَرِۚ
وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُفۡلِحُونَ ۝

5. वअ़् त सिमू बि हब्लिल्लाहि ....व उलाइ क हुमुल मुफ़्लिहून॰ तक

(पारा 4, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा– और मज़बूत पकड़े रहो अल्लाह तआला के सिलसिले को इस तौर पर कि आपस में सब मिल कर रहो और बाहम नाइत्तिफ़ाक़ी मत करो और तुम पर जो अल्लाह तआला का इनाम है, उसको याद करो, जबकि तुम (आपस में) दुश्मन थे। पस अल्लाह तआला ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत डाल दी, सो अल्लाह तआला के इनाम से आपस में भाई-भाई हो गये और तुम लोग दोज़ख़ के गढ़े के किनारे पर थे, सो उससे अल्लाह तआला ने तुम्हारी जान बचा दी। इसी तरह अल्लाह तआला तुम लोगों को अपने अह्काम बयान करके बतलाते रहते हैं ताकि तुम लोग राह पर रहो और तुम में एक जमाअत ऐसा होना ज़रूरी है कि जो ख़ैर की तरफ़ बुलाया करें और नेक कामों के करने को कहा करें और बुरे कामों से रोका करें और ऐसे लोग (आख़िरत में) पूरे कामियाब होंगे।

ख़ासियत– अगर चढ़ते महीने में पीर के दिन हिरन की झिल्ली पर तूत के अर्क़ से लिख कर आख़िर में 'या मुअल्लिफ़ल क़ुलूबि अल्लिफ़ बै न फ़्ला बिन फ़्लानिन, लिखे और फ़्लां-फ़्लां की जगह उन दोनों शख़्सों के नाम लिखे, जिनमें मुहब्बत पैदा कराना मंज़ूर हो और तालिब के बाज़ू वग़ैरह पर बांध दे, मत्लूब मेहरबान हो जाएगा, अगर दुश्मनी हुई, दोस्ती में बदल जाएगी, अगर ग़ज़बनाक होगा, मेहरबान हो जाएगा और इक़बाल व जाह मयस्सर होगा और अगर उसको वाइज़ अपने पास रखे, उसका वाज़ मक़्बूल व असर वाला हो।

٦ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۟ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

6. व नज़अ़ना मा से ......कुन्तुम तअ़मलून॰ तक (पारा 8, रुकूअ़ 12)

तर्जुमा– और जो कुछ उनके दिलों में ग़ुबार था, हम उसको दूर कर देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे लोग कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख एहसान है, जिसने हमको इस मक़ाम तक पहुंचाया और कभी पहुंच (यहां तक) न होती, अगर अल्लाह तआला हमको न पहुंचाते। वाक़ई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची बातें लेकर आए थे और उनसे पुकार कर कहा जाएगा कि यह जन्नत तुम को दी गयी है तुम्हारे अ़मलों के बदले।

ख़ासियत– नये तराशे क़लम से मिठाई पर लिख कर जिन लोगों में दुश्मनी और अ़दावत और ना-इत्तिफ़ाक़ी हो, उनको खिलाने से मुहब्बत व इत्तिफ़ाक़ पैदा हो जाए। इसी तरह ख़ुरमा या इंजीर या बेरी पर लिख कर खिलाने से भी असर होता है।

7. सूरतुल क़द्र (पारा 30)

ख़ासियत– जिससे मुहब्बत हो, उसके सर के बाल पकड़ कर यह सूरः पढ़े तो कोई ना-गवार बात उससे न हो।

8. 'अर्रहमानिर्रहीम' लिख कर पानी से धोकर वह पानी किसी पेड़ की जड़ में डाल दे, उसके फल में बरकत पैदा हो और अगर किसी को घोल कर पिलाए, उसके दिल में लिखने वाले की मुहब्बत पैदा हो, इसी तरह अगर तालिब और मत्लूब का नाम मय वालिदा के लिखे, उसकी मुहब्बत में परेशान हो, बशर्ते कि जायज़ मुहब्बत हो।

9. अल-कबीरु (बड़े)

ख़ासियत– ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से इल्म व मारफ़त का दरवाज़ा खुले और अगर खाने की चीज़ पर पढ़ कर मियां-बीवी को खिलाया जाए तो आपस में मुहब्बत हो।

10. अल-वदूदु (दोस्तदार)

ख़ासियत- अगर खाने पर एक हज़ार बार पढ़ कर बीवी के साथ खाये तो मुहब्बत करने लगे और फ़रमांबरदार हो जाए।

11. अल-वलिय्यु (मदद करने वाले)

ख़ासियत- जो ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, महबूब हो जाए और जिसको कोई मुश्किल पेश आये, जुमा की रात में हज़ार बार पढ़े, मुश्किल आसान हो जाए।

5. अपना हक़ वसूल करने के लिए

1. अल-मुज़िल्लु (ज़िल्लत देने वाले)

ख़ासियत- 75 बार पढ़ कर सज्दा में चला जाए, फिर दुआ करे तो जलने वाले की जलन से बचा रहे और जिसका हक़ दूसरे के ज़िम्मे आता हो, वह उसमें टाल-मटोल करता हो, तो उस को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने से वह उसका हक़ अदा कर दे।

6. सब का प्रिय बनने के लिए

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ
ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي
ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

1. फ़ालिक़ुल इस्बाहि व ज अ लल्लैल स क नंव्व श्शम स वल क़ म र हुस्बाना. ज़ालि क तक़्दीरुल अज़ीज़िल अलीम० व हुवल्लज़ी ज अल लकुमुन्नुजू म लि तह्त दू बिहा फ़ी ज़ुलु मा तिल बर्रि व ल ब्हरि, क़द फ़स्सल्नल आयाति लि क़ौमिंय्यअ्लमून०   (पारा 7, रुकूअ़ 18)

तर्जुमा– अल्लाह तआ़ला सुबह का निकालने वाला है और उसने रात को राहत की चीज़ बनायी है और सूरज और चांद (की रफ़्तार) को हिसाब से रखा है, यह ठहराई हुई बात है, ऐसी ज़ात की जो कि क़ादिर है, बड़े इल्म वाला है और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम्हारे (फ़ायदे के) लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिए से अंधेरों में और ख़ुश्की में भी और दरिया में भी रास्ता मालूम कर सको। बेशक हमने (ये) दलीलें ख़ूब खोल-खोल कर बयान कर दी, उन लोगों के लिए जो ख़बर रखते हैं।

ख़ासियत– अगर लाजवरद के नगों पर बुध के दिन खुदवा करके अंगूठी पहने, हर तरह की ज़रूरत पूरी हो और क़ुबूलियत और मुहब्बत और डर लोगों की नज़र में पैदा हो।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَالَّذِيْٓ اَيَّدَكَ
بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا
مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

2. व इंय्युरीदू अंय्यख़्दअ़ू कफ़ इन्न हस्ब क ल्लाहु हुवल्लज़ी अय्य द क बि न्नस्रिही व बिल् मुअ् मिनी न० व अल् ल फ़ बै न क़ुलूबिहिम लौ अन्फ़क़्त मा फ़िल अर्ज़ि जमीअ़म मा अल्लफ़्त बै न क़ुलूबिहिम व ला कि न्नल्ला ह अल्ल फ़ बैनहुम इन्नहू अ़ज़ीज़ुन हकीम०

(पारा 10, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा– अगर वे लोग आपको धोखा देना चाहें, तो अल्लाह तआ़ला आपके लिए काफ़ी हैं और वही है जिसने आपको अपनी मदद से और मुसलमानों से ताक़त दी और उनके दिलों में एका पैदा कर दिया और अगर आप दुनिया भर का माल ख़र्च करते, तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें एका पैदा कर दिया। बेशक वह

ज़बरदस्त हिक्मत वाले हैं।

ख़ासियत- जो शख़्स रमज़ान के पहले जुमा में ज़ुहर व अस्र के दर्मियान इस आयत को वुज़ू करके तीन रंग यानी हरे, पीले और लाल टुकड़ों पर लिख कर वे टुकड़े टोपी की गोट में लगा कर एहतीयात से रख दे, ज़रूरत के वक़्त पहन कर जहां जाए, इज़्ज़त व हैबत व मुहब्बत से लोग पेश आएं।

٣ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَّزَيَّنَّاهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۙ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ
كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۙ

3. व ल क़ द जअ़लना फ़िस्समाइ बुरूजंव व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन॰ व हफ़िज़्ना हा मिन कुल्लि शैतानिर्रजीम॰ (पारा 14, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा- और बेशक हमने आसमान में बड़े-बड़े सितारे पैदा किए और देखने वालों के लिए उसको सजाया और उसको हर शैताने मरदूद से महफ़ूज़ फ़रमाया-

ख़ासियत- नगीने पर खुदवा करके या हिरन की झिल्ली पर लिख कर पहनने से जाह व क़ुबूलियत के लिए बहुत असर रखती है।

٤ طٰهٰ ۚ مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰى ۙ إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۙ
تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۙ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ○
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ○ وَإِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ
فَإِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفٰى ○ اَللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى ○

4. त्वहा- से अस्माउल हुस्ना॰ तक (पारा 16, रुकूअ़ 10)

तर्जुमा- त्वाहा ! हमने आप पर क़ुरआन मजीद इस लिए नहीं उतारा कि आप तक्लीफ़ उठाएं बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए जो (अल्लाह से) डरता हो। यह उसकी तरफ़ से नाज़िल किया गया है, जिसने

ज़मीन को और बुलंद आसमान को पैदा किया है (और) वह बड़ी रहमत वाला अर्श पर क़ायम है। उसी की मिल्क हैं, जो चीज़ें आसमान और ज़मीन पर हैं और जो चीज़ें इन दोनों के दर्मियान हैं और जो चीज़ें तह्तस्सरा में हैं। (उसके इल्म की यह शान है कि) अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह चुपके से कही हुई बात को और उससे ज़्यादा ख़फ़ी को जानता है, (वह) अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं।

ख़ासियत- संगे मरमर या चीनी या बिल्लौर के बर्तन में मुश्क व काफ़ूर व गुलाब से लिख कर रोग़न बान से धोकर उसमें थोड़ा अंबर व काफ़ूर को बढ़ा करके ख़ुश्बू बना लें, पेशानी और भवों पर मल कर जिसके सामने होगा, वह उसकी इज़्ज़त व आबरू करे।

٥ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ
اَلْمِصْبَاحُ فِىْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ
مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِىْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ
نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۙ فِىْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ
يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۙ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ
ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَ
الْاَبْصَارُ ۙ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ
يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ٥

5. अल्लाहु नूरुस्समावाति- से मंय्य शाउ बिग़ैरि हिसाब० तक (पारा 18, रुकूअ 11)

ख़ासियत- अवाम में मक़्बूल होने के लिए नहा कर जुमरात व जुमा

का रोज़ा रखे और जुमा के दिन अस्र से पहले कि़ब्ले की तरफ़ मुंह करके पहले सूर: यासीन पढ़े, फिर ये आयतें हिरन की झिल्ली पर दीनदार आ़लिम की दवात की स्याही से लिख कर उस को लपेट कर अस्र की नमाज़ पढ़ो और तावीज़ हाथ में लेकर सूर: कह्फ़ पढ़े और तावीज़ हिफ़ाज़त से उठा रखे, जो शख़्स अपने पास रखेगा, आम मक़्बूलियत उसे हासिल होगी।

6. सूर: मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) (पारा 26)

ख़ासियत– लिखकर ज़मज़म के पानी से धोकर पीने से लोगों की नज़र में महबूब हो जाए, जो बात सुने, याद रहे। उसके पानी से ग़ुस्ल करना तमाम मर्ज़ों को दूर करता है।

7. अल-अद्लु (इन्साफ़ करने वाले)

ख़ासियत– जुमा की रात में रोटी के तीस टुकड़ों पर इस को लिखकर खाने से लोगों के दिल क़ाबू में आ जायं।

8. अल-करीमु (बख़्शिश करने वाले)

ख़ासियत– सोते वक़्त ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे तो लोगों के दिलों में उसकी इज़्ज़त पैदा हो।

٩ الٓرٰ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؔ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؔ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

9. अलिफ़-लाम-रा-से अ फ़ ला तज़क्करून० तक

(पारा 11, रुकूअ़ 6)

ख़ासियत– जो चाहे कि लोग मेरे क़ाबू में आ जाएं तो शाबान के

महिने में अय्यामे बीज़ (13-14-15) के रोज़े रखे। आख़िरी रोज़ा सिरका व साग और जौ कि रोटी और नमक से इफ़्तार करे और मग़्रिब से इशा तक अल्लाह के ज़िक्र और दरूद शरीफ़ में मशग़ूल रहे और इशा पढ़कर भी तस्बीह व तक़्दीस में जब तक चाहे, लगा रहे। फिर ये आयतें ओस के पानी और ज़ाफ़रान से एक काग़ज़ पर लिखकर सर के नीचे रखकर सो रहे। सुबह को नमाज़ पढ़कर उस पर्चे को लेकर जिसके पास जाएगा, उसकी क़द्र व मंज़िलत करेगा और जो बात कहेगा, वह दुरुस्त होगी।

10. अल-मुह्सी (घेरने वाले)

ख़ासियत- अगर रोटी के बीस टुकड़ों पर बीस बार पढ़े तो लोग क़ाबू में आयें।

7. बाल-बच्चों का फ़रमांबरदार होना

وَاَصۡلِحۡ لِیۡ فِیۡ ذُرِّیَّتِیۡ ۚ اِنِّیۡ تُبۡتُ اِلَیۡکَ وَ اِنِّیۡ مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ ع

1. वस्लिह ली फ़ी ज़ुर्रिय्यती इन्नी तुब्तु इलै क व इन्नी मिनल मुस्लिमीन० (पारा 26, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा- और मेरी औलाद में भी मेरे लिए सलाहियत पैदा कर दीजिए। मैं आपकी जनाब में तौबा करता हूं और मैं आप का फ़रमांबदार हूं।

ख़ासियत- जिसकी औलाद नाफ़रमान हो, वह इस आयत को हर नमाज़ के बाद पढ़ा करे। इन्शाअल्लाहु तआ़ला सालेह हो जाएगी। पढ़ने के वक़्त ज़ुर्रिय्यती के लफ़्ज़ पर अपनी औलाद का ख़्याल रखे।

2. अश्शहीदु (बड़े मौजूद)

ख़ासियत- अगर ना-फ़रमान औलाद या बीवी की पेशानी पकड़कर इसको पढ़े या हज़ार बार पढ़कर दम कर दे, वे फ़रमांबरदार हो जायेंगे।

8. राज़ मालूम करने के लिए

١ يَا بَنِيٓ إِسْرَآئِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِيٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا
بِعَهْدِيٓ أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ۝ وَآمِنُوا بِمَآ أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا
تَكُونُوٓا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهٖ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ۝ وَلَا تَلْبِسُوا
الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

1. या बनी इस्राईलज़्कुरू से ....व अन्तुम तअ़्लमून० तक (पारा 1, रुकूअ़ 5)

ख़ासियत– नाबालिग़ लड़की के बदन के कपड़े पर पीर की रात में जब पांच घंटे रात गुज़र जाए, इन आयतों को लिखकर सोई हुई औरत के सीने पर रख दें तो जो कुछ उसने किया होगा सब बतला देगी, मगर यह उसी जगह जायज़ है जहां शरअ़ी तौर पर तजस्सुस (इन्क्वायरी) जायज़ हो, वरना हराम है।

٢ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيهَا وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ فَقُلْنَا
اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى وَيُرِيكُمْ آيَاتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

2. व इज़ क़तल्तुम नफ़्सन फ़द्दारअ्तुम फ़ीहा वल्लाहु मुख़्रिजुम मा कुन्तुम तक्तुमून० फ़क़ुलनज़्रिबूहु बिबअ़्ज़िहा कज़ालि क युह़्यिल्लाहुल मौता व युरीकुम आयातिही लअ़ल्लकुम तअ़्क़िलून० (पारा 1, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा– और जब तुमने एक आदमी का ख़ून कर दिया, फिर एक दूसरे पर उसको डालने लगे और अल्लाह तआ़ला को इस अम्र को जाहिर

करना मंज़ूर था, जिसको तुम छिपाना चाहते थे। इसलिए हमने हुक्म दिया कि इसको उसके किसी टुकड़े से छुवा दो। इसी तरह हक़ तआ़ला (क़ियामत में) मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगे और अल्लाह तआ़ला अपनी (क़ुदरत की) नज़ीरें तुमको दिखलाते हैं, इस उम्मीद पर कि तुम अ़क्ल से काम करो।

ख़ासियत– सोते आदमी से राज़ मालूम करने के लिए, मगर जिस जगह मालूम करना शरअ़न जायज़ हो।

9. जुदाई से बचने के लिए

1. अल-मुह्यी (ज़िंदा करने वाले)

ख़ासियत– जिसको किसी से जुदाई का डर या क़ैद का ख़तरा हो, इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े।

10. सरकश ग़ुलाम के लिए

1. إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۚ مَا مِن دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

1. इन्नी तवक्कल्तु अ़लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम मा मिन दाब्बतिन इल्ला हु व आख़िज़ुम बिनासि यतिहा इन् न रब्बी अ़ला सिरातिम मुस्तक़ीम०

(पारा 12, रुकूअ़ 5)

तर्जुमा– मैंने अल्लाह पर तवक्कुल कर लिया है, जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है, जितने धरती पर चलने वाले हैं, सब की चोटी उसने पकड़ रखी है। यक़ीनन मेरा रब सीधे रास्ते पर (चलने से मिलता) है।

ख़ासियत– अगर कोई लौंडी या ग़ुलाम सरकश हो तो बाल पेशानी

के पकड़कर तीन बार इसको पढ़े और उस पर दम करे, इन्शाअल्लाह तआ़ला फ़रमांबरदार और क़ाबू में हो जाएगा।

11. ख़ाना वीरानी के लिए

ع۱ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ط حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

1. फ़ लम्मा नसू मा से ....वल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन० तक (पारा 7 रुकूअ़ 11)

तर्जुमा– फिर जब वे लोग इन चीज़ों को भूलें रहे, जिनकी उनको नसीहत की जाती थी, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उनको मिली थीं वे ख़ूब इतरा गए, हमने उनको यकायकी पकड़ लिया, फिर तो बिल्कुल हैरतज़दा रह गये, फिर ज़ालिम (काफ़िर) लोगों की जड़ (तक) कट गई और अल्लाह का शुक्र है, जो तमाम आ़लम का परवरदिगार है।

जादू, जिन्न, आसेब और तक्लीफ़ देने वाले जानवरों से हिफ़ाज़त

1. जिन्न व इन्स से हिफ़ाज़त

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ يَعْلَمُ مَا
بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ ۚ
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــُٔـــوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ○

1. अल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व से व हुवल अलिय्युल अज़ीम० तक।

(पारा 3, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा– अल्लाह तआ़ला (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, ज़िंदा है, संभालने वाला है, न उसको ऊंघ दबा सकती है, न नींद। उसी के मम्लूक हैं सब, जो कुछ आसमानों में है जो कुछ ज़मीन में है। ऐसा कौन शख़्स है, जो उसके पास (किसी की) सिफ़ारिश कर सके, उसकी इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व ग़ायब हालात को और वे मौजूदात उसकी मालूमात में से किसी चीज़ को अपने इहाता-ए-इल्मी में नहीं ला सकते, मगर जिस क़दर (इल्म देना वही) चाहे, उसकी कुर्सी ने सब असमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा है और अल्लाह तआ़ला को उन दोनों की हिफ़ाज़त कुछ बोझ नहीं गुज़रती और वह आलीशान है।

ख़ासियत– आयतल कुर्सी को जो शख़्स हर नमाज़ के बाद एक बार पढ़ ले, इन्शाअल्लाह तआला उसके पास शैतान न आएगा, क्योंकि उसने इक़रार किया है कि जो शख़्स आयतल कुर्सी पढ़ता है, मैं उसके पास नहीं जाता।

2. सूरतुल मुअव्वज़तैन (पारा 30)

ख़ासियत– हर क़िस्म के दर्द, बीमारी व जादू व नज़र वग़ैरह के लिए पढ़ना और दम करना और लिख कर बांधना फ़ायदेमंद है और सोते वक़्त पढ़ने से हर क़िस्म की आफ़त से बचा रहे और अगर इसको लिख कर बच्चों के बांध दे तो उम्मुस्सिबयान वग़ैरह से हिफ़ाज़त रहे और अगर हाकिम के सामने जाने के वक़्त पढ़े ले, तो उसकी बुराई से बचा रहे।

3. सूरः इख़्लास (पारा 30)

ख़ासियत– अगर ख़रगोश की झिल्ली पर लिख कर अपने पास रख ले तो इंसान और जिन्न और तक्लीफ़ पहुंचाने वाला जानवर उसके पास न आए।

4. एक बुज़ुर्ग से नक़्ल किया गया है कि जंगल में एक बकरी देखी, जिससे भेड़िया खेल रहा था। यह पास गये तो भेड़िया भाग गया। देखते क्या हैं कि इस बकरी के गले में कोई तावीज़ है, खोल कर देखा तो उस में ये आयतें निकलीं–

وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا ۖ وَهُوَ
أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ
الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝ إِنَّهُ
هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝ فَعَّالٌ لِّمَا

يُرِيۡدُ ۝ هَلۡ اَتٰىكَ حَدِيۡثُ الۡجُنُوۡدِ ۝ فِرۡعَوۡنَ وَثَمُوۡدَ ۝ بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ تَكۡذِيۡبٍ ۝ وَّاللّٰهُ مِنۡ وَّرَآئِهِمۡ مُّحِيۡطٌ ۝ بَلۡ هُوَ قُرۡاٰنٌ مَّجِيۡدٌ ۝ فِىۡ لَوۡحٍ مَّحۡفُوۡظٍ ۝

व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ु हुमा व हु व ल अलिय्युल अज़ीम० फ़ल्लाहु ख़ैरुन हाफ़िज़ंव व हु व अर्हमुर्राहिमीन व हिफ़्ज़म मिन कुल्लि शैतानिम मारिद० व हफ़िज़्नाहा मिन कुल्लि शैतानिर्रजीम० व हिफ़्ज़न ज़ालिक तक़्दीरुल अज़ीज़िल अ़लीम० इन कुल्लु नफ़्सिल्लम्मा अ़लैहा हाफ़िज़० इन् न बत़्श रब्बि क ल शदीद० इन्नहू हु व युब्दिउ व युअ़ीद० व हुवल ग़फ़ूरुल वदूदु ज़ुल अ़र्शि ल मजीद० फ़अ़्आ़लुल् लिमा युरीद हल अता क हदीसुल जुनूदि फ़िरऔ न व समूद बलिल्लज़ी न क फ़ रू फ़ी तक्ज़ीबिंव वल्लाहु मिंव व राइहिम मुहीत० बल हु व क़ुरआनुम मजीदुन फ़ी लौहिम महफ़ूज़०

जो शख़्स इनको लिख कर अपने पास रखे, उसको कोई तक्लीफ़ न पहुंचे।

5. अल: क़ह्हारु (बड़े ग़ालिब)

ख़ासियत– ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से दुनिया की मुहब्बत और अल्लाह के अलावा की बड़ाई दिल से जाती रहे और दुश्मनों पर ग़लबा हो और अगर चीनी के बर्तन पर लिख कर ऐसे आदमी को पिलाया जाए, जो जादू की वजह से औरत पर क़ुदरत न रख पाता हो, जादू दूर हो।

2. जादू दूर करने के लिए

1 فَلَمَّاۤ اَلۡقَوۡا قَالَ مُوۡسٰى مَا جِئۡتُمۡ بِهِ ۙ السِّحۡرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبۡطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصۡلِحُ عَمَلَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الۡحَـقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوۡ كَرِهَ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ۝

1. फ़ लम्मा अल्क़ौ का ल मूसा मा जिअ्तुम बिहिस्सिह्रु इन्नल्ला ह स युब्तिलु हू इन्नल्ला ह ला युस्लिहु अ़म लल् मुफ़्सिदीन० व युहिक़्क़ुल्लाहु ल हक़् क बिकलिमाति ही व लौ करिहल मुज्रिमून० (पारा 11, रुकूअ़ 13)

तर्जुमा- सो जब उन्होंने (अपना जादू का सामान) डाला तो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम (बना कर) लाये हो, जादू है। यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला इस (जादू) को दरहम-बरहम किए देता है (क्यों कि) अल्लाह तआ़ला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता और अल्लाह तआ़ला सही दलील (यानी मोजज़े) को अपने वायदों के मुवाफ़िक़ साबित कर देता है, गो मुज्रिम (और काफ़िर) लोग कैसा ही ना-गवार समझें।

ख़ासियत- जादू के लिए बहुत आज़माया हुआ है। जिस पर किसी ने जादू किया हो, इन आयतों को लिख कर उसके गले में डालें या तश्तरी पर लिख कर पिलाएं, इन्शाअल्लाहु तआ़ला तन्दुरुस्त हो जाएगा।

٢ يَا بَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

2. या बनी आदम ख़ुज़ू ज़ीनत कुम से ....मा ला तअ़्लमून० तक। (पारा 8, रुकूअ़ 11)

तर्जुमा- ऐ आदम की औलाद ! तुम मस्जिद में हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो और ख़ूब खाओ और पियो और हद से मत निकलो। बेशक अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं करते, हद से निकल जाने वालों

को। आप फ़रमाइए कि अल्लाह तआ़ला के पैदा किये हुए कपड़ों को, जिनको उसने अपने बन्दों के वास्ते बनाया है और खाने-पीने की हलाल चीज़ों को किस शख़्स ने हराम किया है। आप यह कह दीजिए कि ये चीज़ें इस तौर पर कि क़ियामत के दिन भी ख़ालिस रहें, दुनिया की ज़िंदगी में ख़ालिस ईमान वालों ही के लिए हैं, हम इसी तरह तमाम आयतों को समझदारों के वास्ते साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं। आप फ़रमाइये कि अल-बत्ता मेरे रब ने हराम किया है तमाम गन्दी बातों को, उनमें जो एलानिया हैं, वे भी और उनमें जो छिपी हैं, वे भी और हर गुनाह की बात को और ना-हक़ किसी पर ज़ुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक ठहराओ, जिस की अल्लाह ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमायी और इस बात को कि तुम लोग अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो, जिस की तुम सनद न रखो।

ख़ासियत- यह आयत ज़हर व बुरी नज़र व जादू को दूर करने के लिए फ़ायदेमंद है। जो शख़्स इसको हरे अंगूर के अ़र्क़ और ज़ाफ़रान से लिख कर आंवले के पानी से धोकर गुस्ल करे, बुरी नज़र और जादू उस से दूर हो और जो खाने में मिला कर खाये तो ज़हर से बचा रहे और जादू और बुरी नज़र से भी।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ○ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ

3. फ़लम्मा जाअस्स ह् र तु क़ा ल लहुम मूसा अल्क़ू मा अन्तुम मुल्क़ून○ फ़लम्मा अल्क़ौ क़ा ल मूसा मा जिअ्तुम बिहिस्सिहरु इन्नल्ला ह स युब्ति लु हू इन्नल्लाह लायुस्लिहु अ़ म लल् मुफ्सिदीन○(पारा 11, रुकूअ़ 13)

तर्जुमा- सो जब वे आये (और मूसा अ़लैहिस्सलाम से) मुक़ाबला

हुआ, मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि डालो जो कुछ तुमको (मैदान में) डालना है, सो जब उन्होंने (अपना जादू का सामान) डाला तो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम (बना कर) लाये हो, जादू है। यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला इस (जादू) को अभी दरहम-बरहम किये देता है, (क्योंकि) अल्लाह तआ़ला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता ।

ख़ासियत- सख़्त जादू के दूर करने के लिए फ़ायदेमंद है। एक घड़ा बारिश के पानी का लेकर ऐसी जगह से जहां बरसने के वक़्त किसी की नज़र न पड़ी हो और एक घड़ा ऐसे कुएं के पानी का ले, जिसमें से कोई पानी न भरता हो, जुमा के दिन ऐसे पेड़ों के सात पत्ते ले, जिसका फल न खाया जाता हो, फिर दोनों पानी मिला कर उसमें सातों पत्ते डाल दे, फिर इन आयतों को काग़ज़ पर लिख कर इस पानी से धोकर जादू के मारे को दरिया के किनारे पर ले जाकर पानी में उसको खड़ा करके रात के वक़्त पानी से उसको ग़ुस्ल दे। इन्शाअल्लाहु तआ़ला जादू ग़लत हो जाएगा।

3. जिन्न व इन्सान को क़ाबू में करना

ع وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوٓا أَتَجْعَلُ فِيهَا
مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ
قَالَ إِنِّيٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْأَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى
الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝ قَالُوا سُبْحٰنَكَ
لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

1. व इज़ क़ा ल रब्बुक लिल् मलाइकति से ....इन्न क अन्तल अ़लीमुल हकीम० तक (पारा 1, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा– और जिस वक़्त इर्शाद फ़रमाया, आपके रब ने फ़रिश्तों से कि ज़रूर मैं बनाऊंगा, ज़मीन में एक नायब, फ़रिश्ते कहने लगे कि आप पैदा करेंगे, ज़मीन में ऐसे लोगों को जो फ़साद करेगें और ख़ून बहाएंगे और हम बराबर तस्बीह कहते रहते हैं, अल्लाह की तारीफ़ के साथ और तक़्दीस करते रहते हैं आपकी। हक़ तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं जानता हूं इस बात को जिसे तुम नहीं जानते। और इल्म दे दिया अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को (उनको पैदा करके) सब चीज़ों के नामों का। फिर वे चीज़ें फ़रिश्तों के सामने कर दीं फिर फ़रमाया कि बताओ मुझको नाम उन चीज़ों के (यानी उनके आसार व ख़्वास के साथ) अगर तुम सच्चे हो। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि आप तो पाक हैं, हमको ही इल्म नहीं, मगर वही जो कुछ आपने इल्म दिया। बेशक आप बड़े इल्म वाले हैं, हिक्मत वाले हैं (कि जिस क़दर जिस के लिए मस्लहत जाना, उसी क़दर इल्म व समझ अता फ़रमायी।)

ख़ासियत– इल्म को सीखने और जिन्नों और दूसरे इंसानों को क़ाबू में करने के लिए मुफ़ीद है। जिस महीने की पहली तारीख़ को जुमरात हो, ग़ुस्ल करके उस दिन रोज़ा रखे। शाम को जौ की रोटी, शकर और किसी क़िस्म के साग से इफ़्तार करे और अपने वक़्त पर सो रहे। जब आधी रात हो, उठ कर वुज़ू करके क़िब्ला रुख़ बैठ कर ये आयतें 33 बार पढ़े, फिर कांच के बर्तन पर मुश्क व ज़ाफ़रान व गुलाब से इन आयतों को लिख कर ओले के पानी से धोकर पिए और सो रहे। सात दिन तक इसी तरह करे और आख़िरी दिन में ये आयतें सत्तर बार पढ़े, मगर मकान तंहाई का हो और ऊद की धूनी दे, फिर फ़ारिग़ होकर उन ही कपड़ों में सो रहे। इन्शाअल्लाहु तआला मक़्सूद हासिल होगा।

4. शैतानी वसवसा दूर करने के लिए

1. وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ۝

1. व इम्मा यन्ज़ग़न्न क मिनश्शैतानि न ज़् ग़ुन फ़स्तअिज़ बिल्लाहि इन्नहु समीअ़ुन अ़लीम० इन्नल्लज़ी न त्त क़ौ इज़ा मस्सहुम ताइफ़ुम मिनश्शैतानि तज़क्करू फ इ ज़ा हुम मुब्सिरून०

(पारा 9, रुकूअ़ 14)

तर्जुमा– और अगर आपको कोई वस्वसा शैतान की तरफ़ से आने लगे तो अल्लाह की पनाह मांग लिया कीजिए। बिला शुब्हा वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। यक़ीनन जो लोग ख़ुदा तरस हैं, जब उनको कोई ख़तरा शैतान की तरफ़ से आ जाता है, तो वह याद में लग जाते हैं, सो यकायक उनकी आंखें खुल जाती हैं।

ख़ासियत– जिसको वस्वसों और ख़तरों और बुरे ख़्यालों और दिल के कम्पन ने आजिज़ कर दिया हो, इन आयतों को गुलाब व ज़ाफ़रान से जुमा के दिन सूरज के निकलने के वक़्त सात परचों पर लिख कर हर दिन परचा निगल जाए और उस पर एक घूंट पानी का पी ले, इन्शाअल्लाहु तआ़ला दूर हो जाएगा।

फ़ायदा– हदीसों में आया है कि वस्वसे के वक़्त 'आमन्तु बिल्लाहि व रुसुलिही' कहे या अऊ़ज़ुबिल्लाह पढ़ कर बायीं तरफ़ तीन बार धुत्कारना आया है।

آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

आमन्तु बिल्लाहि व रुसुलिही वज़्ज़ाहिरु वल बातिनु व हु व बिकुल्लि

शैइन अ़लीम॰ पढ़े। इससे किसी को निजात नहीं होती, इसका ग़म न करना चाहिए, या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

'ला इला ह इल्लल्लाहु' ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े।

अबू सुलेमान दारानी ने अ़जीब तद्बीर बतलायी है कि जब वस्वसा आये, ख़ूब ख़ुश हो, शैतान को मुसलमान का ख़ुश होना सख़्त ना-गवार है, वह फिर वस्वसा न डालेगा।

5. ख़ौफ़ का दूर होना

۱ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

1. फ़ल्लाहु ख़ैरुन हाफ़िज़ा.व हु व अर्हमुर्राहिमीन॰

(पारा 13, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा– अल्लाह (के सुपूर्द वही) सबसे बड़ा निगहबान है और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।

ख़ासियत– जिसको किसी दुश्मन से डर हो या और किसी तरह की बला व मुसीबत का डर हो, वह इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला मुश्किल दूर हो जाएगी।

۲ اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝
اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
مُنْزَلِيْنَ ۝ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ
رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ
وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝

2. इज़ हम्मत ताइफ़तानि से ....इन्दिल्लाहिल अज़ीज़िल हकीम॰ तक (पारा 4, रुकूअ 4)

तर्जुमा– जब तुम में से दो जमाअतों (बनी सलमा व बनी हारिसा) ने दिल में ख़्याल किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह तआला इन दोनों जमाअतों का मददगार था और पस मुसलमानों को तो अल्लाह तआला पर भरोसा करना चाहिए और यह बात जानी-समझी है कि अल्लाह तआला ने तुमको बद्र की लड़ाई में मदद से जिताया, हालांकि तुम बे-सर व सामान थे। सो अल्लाह तआला से डरते रहा करो ताकि तुम शुक्र गुज़ार रहो, जब कि आप मुसलमानों से (यों) फ़रमा रहे थे, कि क्या तुमको यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों के साथ (जो आसमान से) उतारे जाएंगे। हां, क्यों नहीं (काफ़ी होगा) अगर मुस्तकिल रहोगे और तक़्वा वाले रहोगे और (अगर) वे तुम पर एकदम से (भी) आएंगे, तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद फ़रमाएगा। पांच हज़ार फ़रिश्तों से जो कि एक ख़ास शक्ल बनाये होंगे और अल्लाह तआला ने मदद सिर्फ़ इस लिए की कि तुम्हारे लिए (ग़लबे की) ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिलों को (बेचैनी) से चैन मिल जाए और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है जो कि ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले (भी) हैं।

ख़ासियत– ये आयतें ज़ालिम बादशाह व दुश्मन और रात के वक़्त जिन्न या इंसान के डर के लिए हैं, इनको जुमा की रात में आधी रात के वक़्त वुज़ू करके लिखे, फिर लिखने वाला सुबह की नमाज़ पढ़ के सूरज निकलने तक ज़िक्र व तस्बीह में लगा बैठा रहे। जब सूरज बुलंद हो जाए, तो दो रकअत पढ़े, पहली में फ़ातिहा और आयतल कुर्सी और दूसरी में फ़ातिहा और 'आ म नर्रसूलु' से आख़िर सूरः तक पढ़े, फिर सात बार इस्तिग़फ़ार पढ़े और सात बार 'हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अलैहि तवक्कलतु

व हु व रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम० फिर ताज़ा वुज़ू करके ये आयतें लिख कर अपने पास रख ले, इन्शाअल्लाहु तआ़ला मुराद हासिल हो।

وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۙ وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ۝

3. व इज़ा क़रअ्तल क़ुरआ न से अ़ला अदबारिहिम नुफ़ूरा० तक (पारा 15, रुकूअ़ 5)

तर्जुमा– और जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं तो हम आपके और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दर्मियान एक परदा डाल देते हैं और (वह परदा यह है कि) हम उनके दिलों पर परदा डालते हैं इससे कि वे उसको समझें और उनके कानों में डाट देते हैं, और जब आप क़ुरआन में सिर्फ़ अपने रब का ज़िक्र करते हैं तो वे लोग नफ़रत करते हुए पीठ फेर कर चल देते हैं।

ख़ासियत– किसी डरे हुए पर, जो गन्दे ख़्यालों में गिरफ़्तार हो, पढ़ कर दम कर दे, तो उसका डर ख़त्म हो जाए।

4. दीगर– कोई भूत पलीद किसी के सर हो गया हो तो नीले पश्मीने पर या कागज़ पर लिख कर उसके बाज़ू पर बांध दिया जाए, तो वह दूर हो जाए।

6. तक्लीफ़ देने वाले जानवर से बचने का अ़मल

1. यह आयत पढ़ कर जिस आदमी या जानवर से डर हो, उस की तरफ़ दम करे–

اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ

अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम लना अञ्मालुना व लकुम अञ्मालुकुम ला हुज्ज त बै नना व बै न कुम. अल्लाहु यज्मअु बै न ना०
उसकी तक्लीफ़ से बचा रहे।

दीगर-

حٰمٓ ۚ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوحِيٓ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ
اللّٰهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

हा-मीम० ऐन-सीन-क़ाफ़० क ज़ालि क यूही इलै क व इलल्लज़ी न मिन क़ब्लिक. अल्लाहुल अ़ज़ीज़ुल हकीम०

बड़ी मुसीब़तों के वक़्त पढ़ना मुफ़ीद है।

2. काब अह्बार से नक़ल किया गया है कि सात आयतें जब पढ़ लेता हूं, फिर किसी बात का डर नहीं रहता।

पहली आयत

قُلْ لَنْ يُصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝

क़ुल लंय्युसी ब ना इल्ला मा क त बल्लाहु लना हु व मौलाना व अ़लल्लाहि फ़ल् य त वक्कलिल् मुअ्मिनून०

दूसरी आयत

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ
فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهِۦ ۚ يُصِيبُ بِهِۦ مَنْ يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन फ़ला काशिफ़ लहू इल्ला हु व व इंय्युरिद् क बिख़ैरिन फ़ला राद् द लिफ़ज़्लिही युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन अ़िबादिही व हु वल ग़फ़ूरुर्रहीम०

तीसरी आयत

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِي كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

व मा मिन दाब्बतिन फ़िल् अर्ज़ि इल्ला अ़लल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ़्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौ द अ़हा कुल्लुन फ़ी किताबिम मुबीन०

चौथी आयत

إِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ؕ إِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

इन्नी तवक्कल्तु अ़लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम मा मिन दाब्बतिन इल्ला हु व आख़िज़ुम बिनासियति हा इन् न रब्बी अ़ला सिरातिम मुस्तक़ीम०

पांचवी आयत

وَكَأَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

व क अय्यिम मिन दाब्बतिल ला तह्मिलु रिज़्क़हा अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व इय्या कुम व हुवस्समीअ़ुल अ़लीम०

छठी आयत

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रह्मतिन फ़ ला मुम्सि क लहा व मा युम्सिक फ़ ला मुर्सि ल लहू मिम बअ्दिही व हुवल अ़ज़ीज़ुल हकीम॰

सातवीं आयत

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ
قُلْ اَفَرَأَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ
هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ
قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝

व लइन सअल्त हुम मन ख़ ल क़स्समावाति वल् अर्ज़ ल यक़ू लुन्नल्ला हु क़ुल अ फ़ रऐतुम मा तद्अू न मिन दूनिल्लाहि इन अरा द नियल्लाहु बि ज़ुर्रिन हल हुन्न काशिफ़ातु ज़ुर्रि ही अव अरा द नी बिरह्मतिन हल हुन्न मुम्सिकातु रह्मतिही क़ुल हस्बियल्लाहु अ़लैहि य तवक्कलुल् मुत-वक्किलून॰

3. **डर दूर करने के लिए-** इब्नुल कल्बी रह॰ से नक़ल किया गया है कि किसी शख़्स को क़त्ल की धमकी दी, उसको डर हुआ, उसने किसी आ़लिम से ज़िक्र किया। उन्होंने फ़रमाया कि घर से निकलने से पहले सूरः यासीन पढ़ लिया करो, फिर घर से निकला करो। वह शख़्स ऐसा ही करता था और जब अपने दुश्मन के सामने आता था, उसको हरगिज़ नज़र न आता था।

7. आसेब वग़ैरह से हिफ़ाज़त

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ○ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ○ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ

1. अ फ़ हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़्ना कुम अ़ ब संव्वअन्नकुम इलैना ला तुर्ज अून० फ़ त आ़लल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ु ला इला ह इल्ला हु व रब्बुल अ़र्शिल करीम॰ व मंय्यद्अ़ु मअ़ल्लाहि इलाहन आ ख़ र ला बुर्हा न लहू बिही फ़ इन्नमा हिसाबुहू अ़िन्द रब्बि ही० -पारा 18, रुकूअ़ 6

तर्जुमा– हां तो क्या तुमने यह ख़्याल किया था कि हमने तुमको यों ही मुहमल (हिक्मत से ख़ाली) पैदा कर दिया है और यह (ख़्याल किया था) कि हमारे पास नहीं लाये जाओगे, सो (इस से पूरी तरह साबित हो गया कि) अल्लाह तआ़ला बहुत ही आलीशान है, जो कि बादशाहे हक़ीक़ी है, उसके सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं (और) वह अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है और जो शख़्स (इस बात पर दलील क़ायम होने के बाद) अल्लाह के साथ किसी और माबूद की भी इबादत करे कि (जिसके माबूद होने पर) उसके पास कोई भी दलील नहीं, सो उसका हिसाब उसी के रब के पास होगा।

ख़ासियत– जिस शख़्स पर आसेब हो, इन आयतों को तीन बार पानी पर पढ़ कर मुंह पर छींटा दे या कान में दम करे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला फ़ौरन दूर हो जाएगा।

2. पूरी सूरः जिन्न (पारा 29, रुकूअ़ 11)

ख़ासियत– जिस पर आसेब आता हो, उस पर एक बार पढ़ कर दम करे या लिख कर बाज़ू पर बांध दे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला जाता रहेगा।

3. ये 33 आयतें दरिंदे, और चोर से हिफ़ाज़त, आसेब दूर करने और जान व माल की बेहतरी के लिए और कोढ़ और दूसरे मर्ज़ों के लिए अक्सीर आज़म हैं। 'आयतुल हर्स इनका लक़ब है। वे यह हैं-

शुरू सूरः बक़रः से मुफ़्लिहून तक (पारा 1, रुकूअ़ 1)

आयतल कुर्सी-अल्लाहु ला इलाह से ख़ालिदून तक।

(पारा 3, रुकूअ़ 2)

और नीचे की आयतें- पारा 3, रुकूअ़ 8, पारा 8, रुकूअ़ 14, पारा 15, रुकूअ़ 12, पारा 23, रुकूअ़ 5, पारा 27, रुकूअ़ 12, पारा 28, रुकूअ़ 6, पारा 29, रुकूअ़ 11, पारा 1, रुकूअ़ 2

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ○ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ (پارہ ۳ رکوع ۸)

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (پ۸ ع۱۴)

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ؕ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝ (پ۱۵ ع۱۲)

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ؕ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِالْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝ (پ۲۳ ع۵)

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝ (پ۲۷ رکوع۱۲)

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ (پ۲۸ ع۶)

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ يَّهْدِیْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ (پ ۲۹ ع ۱۱)

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ۝ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۙ اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ (پارہ ۱ رکوع ۲)

ख़ासियत- जिस दुश्मन को शरीअ़त के एतबार से तक्लीफ़ पहुंचाना जायज़ हो, तो उसके बदन का एक कपड़ा लेकर उस पर उसकी मां का नाम सात बार लिखा जाए और उसके चारों तरफ़ एक दायरा खींच दिया जाए और उस पर ये आयतें लिख दी जाएं और उस पर एक दायरा खींच दिया जाए इस तरह तीन दायरे बनाएं जाएं, फिर उस कपड़े को लपेट कर मिट्टी के किसी कोरे बर्तन में रख कर हफ़्ते के दिन उसके घर में ऐसी जगह दफ़्न कर दिया जाए कि उस जगह किसी का पांव न आए।

8. आसेब व जिन्न भगाने के आमाल

1. पाक पानी पर फ़ातिहा और आयतल कुर्सी और सूरः जिन्न के शुरू की पांच आयतें पढ़ कर आसेब के मारे हुए के चेहरे पर छिड़कें और जिस मकान में शुब्हा हो, उसमें छिड़क दें, इन्शाअल्लाहु तआ़ला आसेब दूर हो।

2. पाक बर्तन पर फ़ातिहा और आयत- ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ

بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ط يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ط قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ط يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ط يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ط قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ج وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ○ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ز سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ط ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ج كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ط وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ○

सुम् म अन्ज़ ल अलै कुम से ...मिन्हुम मग़्फ़ि रतंव्व अज्रन अज़ीमा० तक लिख कर रोग़न कुन्जद से धोकर आसेब के शिकार के बदन पर इस रोग़न की मालिश की जाए। इन्शाअल्लाहु तआ़ला असर न हो।

3. इमाम ग़ ज़ाली ने एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा नक़ल किया है किसी बुज़ुर्ग की एक लौंडी रात को पेशाब करने बैठी और आसेब के असर से बेहोश हो गयी। उन बुज़ुर्ग ने उठकर ये कलिमात पढ़े, उसी वक़्त अच्छी हो गई- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط الٓمّٓصٓ . طٰهٰ . طٰسٓمّٓ . كٓهٰيٰعٓصٓ . يٰسٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ . حٰمٓ عٓسٓقٓ . قٓ . نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ○

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम० अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद० त्वा-हा० त्वा-सीम-मीम० काफ़ हा-या-ऐन-स्वाद० या-सीन० वल् क़ुरआनिल हकीमि०

हा-मीम॰ ऐनसीन॰-काफ़॰ काफ़॰ नून॰ वल क़ लमि व मा यस्तुरून॰

4. फ़क़ीह कबीर अहमद बिन मूसा बिन अबी उजैल आसेब के शिकार पर यह आयत पढ़ा करते थे-

قُلْ آللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝

क़ुल आल्लाहु अज़ि न लकुम अम अ़लल्लाहि तफ़्तरून॰

दीगर– कुछ बुज़ुर्गों से नक़ल है कि एक लड़की खेलते-खेलते गिर गयी। उन्होंने ख़्वाब में देखा कि एक फ़रिश्ता बहुत अच्छी सूरत में आया। उसके दस बाज़ू हैं और कहा कि अल्लाह की किताब में इसकी शिफ़ा है। मैंने पूछा, क्या है, कहा कि ये आयतें उस पर पढ़ दो-

قُلْ آللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ۝

क़ुल आल्लाहु अज़ि न लकुम अम अ़लल्लाहि तफ़्तरून॰ युर्सलु अ़लैकुमा शुवाज़ुम मिन नारिंव वनुहासुन फ़ला तन्तसिरान॰ या मअ़शरल जिन्नि वल इन्सि इनिस्ततअ़तुम अन् तन्फ़ुज़ू मिन अक़्ता-रिस्समावाति वल अर्ज़ि फ़न्फ़ुज़ू ला तनफ़ुज़ू न इल्ला बिसुल्तान॰ क़ालख़्स ऊ फ़ी हा वला तुकल्लिमून॰

कहते हैं कि जाग कर मैंने यह अ़मल किया, बिल्कुल उसका असर न रहा।

5. **जिन्न भगाने के लिए–** इब्ने क़ुतैबा रज़ि॰ से नक़ल किया गया है कि किसी शख़्स ने उनसे बयान किया कि मैं बसरा ख़ुरमा की तिजारत करने गया। किराए पर कोई घर न मिला, सिर्फ़ एक घर मिला, जिस पर

मकड़ी ने जाले लगा रखे थे। मैंने इसकी वजह पूछी । लोगों ने कहा कि इसमें जिन्न रहता है। मैंने मालिक से किराए पर मांगा। उसने कहा कि क्यों अपनी जान खोते हो, इसमें बड़ा भारी जिन्न है। जो शख़्स इसमें रहता है, उसको मार डालता है। मैंने कहा, मुझको किराए पर दे दो, अल्लाह तआ़ला मददगार है। उसने दे दिया। मैं उसमें ठहर गया। जब रात हुई। मेरी तरफ़ एक शख़्स काले रंग का आया, जिसकी आंखे अंगारों की तरह चमक रहीं थीं। मैंने आयतल कुर्सी पढ़ना शुरू की, वह भी बराबर पढ़ता रहा, जब मैं-

व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल अ़लिय्युल अ़ज़ीम० पर पहुंचा, वह न कह सका। मैंने उसी को कहना शुरू किया, बस वह अंधेरा जाता रहा और रात भर आराम से रहा। जब सुबह हुई, उस जगह निशान जलने का और कुछ राख देखी और एक कहने वाले की आवाज़ सुनी कि तूने बड़े भारी जिन्न को जलाया। मैंने पूछा, किस चीज़ से जल गया, जवाब दिया कि इस कलिमे से- وَلَا يَئُودُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ○

व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल अ़लिय्युल अ़ज़ीम०

6. **दीगर–** इब्ने क़ुतैबा रज़ि० से नक़ल किया गया है कि एक मिस्री ने मुझ से बयान किया कि मैं किसी अरब के पास उतरा। उसने मेरी ख़ातिर की। जब वह बिस्तर पर लेटा, यकायकी चीख़ कर खड़ा हो गया और बेहोश होकर गिर गया। मालूम हुआ कि जब सोने को पड़ता है, यही हाल होता है। मैंने ये आयतें पढ़ीं-

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ

وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرَاتٍ بِاَمْرِهٖ ط اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ط تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○

इन्नरब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़ ल क़स्समावाति वल् अर्ज़ फ़ी सि त्तति अय्या मिन सुम्मस्तवा अ़ल ल् अ़र्शि युग़्शिल्लैलन्नहार यत्लुबुहू हसीसंव्वश्शम्स वल् क़ म र व न्नुजू म मुसख़्ख़रातिम बिअ म्रिही अ ला लहुल ख़ल्क़ु वल अम्रु त बा र कल्लाहु रब्बुल आ़ल मीन०

फिर कभी उस पर असर न हुआ।

7. **घर से जिन्न भगाने के लिए-** اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۙ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ○ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ○

इन्नहुम यकीदू न कैदंव व अकीदु कैदा० फ़ महहिलिल् काफ़िरी न अम्हिल हुम रुवैदा०

चार लोहे की कीलें ले, हर कील पर पच्चीस-पच्चीस बार पढ़ कर उनको घर के चारों कोनों में दफ़्न कर दे।

8. इमाम औज़ाई से नक़ल किया गया है कि एक भूत मेरे सामने आ गया, मैं डरा और

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० पढ़ा। वह बोला कि तूने बड़े की पनाह मांगी, यह कह कर वह हट गया।

9. बुरी नज़र

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ○ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ○

1. व इंय्य का दुल्लज़ी न क फ़रू ल युज़्लिक़ू न क बिअब्सा र-हिम लम्मा समिअुज़्ज़िक् र व यक़ूलून इन्नहू ल मज्नून. व मा हु व इल्ला ज़ि

क् रुल लिल् आल मीन॰ -पारा 29, रुकूअ़ 4

तर्जुमा– और ये काफ़िर जब क़ुरआन सुनते हैं तो (अ़दावत की ज़्यादती से) ऐसे मालूम होते हैं गोया आपको अपनी निगाहों से फिसला कर गिरा देंगे (यह एक मुहावरा है) और (इसी अ़दावत से आपके बारे में) कहते हैं कि यह मजनूं है, हालांकि यह क़ुरआन (जिसके साथ तकल्लुम फ़रमाते हैं) तमाम दुनिया के वास्ते नसीहत है।

ख़ासियत– हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि बुरी नज़र के लिए फ़ायदेमन्द है-

۲ يَا بَنِيٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا
وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ
لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً
يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ
مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ
مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

2. या बनी आ द म ख़ुज़ू ज़ी न त कुम से ....मा ला तअ़्ल मून॰ तक। (पारा 8, रुकूअ़ 11)

तर्जुमा– ऐ आदम की औलाद ! तुम मस्जिद की हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो और ख़ूब खाओ और पियो और हद से मत निकलो, बेशक अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं करते हद से निकल जाने वालों को। आप फ़रमाइए कि अल्लाह तआ़ला के पैदा किए हुए कपड़ों को, जिनको उसने अपने बन्दों के वास्ते बनाया है और खाने-पीने की हलाल चीज़ों को किस शख़्स ने हराम किया है। आप यह कह दीजिए कि ये चीज़ें इस तौर

पर कि क़ियामत के दिन भी ख़ालिस रहें, दुनिया की ज़िंदगी में ख़ास ईमान वालों ही के लिए हैं। हम इसी तरह तमाम आयतों को समझदारों के वास्ते साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं। आप फ़रमाइए की अलबत्ता मेरे रब ने हराम किया है तमाम फ़ह्श बातों को, उनमें जो एलानिया हैं वे भी और उसमें जो छिपी हैं, वे भी और हर गुनाह की बात को और ना-हक़ किसी पर ज़ुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक ठहराओ, जिस की अल्लाह ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमायी और इस बात को कि तुम लोग अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो, जिसकी तुम सनद न रखो।

ख़ासियत- यह आयत ज़हर व बुरी नज़र व जादू के दूर करने के लिए फ़ायदेमंद है, जो शख़्स इसको हरे अंगूर के अ़र्क़ और ज़ाफ़रान से लिख कर ओले के पानी से धोकर ग़ुस्ल करे, बुरी नज़र और जादू इससे दूर हो और जो खाने में मिला कर खाए तो ज़हर से अम्न में रहे और जादू और बुरी नज़र से भी।

3. सूरः हु म ज़ः (पारा 30)

ख़ासियत- जिसको बुरी नज़र लग गयी हो, उस पर दम किया जाए। इन्शाअल्लाह आराम होगा।

10. अम्न व अमान के लिए

1. अबू जाफ़र नुह्हास ने हदीस नक़ल की है कि आयतल कुर्सी और सूरः आराफ़ की तीन आयतें-

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرَاتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

इन्न रब्ब कुमुल्लाहु से ....करीबुम मिनल् मुह्सिनीन० तक।

(पारा 8, रुकूअ 14)

और وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۟الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न से ......शिहाबुन साक़िब० तक।

(पारा 23, रुकूअ 5)

और सूरः रहमान की आयतें-

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝

स नफ़रुगु लकुम से.......फ़ला तन्तसिरान० तक

(पारा 27, रुकूअ 12)

ख़वास्स- ये सब आयतें अगर कोई शख़्स दिन में पढ़े तो तमाम दिन और अगर रात को पढ़े तो तमाम रात सरकश शैतान और नुक़्सान पहुंचाने वाले जादूगर और ज़ालिम हाकिम और तमाम चोरों और दरिंदों से महफ़ूज़ रहेगा।

2. सूरः तबारक (पारा 29)

ख़वास्स– अगर चांद देखने के वक़्त पढ़ ले तो तमाम महीना ख़ैरियत से गुज़रे और मुसीबतों से बचा रहे।

11. दुश्मनों से बचाव और उनकी तबाही

وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ؕ ع

1. व अल्क़ैना बै नहुमुल् अ़दाव त वल् बग़्ज़ा अ इला यौ मिल क़ियामति०
(पारा 6, रुकूअ़ 13)

तर्जुमा– और हमने उनमें आपस में क़्यामत तक अ़दावत और दुश्मनी डाल दी।

ख़ासियत– अगर दो आदमियों में फ़र्क़ व अ़दावत डालना चाहे तो इस आयत को भोज-पत्र पर लिख कर उसके नीचे यह नक़्श लिखे-

और इस नक़्श के नीचे यह लिखे कि दर्मियान फ़्लां-फ़्लां के फ़र्क़ हो जाए। फ़्लां-फ़्लां की जगह दोनों का नाम लिखे और तावीज़ बना कर पुरानी क़ब्रों के दर्मियान दफ़्न कर दे, मगर ना-हक़ के लिए न करे, वरना गुनाहगार होगा।

12. ख़ौफ़ व डर दूर करने के लिए

فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ○ ع

1. फ़ल्लाहु ख़ैरुन हाफ़िज़व्वहु व अर्हमुर्राहिमीन०
(पारा 13, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा– अल्लाह (के सुपुर्द, वही) सबसे बढ़ कर निगहबान है और

वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।

ख़ासियत– जिसको किसी दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और किसी तरह की बला व मुसीबत का डर हो, वह ज़्यादा से ज़्यादा इसको पढ़ा करे। इन्शाअल्लाहु तआ़ला मुश्किल दूर हो जाएगी।

13. बहस में ग़ालिब आना

يَآأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُم بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ○ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ○

1. या अय्युहन्नासु क़द जा अ कुम बुर्हानुम मिर्रब्बिकुम व अन्ज़ल्ना इलैकुम नूरम मुबीना० फ़ अम्मल्लज़ी न आ म नू बिल्लाहि वअ्त स मू बिही फ़ स युदख़िलुहुम फ़ी रह्मतिम मिन्हु व फ़ज़्लिंव व यह्दीहिम इलैहि सिरातम मुस्तक़ीमा० (पारा 6, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा– ऐ (तमाम) लोगो ! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक (काफ़ी) दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारे पास एक साफ़ नूर भेजा है, सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने अल्लाह (के दीन) को मज़बूत पकड़ा, सो ऐसों को अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में (यानी जन्नत में) दाख़िल करेंगे और अपने फ़ज़्ल में और अपने तक (पहुंचने का) उन को सीधा रास्ता बतलाएंगे।

ख़ासियत– दुश्मन पर बहस में ग़ालिब आने के लिए इतवार के दिन रोज़ा रखे और एक चमड़े के टुकड़े पर लिख कर बांध ले।

14. जान की हिफ़ाज़त

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝

इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्नज़्ज़िक्र व इन्ना लहू ल हाफ़िज़ून० (पारा 14, रुकूअ़ 1)

तर्जुमा- हमने क़ुरआन को नाज़िल किया है और हम उस की हिफ़ाज़त करने वाले और निगहबान हैं।

ख़ासियत- चांदी के मुलम्मा के पत्तर पर इसको लिख कर जुमा की रात को यह आयत चालीस बार उस पर पढ़े, फिर उसको अंगूठी के नग के नीचे रख कर वह अंगूठी पहन ले, उसका माल व जान और सब हालात हिफ़ाज़त से रहें।

15. दुश्मन से मुक़ाबला

1. आयाते हिर्ज़े चहल क़ाफ़-

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ
بَعْدِ مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ
هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا
نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ
عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ (پ۲ ع۱۶)

अलम् त र से ....अ़लीमुम बिज़्ज़ालिमीन० तक (पारा 2, रुकूअ़ 16)

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۘ سَنَكْتُبُ
مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝ (پ۴ ع۱۰)

लक़द् समिअ़ल्लाहु से......अ़ज़ाबल हरीक़ तक (पारा 4, रुकूअ़ 10)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ
وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ
الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَىٰ وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝ (پ۵ ع۸)

अलम् त र से......तुज़्लमून फ़तीला० तक (पारा 5, रुकूअ़ 8)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝

वत्लु अ़लैहिम से....मिनल् मुत्तक़ीन० तक (पारा 6, रुकूअ़ 9)

ख़ासियत– इनकी ख़ासियत रुत्बा, दर्जा और ग़ल्बा, दुश्मनों के मुक़ाबले में है। अगर परचम पर लिख लिया जाए, तो मुक़ाबले में कभी हार न हो और दुश्मनों पर जीत व कामियाबी हो और काग़ज़ में लिख कर, सर में रख कर सरदारों और हाकिमों के पास जाए तो उसकी इ़ज़्ज़त उसकी आंखों में पैदा हो जाए।

لَنْ يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى وَإِنْ يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا
يُنْصَرُونَ ۝ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوا إِلَّا بِحَبْلٍ مِنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِنَ
النَّاسِ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا
يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا
يَعْتَدُونَ ۝

2. लंय्यज़ुर्रूकुम से .....कानू यअ़्तदून० तक (पारा 4, रुकूअ़ 3)

तर्जुमा– वे तुमको हरगिज़ कोई नुक़्सान न पहुंचा सकेंगे, मगर ज़रा थोड़ी सी तक्लीफ़ और अगर वे तुम से लड़ें, तो तुमको पीठ दिखा कर भाग जाऐंगे, फिर किसी की तरफ़ से उनकी हिमायत भी न की जाएगी। जमा दी गयी है उन पर बे-क़द्री, जहां कहीं भी पाये जाएगें, मगर हां, एक तो ऐसे ज़रिए की वजह से, जो अल्लाह की तरफ़ से है और एक ऐसे ज़रिए से जो आदमियों की तरफ़ से है और मुस्तहिक़ हो गये (ये लोग) अल्लाह के ग़ज़ब के और जमा दी गयी उन पर पस्ती। यह (ज़िल्लत व ग़ज़ब) इस वजह से हुआ कि वे लोग इंकारी हो जाते थे अल्लाह के हुक्मों के और

क़त्ल कर दिया करते थे पैग़म्बरों को ना-हक़ और यह इस वजह से हुआ कि इन लोगों ने इताअ़त न कि और (इताअ़त) के दायरे से निकल जाते थे।

ख़ासियत– ये आयतें दुश्मन पर जीत हासिल करने के लिए हैं, किसी हथियार पर इतवार के दिन छठी साअ़त में इसको खोदे और खोदने वाला रोज़े से हो, वह हथियार लेकर जो शख़्स दुश्मन के मुक़ाबले में जाए, जीते।

३ إِذْ هَمَّتْ طَّائِفَتَانِ مِنكُمْ أَن تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ○ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ○ إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَن يَكْفِيَكُمْ أَن يُمِدَّكُمْ رَبُّكُم بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنزَلِينَ ○ بَلَىٰ إِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ○ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ○ (پ٤ ع٤)

3. इज़ हम्मत ताइफ़तानि मिन्कुम से........अ़िन्दिल्लाहिल अ़ज़ीज़िल हकीम० तक (पारा 4, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा– जब तुम में से दो जमाअ़तों (बनी सलमा व बनी हारिसा) ने दिल में ख़्याल किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह तआ़ला इन दोनों जमाअ़तों का मददगार था और पस मुसलमानों को तो अल्लाह तआ़ला पर एतिमाद करना चाहिए और यह बात यक़ीनी है कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी (बद्र की लड़ाई में) मदद फ़रमायी, हालांकि तुम बे सर व सामान थे, सो अल्लाह तआ़ला से डरते रहा करो ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो। (यह मदद) इस वक़्त हुई जब कि आप मुसलमानों से यों फ़रमा रहे थे कि क्या तुमको

यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे, तीन हज़ार फ़रिश्तों के साथ, (जो आसमान से) उतारे जाएंगे। हां, क्यों नहीं (काफ़ी होगा।) अगर मुस्तकिल रहोगे और मुत्तक़ी रहोगे और (अगर) वे तुम पर एकदम से भी आएंगे तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद फ़रमाएगा पांच हज़ार फ़रिश्तों से जो कि एक ख़ास ढंग बनाये होंगे और अल्लाह तआला ने यह मदद सिर्फ़ इस लिए की कि तुम्हारे लिए (ग़लबे की) ख़ुशख़बरी है और ताकि तुम्हारे दिलों को (बिचैनी से) चैन हो जाए और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है जो कि ज़बरदस्त हैं, हकीम भी हैं।

ख़ासियत– ये आयतें ज़ालिम बादशाह व दुश्मन और रात के वक़्त जिन्न या इंसान के डर के लिए हैं, इसको जुमा की रात में, आधी रात के वक़्त वुज़ू करके लिखे, फिर लिखने वाला सुबह की नमाज़ पढ़ कर सूरज निकलने तक तस्बीह व ज़िक्र में लगा बैठा रहे। जब सूरज ऊपर चढ़ जाए, तो दो रकअ़त पढ़े, पहली में सूरः फ़ातिहा और आयतल कुर्सी और दूसरी में फ़ातिहा और 'आ म नर्र सूलु' से आख़िर सूरः तक पढ़े, फिर सात बार इस्तिग़्फ़ार पढ़े और सात बार–

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۝

हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि तवक्कल्तु व हु व रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम॰

पढ़े, फिर ताज़ा वुज़ू करके ये आयतें लिख कर अपने पास रख ले, इन्शाअल्लाहु तआला मुराद हासिल हो।

٤ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى

مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِىْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝

4. अल्लज़ी न युन्फ़िक़ू न से ....व निअ़् म अज्रुल आ़मिलीन० तक (पारा 4, रुकूअ़ 5)

तर्जुमा- जो लोग कि ख़र्च करते हैं फ़राख़ी में और तंगी में (भी) और ग़ुस्से के ज़ब्त करने वाले और लोगों (की ख़ताओं) से दर गुज़र करने वाले और अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक लोगों को महबूब रखता है और (कुछ) ऐसे लोग कि जब कोई ऐसा काम कर गुज़रते हैं, जिसमें ज़्यादती हो या अपनी ज़ात पर नुक़्सान उठाते हैं तो (तुरन्त) अल्लाह तआ़ला को याद कर लेते हैं, फिर अपने गुनाहों की माफ़ी चाहने लगते हैं और अल्लाह तआ़ला के सिवा और है कौन जो गुनाहों को बख़्शता हो और वे लोग अपने काम (बूरे) पर इस्रार और (हठ) नहीं करते और वे जानते हैं उन लोगों का बदला बख़्शिश है उनके रब की तरफ़ से और (बहिश्त के) ऐसे बाग़ हैं कि उनके नीचे नहरें चलती होंगी। ये हमेशा (हमेशा) इन ही में रहेंगे और यह अच्छा हक़्क़ुल ख़िदमत (सेवा करने का बदला) है इन काम करने वालों का।

ख़ासियत- ये आयतें सुकून, नफ़्स व ग़ज़ब की तेज़ी और जाबिर सुल्तान व जाहिल दुश्मन के लिए हैं। जुमा की रात में इशा की नमाज़ के बाद काग़ज़ पर लिख कर बांध ले और सुबह को उन लोगों के पास जाए। इन्शाअल्लाहु तआ़ला उनकी बुराई से बचा रहेगा।

5. सूरः हूद (पारा 11, रुकूअ़ 17)

ख़ासियत- हिरन की झिल्ली पर लिख कर जो आदमी अपने पास रखे, उसको ताक़त व मदद मिले। अगर सौ आदमियों से भी मुक़ाबला हो, सब पर हैबत ग़ालिब हो जाए और उसके ख़िलाफ़ कोई बात उससे न कर सकें और अगर उसको ज़ाफ़रान से लिख कर तीन दिन सुबह व शाम पी

ले, दिल मज़बूत हो जाए और किसी के मुक़ाबले से उसको डर न हो।

٦ إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

6. इन्ना जअ़ल्ना फ़ी अअ़्नाक़िहिम अग़्लालन् फ़हि य इलल् अज़्क़ानि फ़हूम् मुक़्महून॰ व जअ़ल्ना मिम् बैनि ऐदीहिम सद्दंव् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन फ़ अग़्शैनाहुम् फ़ हुम् ला युब्सिरून॰

(पारा 22, रुकूअ़ 18)

तर्जुमा– हमने उनकी गरदनों में तौक़ डाल दिए, फिर वे ठोढ़ियों तक (अड़ गये) हैं, जिससे उनके सर ऊपर उलल् गये और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी और एक आड़ उनके पीछे कर दी, जिससे हमने (हर तरफ़ से) उनको परदों से घेर दिया, सो वे नहीं देख सकते।

ख़ासियत– अगर ढाल पर लिख कर दीन के दुश्मनों का मुक़ाबला करे तो ग़ालिब आए।

7. सूरः नाज़िअ़ात (पारा 30)

ख़ासियत– दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त पढ़ने से उसके नुक़्सान से बचा रहे।

8. सूरः फ़ील (पारा 30)

ख़ासियत– दुश्मन से मुक़ाबला करते वक़्त उसको पढ़ा जाए, इन्शाअल्लाहू तआ़ला ग़ल्बा हासिल हो।

9. आयतल कुर्सी (पारा 3, रुकूअ़ 2)

ख़ासियत– अगर दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त 313 बार पढ़े तो ग़ल्बा हासिल हो।

10. सूरः त्वाहा

ख़ासियत– अगर सुबह के वक़्त पढ़े, तो लोगों के दिल क़ाबू में आएं और दुश्मनों पर ग़लबा हासिल हो।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ○

11. स युह्ज़मुल जम्‌अु व युवल्लूनद्दुबुर०

ख़ासियत– मिट्टी पर पढ़ कर दुश्मन की तरफ़ फेंकने से उसे हार हो।

12. सूरः इन्ना अअ़्तै नाकल कौसर ०

ख़ासियत– तंहाई में तीन सौ बार पढ़ने से दुश्मनों पर ग़लबा हासिल हो।

13. इज़ा ज़ुल्ज़िलत

आलिमों में से एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि एक जगह लड़ाई हो रही थी, मैंने सूरः 'इज़ा ज़ुलज़िलत' पढ़ कर, ज़मीन पर हाथ मार कर उस तरफ़ को मिट्टी फेंक दी, फिर सर पर हाथ रख कर ये आयतें पढ़ीं–

فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ○ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ

أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ○

फ़ज़्रिब लहुम तरी क़न फ़िल बह्रि य ब सल्ला तख़ाफ़ु द र कंव्व ला तख़्शा०व जअ़ल्ना मिम् बैनि ऐदीहिम सद्दंव्व मिन् ख़ल्फ़िहिम सद्दन फ़ अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून०

क़सम खाकर कहते हैं कि यह अ़मल करके एक पेड़ के नीचे बैठा रहा, मुख़ालिफ़ लोग वहां पहुंच कर कहने लगे कि अभी तो वह शख़्स यहां था, कहां गया और उनको नज़र न आए।

14. काफ़िरों को हराने का अ़मल

इब्नुल कलबी से नक़ल किया गया है कि मुझसे एक मोतबर शख़्स ने बयान किया कि काफ़िरों के बादशाहों में से किसी एक ने इस्लाम वालों के शहर को घेर लिया। इन लोगों में कोई नेक आदमी था। उसने एक मुट्ठी मिट्टी लेकर उस पर-

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ○ إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ○ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ○ وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ○ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ○ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ○ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا ○

व मा रमै त इज़ रमै त व ला किन्नल्लाह रमा व लि युब्लि यल मुअ्मिनी न मिन्हु बलाअन ह स ना, इन्नल्ला ह समीअुन अ़लीम॰ इज़ा ज़ुल्ज़ि ल तिल अर्ज़ु ज़िल्ज़ा ल हा॰ व अख़रजतिल अर्ज़ु अस्कालहा॰ व कालल् इन्सानु मालहा॰ यौमइज़िन तुहद्दिसु अख़्बा र हा॰ बि अन्न रब्ब क औहा लहा॰ यौ मइज़िंय् यस्दुरुन्नासु अश्ताता॰

लिख कर उन काफ़िरों के पड़ावों में डलवा दी। वे आपस में लड़ कर भाग गये।

15. अल-क़ादिरु (तवाना सब पर)

ख़ासियत– दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर उसको सौ बार पढ़े तो ताक़त हासिल हो और अगर वुज़ू करते हुए उसे ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े तो दुश्मनों पर ग़ालिब हो।

16. अल-मुक़द्दिमु (आगे करने वाले)

ख़ासियत– लड़ाई में जाकर पढ़े तो ताक़त और निजात हो।

17. अत्तव्वाबु (तौबा क़ुबूल करने वाले)

ख़ासियत– चाश्त की नमाज़ के बाद तीन सौ साठ बार पढ़े तो तौबा की

तौफ़ीक़ हासिल होगी, अगर ज़ालिम पर दस बार पढ़े तो उससे ख़लासी हो।

18. अल-मुन्तक़िमु (बदला लेने वाले)

ख़ासियत– जो शख़्स अपने ज़ालिम दुश्मन से बदला न ले सकता हो, तो इसे ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, अल्लाह तआला उससे बदला ले लें।

सफ़र

1. सवार होते वक़्त

١ سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ○

1. सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़ र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन○

(पारा 25, रुकूअ़ 7)

तर्जुमा– उसी की ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया और हम तो ऐसे न थे जो उनको क़ाबू में कर लेते।

ख़ासियत– घोड़े या दूसरी सवारी पर सवार होने के वक़्त इस आयत को पढ़ लिया करे, इन्शाअल्लाहु तआला आफ़तों से बचा रहेगा।

٢ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ○

2. अ फ़ ग़ै र दीनिल्ला हि यब्ग़ू न व लहू अस्ल म मन फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि ता़ै अंव् व कर्हव् व इलैहि युर्ज अून○

(पारा 3, रुकूअ़ 17)

तर्जुमा– क्या फिर उस ख़ुदा के दीन के सिवा और किसी तरीक़े को चाहते हैं, हालांकि हक़ तआला के सामने सब सर झुकाते हैं जितने

आसमानों और ज़मीन में हैं, (कुछ) ख़ुशी और (कुछ) बे-इख़्तियारी से और सब ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाये जाएंगे।

ख़ासियत- अगर सवारी का कोई जानवर घोड़ा, ऊंट, सवारी के वक़्त शोख़ी और शरारत करे और चढ़ने न दे तो इस आयत को तीन बार पढ़ कर उसके कान में फूंक दे, इन्शाअल्लाहु तआला बाज़ आ जाएगा।

2. किसी शहर में दाख़िल होना

رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ○ ١

1. रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़लम् मुबारकंव् व अन् त ख़ैरुल मुंज़िलीन॰

(पारा 18, रुकूअ़ 2)

तर्जुमा- ऐ मेरे रब ! मुझको ज़मीन पर बरकत का उतारना उतारियो और आप सब उतारने वालों से अच्छे हैं।

ख़ासियत- जब किसी शहर में दाख़िल हो तो इस आयत को पढ़े, इन्शाअल्लाहु तआला वहां ब-ख़ैर व ख़ूबी बसर होगी।

3. कश्ती व जहाज़ की हिफ़ाज़त

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ○ ١

1. बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन् न रब्बी ल ग़फ़ूरुर्रहीम॰

(पारा 12, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा- फ़रमाया कि (आओ) उस कश्ती में सवार हो जाओ (और कुछ) अंदेशा मत करो, क्योंकि उसका चलना और उसका ठहरना अल्लाह ही के नाम से है, यक़ीनन् मेरा रब ग़फ़ूर है रहीम है।

ख़ासियत- जब कश्ती या दूसरी सवारी पर सवार होने लगे तो

इस आयत को पढ़ ले, इन्शाअल्लाहु तआ़ला राह की आफ़तों से बचा रहेगा और जिस शख़्स को सर्दी से बुख़ार आता हो तो बेरी की लकड़ी पर लिख कर उसके गले में डाल दें, इन्शाअल्लाहु तआ़ला ठीक हो जाएगा।

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

2. फ़ालिक़ुल इस्बाहि से.........लिक़ौमिंय्य अ़्ल मून॰ तक

(पारा 7, रुकूअ़ 18)

तर्जुमा- वह (अल्लाह तआ़ला) सुब्ह का निकालने वाला है और उसने रात को राहत की चीज़ बनाया है और सूरज और चांद (की रफ़्तार) को हिसाब से रखा है। यह ठहराई हुई बात है ऐसी ज़ात की जो कि क़ादिर है, बड़े इल्म वाला है और वह अल्लाह तआ़ला ऐसा है, जिसने तुम्हारे (फ़ायदे) के लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिए से अंधेरों में, ख़ुश्की में भी, और दरिया में भी रास्ता मालूम कर सको। बेशक हमने ये दलीलें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए, जो ख़बर रखते हैं।

ख़ासियत- इस आयत को जुमा के दिन वुज़ू करके साखू के तख़्ते पर या किसी लकड़ी पर लिख कर, खुदवा करके कश्ती के आगे बांध देने से कश्ती तमाम आफ़तों से बची रहेगी।

3. अगर लाजवर्द के नग पर बुध के दिन खुदवा करके अंगूठी पहने, हर तरह की ज़रूरत पूरी हो और क़ुबूलियत और मुहब्बत व हैबत लोगों की नज़र में पैदा हो।

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا ۚ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

4. व कालर्कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन् न रब्बी लग़फ़ूरुर्रहीम॰ (पारा 12, रुकूअ़ 4)

तर्जुमा- और (नूह अ़लैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि (आओ) इस कश्ती में सवार हो जाओ और कुछ अंदेशा मत करो (क्योंकि) इसका चलना और ठहरना (सब) अल्लाह ही के नाम से है। यक़ीनन मेरा रब ग़फ़ूर है, रहीम है।

ख़ासियत- साखू की तख़्ती पर इस आयत को खुदवा कर कश्ती के अगले हिस्से में उसको जड़ दिया जाए, हर क़िस्म की आफ़त से कश्ती महफ़ूज़ रहे और इसको कश्ती में सवार होते वक़्त पढ़ना चाहिए।

5. इसी तरह आयत- وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ

व मा क द रुल्ला ह हक़्क़ क़द्रिही वल् अर्ज़ु जमी अ़न क़ब्ज़तुहू यौमल् क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम् बियमीनिही सुब्हान हू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून॰ (पारा 24, रुकूअ़ 4)

पढ़ना मुफ़ीद हैं।

तर्जुमा- और (अफ़सोस है कि) इन लोगों ने अल्लाह तआ़ला की कुछ अ़ज़्मत (बड़ाई) न की, जैसी अ़ज़्मत करनी चाहिए थी, हालांकि (इसकी वह शान है कि) सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी क़ियामत के दिन, और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पाक व बरतर है उनके शिर्क से।

6. सूरः लुक़्मान (पारा 21)

ख़ासियत- इसको लिख कर पीने से पेट की सब बीमारियां और

बुख़ार और तिजारी और चौथिया जाता रहता है और इसको पढ़ने से डूबने से बचा रहे।

٧ — أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُم مِّنْ آيَاتِهِ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

7. अ लम् त र अन्नल् फ़ुल् क तज्री फ़िल बह्रि बिनिअ्मतिल्लाहि लि युरि य कुम मिन आयातिही इन् न फ़ी ज़ालिक ल आयातिल्लि कुल्लि सब्बारिन शकूर० (पारा 21, रुकूअ़ 13)

तर्जुमा– ऐ मुख़ातब ! क्या तुमको यह (तौहीद की दलील) मालूम नहीं कि अल्लाह ही के फ़ज़्ल से कश्ती दरिया में चलती हैं, ताकि तुमको अपनी निशानियां दिखलाए, इसमें निशानियां हैं हर एक ऐसे शख़्स के लिए जो सब्र व शुक्र करता हो।

ख़ासियत– दरिया के तुफ़ान के वास्ते सात परचों पर लिख कर दरिया में पूरब की तरफ़ एक-एक करके डाल दिया जाए।

٨ — قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً
لَّئِنْ أَنجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا
وَمِن كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنتُمْ تُشْرِكُونَ ۝

8. क़ुल मंय्युनज्जीकुम मिन ज़ुलुमातिल बर्रि वल बह्रि तद् अून हू तज़र्रुअंव व ख़ुफ़्यतन ल इन अन्जाना मिन हाज़िही लनकूनन्न मिनश्शाकिरीन० क़ुलिल्लाहु युनज्जीकुम मिन्हा व मिन कुल्लि करबिन सुम्म अन्तुम तुश्रिकून० (पारा 7, रुकूअ़ 14)

तर्जुमा– आप कहिए कि वह कौन है जो तुम को ख़ुश्की और दरिया की अंधेरियों से इस हालत में निजात देता है कि तुम उसको पुकारते हो

तज़ल्लुल (विनम्रता) ज़ाहिर करके और (कभी) चुपके-चुपके। अगर आप हमको उनसे निजात दे दें तो हम ज़रूर हक़ शनासी (पर क़ायम रहने) वालों से हो जाएं। आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह ही तुमको इन से निजात देता है और हर ग़म से, तुम फिर भी शिर्क करने लगते हो।

ख़ासियत- अगर दरिया में जोश व बाढ़ हो, ये आयतें लिख कर दरिया में डालने से तूफ़ान को सुकून हो जाता है।

9. सूरः फ़त्ह (पारा 26)

ख़ासियत- रमज़ान शरीफ़ के चांद के देखने के वक़्त तीन बार पढ़ने से तमाम साल रोज़ी ज़्यादा रहे। लिख कर लड़ाई-झगड़े के वक़्त पास रखने से अम्न में रहे और फ़त्ह मिले। कश्ती में सवार होकर पढ़ने से डूबने से बचा रहे।

رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِیْرًا۝

10. रब्बि अद्ख़िल्नी मुद् ख़ ल सिद् क़िंव् व अख़्रिज्नी मुख़्र ज सिंद्क़िंव् व ज् अ़ल्ली मिल्ल दुन् क सुल्तानन नसीरा॰

(पारा 15, रुकूअ़ 9)

तर्जुमा- ऐ रब ! मुझको ख़ूबी के साथ पहुंचाइयो और मुझको ख़ूबी के साथ ले जाइयो और मुझको अपने पास से ऐसा ग़ल्बा दीजियो जिसके साथ मदद हो।

ख़ासियत- सफ़र करने के वक़्त या सफ़र से आने के वक़्त इसको पढ़ ले, इन्शाअल्लाहु तआ़ला इज़्ज़त व क़द्र होगी।

.11. सूरः अ़ ब स (पारा 30)

ख़ासियत- इसको लिख कर पास रखने से रास्ते के ख़तरों से बचा रहे।

12. सूरः अ़लक़ (पारा 30)

ख़ासियत- सफ़र में साथ रखने से घर आने तक हर किस्म की आफ़त-समुन्दर की या ख़ुश्की की-से बचा रहे।

4. वापसी ख़ैरिय्यत के साथ

1. हुरुफ़े मुकत्तआ़त जो सूरतों के शुरू में होते हैं, वे यह हैं-

الٓمٓ ۔ الٓمٓصٓ ۔ الٓر ۔ الٓمٓرٰ ۔ کٓھٰیٰعٓصٓ ۔ طٰہٰ ۔ طٰسٓ ۔ طٰسٓمٓ
یٰسٓ ۔ صٓ ۔ حٰمٓ ۔ عٓسٓقٓ ۔ قٓ ۔ نٓ

अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-रा अलिफ़-लाम-मीम रा, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीन, त्वा-सीम-मिम, या-सीन, स्वाद, हा-मीम, ऐन-सीन-काफ़, काफ़, नून- और जिनमें ये हुरूफ़ आये हैं-

الف ۔ حا ۔ صاد ۔ سین ، کاف ۔ عین ۔ طا ۔ قاف ۔ را ۔ ن ۔ میم ۔ ل ۔ یاء

अलिफ़-हा-स्वाद-सीन-काफ़-ऐन-त्वा-काफ़-रा-हा-नून-मीम-लाम-या इनका लक़ब इस्तिलाह में हुरूफ़े नूरानी है।

ख़ासियत- एक अल्लाह वाले बुज़ुर्ग से नक़ल किया गया है कि इन हुरूफ़े नूरानी को पास रखने से तमाम आफ़तों से हिफ़ाज़त रहती है और रोज़ी मिलती है और ज़रूरतें पूरी होती हैं दुश्मन और चोर और सांप और बिच्छू और दरिन्दे और कीड़े-मकोड़े से बचा रहता है और सफ़र में इनके

पढ़ने से सही व सालिम घर वापस आता है।

2. अल अ़लिय्यु (बुलंद सबसे)

ख़ासियत- अगर लिख कर मुसाफ़िर अपने पास रखे तो जल्दी अपने रिश्तेदारों से आ मिले। अगर मुहताज हो, ग़नी हो जाए।

3. अल अव्वलु (सबसे पहले)

ख़ासियत- अगर मुसाफ़िर हर जुमा को हज़ार बार पढ़े तो जल्दी अपने लोगों से आ मिले।

जिस्मानी मर्ज़

1. बुख़ार या हर बीमारी को दूर करने के लिए

١۔ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝

1. इन्नल्लज़ी नत्तक़ौ इज़ा मस्स हुम् ताइफ़ुम मिनश्शैतानि तज़क्करू फ़ इज़ा हुम् मुब्सिरून० -पारा 9, रुकूअ़ 14

तर्जुमा- यकीनन जो लोग ख़ुदा तरस हैं, जब उनको कोई ख़तरा शैतान की तरफ़ से आ जाता है, तो वे याद करने में लग जाते हैं। तो यकायक उन्की आँखें खुल जाती हैं।

ख़ासियत- जिस शख़्स को गर्मी से बुख़ार आता हो, इस आयत को पढ़ कर उस पर दम करे या तश्तरी पर लिखकर, धोकर पिला दे। इन्शाअल्लाहु तआ़ला शिफ़ा होगी।

٢۔ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝

2. क़ुल्नाया नारु कूनी बर्दंव् व सलामन अ़ला इब्राहीम०

-पारा 17, रुकूअ़ 5

तर्जुमा- हमने (आग को) हुक्म दिया कि ऐ आग तू ठंडी और बे-नुक़्सानी हो जा, इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के हक़ में।

ख़ासियत- जिसको गर्मी से बुख़ार आता हो, इस आयत को लिखकर धोकर पिला दे या गले में डाल दे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला बुख़ार जाता रहेगा।

۳ـ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ (پارہ ۱۰ رکوع ۸) وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ (پ۱۱ع۱۱) يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ (پ۱۴ع۱۵) وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (پ۱۵ع۹) وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝ (پارہ ۱۹ ع ۹) قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَاءٌ (پ۲۴ ع ۱۹)

3. व यशिफ़ सुदू र कौमिम् मुअ्मि नीन० (पारा 10, रुकूअ 8) व शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सु दूरि० (पारा 11, रुकूअ़ 11) यख़्रुजु मिम् बुतूनि हा शराबुम् मुख़्तलिफ़ुन अल् वा नु हू फ़ीहि शिफ़ाउल्लिन्नासि० (पारा 14, रुकूअ़ 15) व नुनज़्ज़िलु मिनल् क़ुरआनि मा हु व शि फ़ा उंवृ व रह्मतुल लिल् मुअ् मि नीन० (पारा 15, रुकूअ़ 9) व इज़ा मरिज़्तु फ़ हु व यश्फ़ीनि (पारा 19, रुकूअ़ 9) क़ुल हु व लिल्लज़ी न आम नू हुदंव् व शिफ़ा उन० (पारा 24, रुकूअ़ 19)

तर्जुमा- और बहुत से (ऐसे) मुसलमानों के दिलों को शिफ़ा देगा। दिलों में जो (बुरे कामों से) बीमारियां हैं उनके लिए शिफ़ा है। उसके पेट में से पीने की एक चीज़ निकलती है (यानी शहद) जिसकी मुख़्तलिफ़ रंगतें होती हैं कि उसमें लोगों के लिए शिफ़ा है।

और हम क़ुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि ईमान वालों के हक़ में शिफ़ा व रहमत है।

और जब मैं बीमार हो जाता हूं (जिसके बाद शिफ़ा हो जाती है) तो वही मुझको शिफ़ा देता है।

आप कह दीजिए कि यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए तो रहनुमा और शिफ़ा है।

ख़ासियत– शिफ़ा की इन आयतों को जिस मर्ज़ में चाहे, तश्तरी पर लिख कर मरीज़ को पिलाये या तावीज़ लिख कर गले में डाल दे। इन्शाअल्लाह् तआला सेहत होगी, चाहे कैसा ही सख़्त मर्ज़ हो।

٤ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا
الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

4. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम॰ अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ ल मीन॰ अर्रहमानिर्रहीम॰ मालिकि यौमिद्दीन॰ इय्या क नअ़्बुदु व इय्या क नस्तअ़ीन॰ इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम॰ सिरा तलल्लज़ी न अन्अ़म् त अ़लैहिम ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन॰

तर्जुमा– शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। सब तारीफ़ें अल्लाह के लायक़ हैं जो मुरब्बी हैं, हर-हर आ़लम के, जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं, जो बदले के दिन के मालिक हैं। हम आप ही की इबादत करते हैं और आप ही से मदद की दर्ख़्वास्त करते हैं, बतला दीजिए हमको रास्ता सीधा, रास्ता उन लोगों का,

जिन पर आपने इनाम फ़रमाया है, न रास्ता उन लोगों का, जिन पर आपका ग़ज़ब किया गया और न उन लोगों का जो रास्ते से गुम हो गये।

ख़ासियत– जिसको बुख़ार आता हो, थोड़ी रुई लेकर ग्यारह बार दरूद शरीफ़ पढ़े, फिर सात बार 'अल-हम्दुशरीफ़' पढ़ कर रुई पर दम करके बाएं कान में रख ले, दूसरे दिन उसी वक़्त जिस वक़्त कान में रुई रखी थी, दाएं कान की रुई बाएं कान में रख ले और बाएं कान की रुई दाएं कान में रखे। इन्शाअल्लाहु तआला बुख़ार जाता रहेगा।

5. हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि बुख़ार के लिए यह लिख कर मरीज़ के बंधवाते थे-

يُرِيْدُ اللهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ۝ (پ۵ ع۲) اَلْاٰنَ خَفَّفَ اللهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۝ (پ۱۰ ع۵) رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝ (پ۲۵ ع۱۴) وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗ اِلَّا هُوَ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۝ (پاره ۱۱ ركوع ۱۶) وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

युरीदुल्लाहु अंय्युख़फ़्फ़ि फ़ अ़न्कुम व ख़ुलिक़ल इन्सानु ज़अ़ीफ़ा० (पारा 5, रुकूअ़ 2) अल् आ न ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अ़न्कुम व अ़लि म अन् न फ़ीकुम ज़ अ़ फ़ा० (पारा 10, रुकूअ़ 5) रब्बनक् शिफ़ अ़न्नल अ़ज़ा ब इन्ना मुअ्मिनून० (पारा 25, रुकूअ़ 14) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन फ़ ला काशि फ़ लहू इल्ला हु व व इंय्युरिद् क बिख़ैरिन फ़ ला राद्द लि फ़ज़्लिही० (पारा 11, रुकूअ़ 16) व हु व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर० (पारा 11, रुकूअ़ 17)

तर्जुमा– अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे साथ तख़्फ़ीफ़ (कटौती) मंज़ूर है और वजह इसकी यह है कि आदमी कमज़ोर पैदा किया गया है।

अब अल्लाह तआ़ला ने तुम पर तख़्फ़ीफ़ कर दी और मालूम कर लिया कि तुममें हिम्मत की कमी है।

ऐ हमारे रब! हमसे इस मुसीबत को दूर कर दीजिए, हम ज़रूर ईमान ले आएंगे।

और अगर तुमको अल्लाह कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उसके अलावा और कोई उसको दूर नहीं कर सकता और अगर वह तुमको कोई राहत पहुंचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल को कोई हटाने वाला नहीं है। और वह हर शै पर पूरी क़ुदरत रखता है।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ○

6. व अव हैना इला मूसा व अख़ीहि अन तबव्वअ लिक़ौमिकुमा बिमिस्र बुयूतंव् वज अ़लू बुयू त कुम क़िब्लतंव् व अक़ीमुस्स-ला त व बशि्शरिल मुअ मिनीन० -पारा 11, रुकूअ़ 14

और

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○

व इंय्यम्स स्कल्लाहु बिज़ुर्रिन फ़ ला काशि फ़ लहू इल्ला हु व व इंय्युरिद् क बिख़ैरिन फ़ ला राद् द लिफ़ज़्लिही युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन अ़िबादिही व हु वल ग़फ़ूरूर्रहिम० -पारा 11, रुकूअ 16

तर्जुमा– और हमने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और उन के भाई हारून (अ़लैहिस्सलाम) के पास वह्य भेजी कि तुम दोनों अपने उन लोगों के लिए (बदस्तूर) मिस्र में घर पर क़रार रखो और (नमाज़ के औक़ात में) तुम सब अपने उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह क़रार दे लो। और (यह ज़रूरी है कि) नमाज़ के पाबन्द रहो और (ऐ मूसा !) आप मुसलमानों को

बशारत दे दें।

और अगर तुमको अल्लाह तआला कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उस के अलावा और कोई उसका दूर करने वाला नहीं और अगर तुम को कोई राहत पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला नहीं, (बल्कि) वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिस पर चाहें, उंडेल दें और वह बड़ी मग़्फ़िरत और बड़ी रहमत वाले हैं।

ख़ासियत– मिस्री के टुकड़े पर लोहे की सूई से इस आयत को नक़्श कर के मीठे पानी से जो रात के वक़्त नहर से लिया गया हो, घोल कर मरीज़ को फ़ज्र होने के क़रीब पिलाया जाए। इन्शाअल्लाहु तआला हर क़िस्म के मर्ज़ों से शिफ़ा हो।

ﷺ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا

7. व नुनज़्ज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हु–व शिफ़ाउंव् व रह्मतुल् लिल् मुअ्मिनी न व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमीन इल्ला ख़सारा०

–पारा 15, रुकूअ़ 9

तर्जुमा– और हम क़ुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि वह ईमान वालों के हक़ में तो शिफ़ा व रहमत है। और ना इन्साफ़ों को उससे और उल्टा नुक़्सान बढ़ता है।

ख़ासियत– इसको पढ़ कर मरीज़ पर दम करना या लिख कर पिलाना हर मर्ज़ को नफ़ा देता है।

ﷺ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۗ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ يَوْمَ

نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ ۚ وَعْدًا
عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا
عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِقَوْمٍ عَابِدِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ
إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَمْ بَعِيدٌ مَا تُوعَدُونَ ۝

8. इन्नल्लज़ी न स ब क़त से...अम बअ़ी दुम मा तूअ़ दून० तक।

–पारा 17. रुकूअ़ 7

ख़ासियत– बुख़ार और तमाम मर्ज़ों और दर्दों के लिए पाक बर्तन में स्याही से लिख कर कुएं के पानी से जिस पर धूप न आती हो, धोकर तीन घूंट मरीज़ को पिलाएं और दर्द की तेज़ी के वक़्त बाक़ी उसकी कमर पर छिड़क दें। तीन दिन इसी तरह करे या रोग़न बाबूना से धोकर कमर के दर्द और ज़ानू के वास्ते मालिश करे।

9. सूरः यासीन (पारा 22, रुकूअ़ 18)

ख़ासियत– इस सूरः को लिख कर पास रखने से बुरी नज़र और सब बीमारियों और दर्द से हिफ़ाज़त रहे।

10. सूरः मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) (पारा 26)

ख़ासियत– इस सूरः को लिख कर ज़मज़म के पानी से धोकर पीने से लोगों की नज़र में महबूब हो जाए। जो बात सुने याद रहे, उसके पानी से ग़ुस्ल कराना तमाम मर्ज़ों को दूर करता है।

11. सूरः मुजादला (पारा 28)

ख़ासियत– मरीज़ के पास पढ़ने से उसको नींद और सुकून आए और अगर काग़ज़ पर लिख कर ग़ल्ले में रख दे, उसमें कोई बिगाड़ न हो।

12. फ़क़ीह मुहम्मद माज़नी रह० को बुख़ार आया, उनके उस्ताद

फ़क़ीह वली उमर बिन सईद रह० इयादत को आये और एक तावीज़ बुख़ार का देकर चले गये और फ़रमा गये कि उसको देखना मत। ग़रज़ उसको बांधा और बुख़ार उसी वक़्त जाता रहा। उन्होंने उसको खोल कर देखा तो उसमें 'बिस्मिल्लाह' लिखी थी, उनके एतिक़ाद में सुस्ती पैदा हुई, तुरन्त बुख़ार फिर लौट आया। उन्होंने जाकर शेख़ से अ़र्ज़ किया और अपने फ़ेल से तौबा की, उन्होंने और तावीज़ दे दिया और खुद बांध दिया, फ़िर तुरन्त बुख़ार जाता रहा। उन्होंने एक साल बाद उसको खोल कर देखा, तो वही बिस्मिल्लाह थी, उस वक़्त उनको निहायत अ़ज़्मत और एतिक़ाद दिल में पैदा हुआ।

13. अस्सलामु (बे-ऐब)

ख़ासियत– अगर मरीज़ के पास बैठकर उसके सिरहाने दोनों हाथ उठाकर इसको 39 बार ऊंची आवाज़ से पढ़े कि मरीज़ सुन ले। इन्शाअल्लाह उसको शिफ़ा होगी।

14. अल-अ़ज़ीमु (बुज़ुर्ग)

ख़ासियत– ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से इज़्ज़त और मर्ज़ से शिफ़ा हो।

15. अल-हय्यु (ज़िन्दा)

ख़ासियत– इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करने या लिख कर पिलाने से हर क़िस्म के मर्ज़ों से निजात हो।

16. अल-ग़निय्यु (बे-परवा मुतलक़)

ख़ासियत– किसी मर्ज़ या बला के वक़्त पढ़े तो जाता रहे।

2. हौले दिली

1. لِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ؕ

1. लि यर्बि त़ अ़ला क़ुलूबिकुम व युसब्बि त बिहिल् अक़्दाम०

-पारा 9, रुकूअ़ 16

तर्जुमा- तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और तुम्हारे पांव जमा दे।

ख़ासियत- यह आयत हौले दिली के लिए निहायत आज़मायी हुई है, इसको लिख कर तावीज़ बना कर गले में इस तरह लटकाए कि वह तावीज़ सीधे दिल पर रहे, बल्कि इसको कपड़े या ठर्रे से बांध दे ताकि दिल से न हटने पाये।

2. اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝

2. अल्लज़ी न आ म नू व तत्मइन्नु क़ुलूबुहुम् बिज़िक्रिल्लाहि अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल क़ुलूबु -पारा 13, रुकूअ़ 10

तर्जुमा- मुराद इससे वे लोग हैं जो ईमान लाये और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मीनान होता है। ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हो जाता है।

ख़ासियत- यह हौले दिली के वास्ते है तर्कीब ऊपर गुज़री।

3. दिल की धड़कन

ع اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗۤ اَسْلَمَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۝ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَاۤ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

1. अ फ़ ग़ै र दीनिल्लाहि से.....मिनल ख़ासिरीन० तक।

-पारा 3, रुकूअ़ 17

तर्जुमा– क्या फिर (इस) अल्लाह के दीन के सिवा और किसी तरीक़े को चाहते हैं, हालांकि हक़ तआ़ला के सामने सब परागंदा हैं जितने आसमान और ज़मीन में हैं (कुछ) ख़ुशी से और (कुछ) बे-इख़्तियारी से और सब ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाये जाएंगे। आप फ़रमा दीजिए कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस (हुक्म) पर जो हमारे पास भेजा और उस पर जो (हज़रत) इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व याक़ूब (अ़लैहिमुस्सलाम) और याक़ूब (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद की तरफ़ भेजा गया। और उस (हुक्म व मोजज़े) पर भी जो मूसा व ईसा (अ़लैहिमस्सलाम) और दूसरे नबियों को दिया गया, उनके परवरदिगार की तरफ़ से, इस कैफ़ियत से कि हम उन (हज़रात) में से किसी एक में भी फ़र्क़ नहीं करते और हम तो अल्लाह ही के मुतीअ़ (फ़रमाँबरदार) हैं और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन की तलब करेगा तो वह (दीन) उससे (ख़ुदा के नज़दीक) मक़्बूल न होगा और वह (शख़्स) आख़िरत में तबाहकारों में से होगा। (यानी निज़ात न पाएगा)।

ख़ासियत– ये आयतें दिल की धड़कनों के लिए मुफ़ीद हैं। मिट्टी

के कोरे बर्तन में लिख कर बारिश या मीठे-कुंए के पानी से जिस पर धूप न आती हो, धोकर मरीज़ को पिलाया जाए, इन्शाअल्लाहु तआला सेहत हो जाएगी।

4. दिल का दर्द

وَنَزَعْنَا مَا فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ

1. व नज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन्०

ख़ासियत– इस आयत को मिट्टी के कोरे बर्तन पर ज़ाफ़रान और गुलाब से लिख कर पानी से धोकर पिए, दिल का दर्द ख़त्म हो जाए।

2. सूरः अल-इन्शिराह (पारा 30)

ख़ासियत– सीने पर दम करने से तंगी और दिल के दर्द को सुकून हो। इसका पीना पथरी को टुकड़े-टुकड़े करके निकाल देता है।

5. दिल को ताक़त पहुंचाने के लिए

1. अल-माजिदु (बुज़ुर्गवार)

ख़ासियत– लुक़्मे पर पढ़ कर खाए तो दिल की ताक़त हासिल हो और अगर इस नाम को हमेशा-हमेशा पढ़े, दिल रोशन हो।

2. अल-वाहिदुल अहदु

ख़ासियत– अगर हज़ार बार पढ़े तो मख़्लूक़ का ताल्लुक़ उसके दिल से निकल जाए।

6. तिहाल के लिए

ﻋ إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ۚ إِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ○

1. इन्नल्ला ह युम्सिकुस्समावाति वल् अर् ज़ अन् तज़ूला॰व लइन ज़ा ल ता इन अम्स क हुमा् मिन अ ह दिम मिम् बअ़्दि ही इन्नहू का न हलीमन ग़फ़ूरा० -पारा 22, रुकूअ़ 17

तर्जुमा– यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वह मौजूदा हालत को न छोड़ेंगे और (फ़र्ज़ करो) वह मौजूदा हालत को छोड़ भी दें तो फिर ख़ुदा के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता, वह हलीम व ग़फ़ूर है।

ख़ासियत– इस आयत को काग़ज़ पर लिख कर तावीज़ बना कर तहाल पर बांधे, इन्शाअल्लाह जाता रहेगा।

7. नाफ़ टलने के लिए

ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۭ

ज़ालि क तख़्फ़ीफ़ुम् मिर्रब्बिकुम् व रह्मतुन० -पारा 2, रुकूअ़ 6

ख़ासियत– जिसकी नाफ़ टल गयी हो, इस आयत को लिख कर नाफ़ पर बांधे। इन्शाअल्लाहु तआ़ला सेहत हो जाएगी।

8. बवासीर के लिए

ﻋ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرٰهِيْمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمٰعِيْلُ ۭ رَبَّنَا تَقَبَّلْ

مِنَّا ۗ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٥ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ
اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۖ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ٥
رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٥

1. व इज़ यर्फ़उ से......इन्न क अन्तल अज़ीज़ुल हकीम० तक।
-पारा 1, रुकूअ़ 15

तर्जुमा- और जब कि उठा रहे थे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम दीवारें ख़ाना-ए-काबा की और इस्माईल अ़लैहिस्सलाम भी (और यह कहते जाते थे कि) ऐ हमारे परवरदिगार ! (यह ख़िद्मत) हम से क़ुबूल फ़रमाइए। बिला शुब्हा आप ख़ूब सुनने वाले हैं, जानने वाले हैं, ऐ हमारे परवरदिगार! हमको अपना और ज़्यादा ताबेदार बना लीजिए और हमारी औलाद में से भी एक ऐसी जमाअ़त (पैदा) कीजिए जो आपकी फ़रमांबरदार हो और (यह कि) हमको हमारे हज (वग़ैरह) के हुक्म भी बतला दीजिए और हमारे हाल पर तवज्जोह रखिए और हक़ीक़त में आप ही हैं तवज्जोह फ़रमाने वाले, मेहरबानी करने वाले। ऐ हमारे परवरदिगार ! और उस जमाअ़त के अन्दर उन्हीं में का एक ऐसा पैग़म्बर ! भी मुक़र्रर कीजिए जो उन लोगों को आप की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाया करें और उनको (आसमानी) किताब की और ख़ुशफ़हमी की तालीम दिया करें और उनको पाक कर दें। बिला शुब्हा आप ही हैं, बड़ी ताक़त वाले, ज़बरदस्त हिक्मत वाले।

ख़ासियत- कुछ अल्लाह वाले बुज़ुर्गों का क़ौल है कि इस आयत को बिल्लौरी बर्तन पर ज़ाफ़रान और गुलाब से लिख कर काले अंगूर के पानी से धोकर इसमें कुछ कुहरबा और कुछ काफ़ूर और कुछ शकर मिला कर पीने से ख़ूनी बवासीर को नफ़ा करता है।

9. हैज़ की ज़्यादती से हिफ़ाज़त

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَإِنْ مَاتَ
أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ

व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूलुन क़द ख़ल त् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु अ फ़ इम् मा त औ क़ुतिलन्क़लब्तुम॰ -पारा 4, रुकूअ़ 6

तर्जुमा– और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) निरे रसूले पाक ही हैं, (ख़ुदा तो नहीं) आप से पहले और भी बहुत रसूल गुज़र चुके हैं, सो अगर आपका इंतिक़ाल हो जाए या आप शहीद हो जाएं तो क्या तुम लोग (जिहाद या इस्लाम से) फिर जाओगे ?

ख़ासियत– अगर किसी औ़रत का ख़ून जारी हो जाए तो इस आयत को तीन परचों पर लिखे, एक परचा उसके अगले दामन में बांध दे और एक पिछले दामन में, एक नाफ़ के नीचे।

10. नक्सीर के लिए

1. जिसको नक्सीर जारी हो तो ऊपर वाली आयत को लिखकर मरीज़ की दोनों आंखों के दरमियान नाक के ऊपर बांध दे।

2. **नक्सीर के लिए–**

وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَا سَمَاءُ أَقْلِعِي
وَغِيضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

व क़ी ल या अर्ज़ुब ल अ़ी मा अ कि व या समाउ अक़्लि अ़ी व ग़ीज़ल मा उ व क़ुज़ियल अम्रु व क़ीलल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमी न फ़ स

यक्फ़ी क हुमुल्लाहु व हुवस्समी अुल अ़लीम० कतान से पाक कपड़े पर लिख कर हाथ पर बांध दिया जाए।

3. **नक्सीर के लिए**-नक्सीर वाले के सर पर हाथ रखकर ये आयतें पढ़ो और आख़िर में यह कह दो कि ऐ नक्सीर ! बन्द हो जा ख़ुदा के हुक्म से। आयतें ये हैं-

إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ۚ إِنَّهٗ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَا سَمَاءُ أَقْلِعِي وَغِيضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ۝

इन्नल्ला ह युम्सिकुस्समावाति वल् अर् ज़ अन तज़ूला०व लइन ज़ाल ता इन् अम्स क हुमा मिन् अ हदिम् मिम् बअ़्दिही इन्नहू का न हलीमन ग़फ़ूरा० व क़ी ल या अर्ज़ु ब्लअ़ी मा अ कि व या समाउ अक़्लिअ़ी व ग़ीज़ल मा उ व क़ुज़ियल अम्रु वस्तवत अ़लल् जूदिय्यि व क़ी ल बुअ़्दललिल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन०

11. दर्द को दूर करना

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا ۝

1. व बिल हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल हक़्क़ि न ज़ ल वमा अर्सल्ना क इल्ला मुबश्शिरंव् व नज़ीरा० -पारा 15, रुकूअ़ 12

तर्जुमा- और हमने दुरुस्ती ही के साथ नाज़िल किया और वह दुरुस्ती ही के साथ नाज़िल हो गया और हमने आपको सिर्फ़ ख़ुशी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है।

ख़ासियत- हर मर्ज़ व हर दर्द के वास्ते मरज़ की जगह पर हाथ

रख कर इन आयतों को पढ़ कर तीन मर्तबा दम कर दे। इन्शाअल्लाहु तआला बहुत जल्द सेहत होगी।

٢ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ٥

2.अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़ ल क़स्समावाति वल् अर् ज़ व ज अ़ लज़्ज़ु लुमाति वन्नू र सुम् मल्लज़ी न कफ़रु बिरब्बिहिम् यअ़्दिलून०

-पारा 7, रुकूअ़ 7

तर्जुमा– तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लायक़ हैं जिसने आसमान को और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरियों और रोशनी को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग (दूसरो को) अपने रब के बराबर क़रार देते हैं।

ख़ासियत– जो आदमी इस आयत को सुबह व शाम सात बार पढ़ कर अपने बदन पर हाथ फेरे, तमाम दर्द व आफ़तों से बचा रहे।

3. व मा लना अल्ला न त वक्क ल से मुतवक्किलून० तक

٣ وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ٥ -पारा 13, रुकूअ़ 14

तर्जुमा– और हमको अल्लाह पर भरोसा न करने की कौन सी बात वजह बन सकती है, हालांकि उसने हमको (दोनों घरों के मुनाफ़े) रास्ते बता दिए और तुमने जो कुछ हमको तक्लीफ़ पहुंचायी है, हम उस पर सब्र करेंगे और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए।

ख़ासियत– जिसके हाथ पैर में दर्द हो या जिसको नज़र हो, उसको लिखकर तावीज़ बना कर बांध दे, इन्शाअल्लाह ठीक हो जाएगा।

4. सूरः अल-हाक़्क़ा (पारा 29)

ख़ासियत– हामिला के बांधने से बच्चा हर आफ़त से बचा रहे। अगर बच्चा पैदा होने के वक़्त इसका पढ़ा हुआ पानी मुंह में लगायें तो वह बुद्धिमान हो और हर मर्ज़ और हर आफ़त से, जिसमें बच्चे मुब्तला हो जाते हैं, बचा रहे और अगर ज़ैतून के तेल पर पढ़ कर बच्चे के मल दें, तो बहुत फ़ायदा पहुंचे और सब कीड़ों-मकोड़ों और तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवरों से बचा रहे और यह तेल तमाम जिस्मानी दर्दों के लिए फ़ायदेमंद है।

5. सूरः ग़ाशिया (पारा 30)

ख़ासियत– खाने पर दम करने से उसके नुक़्सान से बचा रहे और दर्द पर पढ़ने से सुकून हो।

6. सूरः अबी लहब (पारा 30)

ख़ासियत– अगर लिख कर दर्द की जगह बांध दिया जाए तो कम हो जाए और अंजाम बेहतर हो।

12. सर दर्द के लिए

لَا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ٥

1.ला युसद्दअू न अन्हा व ला युन्ज़िफ़ून॰ -पारा 27, रुकूअ़ 14

तर्जुमा– इससे उनको न सर दर्द होगा और न इससे अ़क्ल में ख़राबी होगी।

ख़ासियत– जिसको सर दर्द हो, उस पर तीन बार पढ़ कर दम करे दे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला जाता रहेगा।

2. सूरः तकासुर (पारा 30)

ख़ासियत– अस्र की नमाज़ के बाद सर-दर्द वाले और शकीके पर दम करना फ़ायदेमंद है।

3. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ख़ासियत– रूम के कैसर ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िद्मत में सर दर्द की शिकायत अर्ज़ की। आपने एक टोपी सिलवा कर भेज दी। जब तक वह टोपी सर पर रहती, दर्द को सुकून रहता और जब उसको उतारता, फिर दर्द होने लगता। उसको ताज्जुब हुआ और खोल कर उस टोपी को देखा तो उसमें फ़कत 'बिस्मिल्लाह' लिखी थी।

4. **सर–दर्द के लिए–**रमज़ान के आख़िरी जुमा में यह आयत लिखकर रखले, ज़रूरत के वक़्त काम में लाये-

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ

سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ۝

अ लम् त र इला रब्बि क कैफ़ मद्दज़्ज़िल्ल व लौ शा अ ल ज अ़ ल हू साकि नन् सुम्म ज अ़ लनश्शम्स अ़लैहि दलीला० सुम्म कबज़्नाहु इलैना कब्ज़ंय्यसीरा०

5. **शक़ीक़ा के लिए–**यह आयत पढ़ कर दम कर दें-

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلِ اللّٰهُ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ لَا يَمْلِكُوْنَ

لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا

क़ुल मर्रब्बुस्समावाति वल् अर्ज़ि क़ुलिल्लाहु क़ुल् अ फत्त ख़ज़्तुम् मिन् दूनिही औ लिया अ ला यम्लिकू न लिअन्फ़ुसिहिम नफ़्अंव्व ला ज़र्रा०

13. दाढ़ का दर्द

1. बसरा में एक शख़्स दाढ़ का दर्द झाड़ता था और कंजूसी की वजह से किसी को बतलाता न था। जब मरने लगा, उस वक़्त कलम व

दवात मंगा कर वह अमल बतलाया। वह झाड़ यह है-

الٓمّٓصٓ طٰسٓمٓ كٓهٰيٰعٓصٓ حٰمٓ عٓسٓقٓ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝ اُسْكُنْ بِكٓهٰيٰعٓصٓ ذِكْرُ رَحْمَةِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝ اُسْكُنْ بِالَّذِىْ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ اُسْكُنْ بِالَّذِىْ سَكَنَ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, त्वा-सीम-मीम, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद हा-मीम-ऐन-सीन-काफ़, अल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व रब्बुल अर्शिल अज़ीम उस्कुन बि काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद ज़िक्रु रह्मति रब् बि क अब् द हू ज़ क रिय्या उस्कुन बिल्ल ज़ी इंय्य श युस्किनिर्री ह फ़ यज़्लल् न रवा कि द अला ज़ह्रिही उस्कुन बिल्लज़ी स क नं लहू माफ़िस्समावाति व मा फ़िल् अर्ज़ि व हुवस्समीअुल अलीम०

2. **दाढ़ के दर्द के लिए एक दूसरा-**

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝

लि कुल्लि न ब इम्मुस्त क़र्रुंव्व सौ फ़ तअ् ल मून० छोटे से काग़ज़ पर लिखकर दाढ़ के नीचे दबाये।

दाढ़ के दर्द के लिए-जब किसी को इसकी शिकायत हो, उससे कह दो, जिस दाढ़ में दर्द है, उसको दाहिने हाथ की शहादत की उंगली से पकड़े और बात करते वक़्त उसको न छोड़े, फिर सूरः फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और पूछो कि तेरा क्या नाम है ? वह नाम बतलाये। फिर सूरः फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और पूछो कि तेरी मां का क्या नाम है ? वह इसका नाम बतलाये। फिर फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और पूछो, तेरे दर्द कहां है ! वह कहे दाढ़ में है। फिर सूरः फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और उससे कहो कि ख़ुदा के हुक्म

से उसको कील दूं ? वह कहे हां, फिर इसी तरह सूरः फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और उससे कहो कि थोड़ी देर जाकर आराम करे, बल्कि सो रहे तो बेहतर है। इन्शाअल्लाहु तआला सुकून हो जाएगा।

3. जिधर के हिस्से में दर्द हो, उस ओर से गाल पर हाथ फेरता जाए और यह आयत पढ़ता जाए-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اَوَ لَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ
مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम० अ व लम् यरलइन्सानु अन्ना ख़लक़्ना हु मिन् नुत्फ़तिन् फ़ इज़ा हु व ख़सीमुम मुबीन०

और आयतल कुर्सी और ये आयतें पढ़े-

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ ط

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

व लहू मा स क न फ़िल्लैलि वन्न हारि व हु वस्स मी ,अुल अ़लीम सुम् म सव्वा हु व न फ़ ख़ फीहि मिर्रू हि ही व ज अ़ ल लुकुमुस्सम् अ़ वलअब्सा र वल् अफ़ इ द त व नुनज़्ज़िलु मिनल् क़ुरआनि मा हु व शिफ़ा उंव् व रह्मतुल्लिल् मुअ्मिनी न०

14. कान का दर्द

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

1. कुल मंय्यर्जु क़ुकुम मिनस्समाइ वल अर्ज़ि अम्मंय् यम्लिकुस्सम अ़ वल अब्सा र मंय्युख़्रि जुल हय्य य मिनल् मय्यिति व युख़्रि-जुल् मय्यित मिनल् हय्यि व मंय्युदब्बि रुल अम् र फ़ स यक़ूलूनल्लाहु फ़ क़ुल अ फ़ ला तत्तक़ून०

-पारा 11, रुकूअ़ 9

तर्जुमा– आप (इन मुश्रिकों से) कहिए कि (बतलाओ) वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़ामीन से रोज़ी पहुंचाता है या (यह बतलाओ) वह कौन है जो (तुम्हारे) कानों और आंखों पर पूरा इख़्तियार रखता है। और वह कौन है जो जानदार (चीज़) को बे जान (चीज़) से निकालता है और बे जान (चीज़) को जानदार से निकलता है और वह कौन है जो तमाम कामों की तद्बीर करता है। (उनसे ये सवाल कीजिए) सो ज़रूर वे (जवाब में) यही कहेंगे कि (इन सब का करने वाला) अल्लाह (है) तो उनसे कहिए कि फिर (शिर्क से) क्यों नहीं परहेज़ करते ?

ख़ासियत– यह आयत बच्चे की पैदाइश में आसानी और कान में दर्द और रोज़ी में सहूलत के लिए मीठे कद्दू की पोस्त पर स्याही से लिखकर बच्चा जनने की तक्लीफ़ में पड़ी औ़रत के दाहिने बाज़ू पर बांध देने से बच्चा पैदा होने में सहूलत होती है और कलईदार तांबे की तश्तरी पर अ़र्के गोंदना से लिख कर साफ़ शहद से धोकर आग पर पका कर जिसके कान में दर्द हो, तीन बूंदे छोड़ दे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला नफ़ा हो और जो काग़ज़

पर लिख कर नीले कपड़े में तावीज़ बना कर दाहिने बाज़ू पर बांधे, रोज़ी के रास्तों के खुलने में आसानी हो।

15. आंख का आना

1. इन हर्फ़ों को ब हज़्फ़े मुकर्रर नौचंदी हफ़्ते में लिख कर, धोकर पिए, तो साल भर तक आंख आने से बचा रहे। वे हुरूफ़ यह हैं-

الٓمٓ۔ الٓمٓصٓ۔ الٓمٓرٰ۔ الٓرٰ۔ كٓهٰيٰعٓصٓ۔ طٰهٰ۔ طٰسٓمٓ۔ طٰسٓ يٰسٓ صٓ۔ قٓ۔ نٓ

अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-मीम-रा, अलिफ़-लाम-रा, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीम-मीम, त्वा-सीन, या-सीन, स्वाद, क़ाफ़, नून०

٢۔ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ ۝ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

2. कालू तल्लाहि से वअ् तूनी बिअहि्लकुम अज् मईन० तक

-पारा 13, रुकूअ़ 4

तर्जुमा– वे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! कुछ शक नहीं तुमको अल्लाह तआला ने हम पर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम (इस में) ग़लती पर थे। (ख़ुदा के लिए) माफ़ कर दो। यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि नहीं तुम पर आज कोई इल्ज़ाम नहीं।अल्लाह तआ़ला तुम्हारा क़ुसूर माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। अब तुम मेरा यह कुर्ता (भी) लेते जाओ और इसको मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, (इससे) उनकी आंखें रोशन हो जाएंगी। (और यहां तशरीफ़ ले आएंगे) और अपने

(बाक़ी) घर वालों को (भी), सब को मेरे पास ले आओ।

ख़ासियत- यह आयत आंख के तमाम दर्द व तक्लीफ़ और आंख की सफ़ेदी के वास्ते, जिनके इलाज से डाक्टर परेशान हो गये हों नफ़ा देने वाली है-

सुर्मा अस्फ़हानी एक जुज़, एलवा आधा जुज़, मूंगा आधा जुज़ ज़ाफ़रान मामीरान चीनी, समुन्दर झाग आधा-आधा जुज़, नागर मोथा आधा जुज़, ख़रीफ़ की अव्वल बारिश का पानी और नहर और चश्मे का पानी जो जुमरात के दिन दिसम्बर के महीने में सूरज निकलने से पहले लिया गया हो (और एक नुस्ख़े में जनवरी है) फिर ये सब दवाएं अलग-अलग पीस कर और सबको मिलाकर, फिर सबको हरे पेड़ के पानी में पीसे और सूखने तक फिर उन को ख़रीफ़ की बारिश के पानी में पीस कर सुखाए, फिर तीसरी बार दिसम्बर या जनवरी के साथ पीसे, फिर चौथी बार शहद में जिसको आग न लगी हो और सिरके में पीसे, जब सूख जाए इन सब आयतों को शीशे के बर्तन में ज़ाफ़रान से लिख कर और जनवरी के पानी से धोकर फिर सबको उस पानी में पीस कर पांचवी बार सुखा ले और हर मर्ज़ के लिए उसको इस्तिमाल करे।

٣٥ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ
فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ
زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ
نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۙ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ يُسَبِّحُ

لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۝ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ مِنْ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۝ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

3. अल्लाहु नूरुस्समावाति से...बिग़ैरि हिसाब॰ तक

-पारा 18, रुकूअ़ 11

ख़ासियत- अगर आयी हुई आंख पर रोज़ाना सुबह के वक़्त ऊपर की आयतें तीन बार पढ़ कर दम किया करे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला आंख ठीक हो जाएगी।

4. सूरःहा -मीम सज्दा (पारा 24)

ख़ासियत- इसको लिख कर बारिश के पानी से धोकर उस में सुर्मा पीस कर लगाने से या ख़ुद उस पानी से आंख धोने से सफ़ेदी और आंख न आने और नाख़ूने वग़ैरह को नफ़ा होता है।

5. सूरः मुल्क (पारा 29)

ख़ासियत- आयी आंख पर तीन दिन तक तीन बार हर दिन दम करने से आराम हो जाए।

6. आंख आने पर यह लिख कर बांध दिया जाए-

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ

فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۝

इज़्ह बू बिक़मीसी हाज़ा फ़ अल्क़ूहु अ़ला वज्हि अबी याति बसीरा फ़क शफ़्ना अ़न् क ग़िता अ क फ़ ब स रुकल यौ म हदीद॰

16. आंख का दर्द

1. सूरः फ़ातिहा

ख़वास्स- फ़ज्र की सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान 41 बार पढ़ कर आंख पर दम करने से दर्द जाता रहता है और दूसरे मर्ज़ों के लिए भी फ़ायदेमंद और आज़माया हुआ है और बड़ी शर्त यह है आमिल व मरीज़ दोनों अच्छे अक़ीदे के हों।

17. गुर्दे का दर्द

1. सूरः ईलाफ़ (पारा 30)

ख़वास्स- खाने पर दम करके खाने से हर क़िस्म के नुक़्सान व तुख़्मे से बचा रहे और गुर्दे के दर्द में फ़ायदेमंद है।

18. पथरी को तोड़ कर निकाले

1. सूरः अ लम् नशरह (पारा 30)

ख़ासियत- सीने पर दम करने से तंगी और दिल के दर्द को सुकून हो। इसका पीना पथरी को चूर-चूर करके निकाल देता है।

19. पसली का दर्द (नमूनिया)

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝

1. व इंय्यम्सस्कल्लाहु बि ज़ुर्रिन फ़ ला काशि फ़ लहू इल्ला हु व व इंय्यम्सस् क बिख़ैरिन फ़ हु व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर॰ व हुवल क़ाहिरु फ़ौक़ अ़िबादिही वहु वल हकीमुल ख़बीर॰ -पारा 7, रुकूअ़ 8

तर्जुमा- और अगर तुझको अल्लाह तआ़ला कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उसका दूर करने वाला सिवाए अल्लाह तआ़ला के और कोई नहीं और

अगर तुझको कोई नफ़ा पहुंचाए, तो वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाले हैं और वही अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब है, बरतर हैं और वही बड़ी हिक्मत वाले और पूरी ख़बर रखने वाले हैं।

ख़ासियत- ये आयतें रात के आख़िर में काग़ज़ पर लिख कर जिस शख़्स को पसली या नमूनिया या हाथों में दर्द हो, उसको बांध दे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला शिफ़ा होगी और जिस शख़्स को ज़्यादा रंज व ग़म हो, इन आयतों को सोते वक़्त सात मर्तबा पढ़ कर सो रहे जिस वक़्त जागेगा रंज व ग़म सब दूर होता मालूम होगा।

20. आंख की रोशनी के लिए

فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۝

1. फ़ क शफ़्ना अ़न् क ग़िता अ क फ़ बसरु कल यौ म हदीद॰

-पारा 26, रुकूअ़ 16

तर्जुमा- सो अब हमने तुझ पर से तेरा परदा (ग़फ़लत का) हटा दिया। आज (तो) तेरी निगाह बड़ी तेज़ है।

ख़ासियत- इस आयत को हर नमाज़ के बाद तीन बार उंगली पर पढ़ कर दम करके आंखों पर लगाये, इन्शाअल्लाहु तआ़ला रोशनी में कमी न होगी, बल्कि जितना नुक़्सान हो गया होगा, वह भी जाता रहेगा।

2. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

2. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल क़द्रि० व मा अद्‌रा क मा लैलतुल् क़द्रि० लैलतुल क़द्रि ख़ैरुम मिन् अल्फ़ि शह्‌रिन० तनज़्ज़लुल् मलाइकतु वर्रूहु फ़ीहा बि इज़्नि रब्बिहिम मिन् कुल्लि अम् रिन सलामुन हि य हत्ता मत् ल अ़िल् फ़ज्रि०

ख़ासियत– जो शख़्स वुज़ू के बाद आसमान की तरफ़ नज़र करके एक बार पढ़ लिया करे, तो इन्शाअल्लाहु तआ़ला उसकी रोशनी में कमी न होगी।

3. सूरः कुव्विरत (पारा 30)

ख़ासियत– इसको पढ़ कर आंख पर दम करने से रोशनी बढ़े और आंख का आना और जाला दूर हो।

4. अश्शकूरु (क़द्र दान)

ख़ासियत– जिसको सांस की घुटन या थकन या जिस्म की ऐंठन हो, इसको लिख कर बदन पर फेर दे और पिए तो नफ़ा हो और अगर रोशनी कमज़ोर हो तो अपनी आंख पर फेरे, निगाह में तरक़्क़ी हो।

21. बुख़ार व कंपन

1. सूरः अ़ंकबूत (पारा 20)

ख़ासियत– चौथिया के वास्ते इसको लिख कर पानी से धोकर पिए। ग़म व सुस्ती दूर करने, ख़ुशी हासिल करने और दिल खोलने के लिए मुफ़ीद है।

2. सूरः लुक़्मान (पारा 21)

ख़ासियत– इसको लिख कर पीने से पेट की सब बीमारियां और

बुख़ार और तिजारी[1] और चौथिया जाता रहता है और उसको पढ़ने से डूबने से बचा रहे।

22. मिरगी के लिए

1. एक अल्लाह वाले बुज़ुर्ग की लौंडी को मिरगी थी। उन्होंने उसके कान में यह पढ़ा-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، الٓمّٓصٓ. طٰسٓمّٓ. كٓهٰيٰعٓصٓ. يٰسٓ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝
حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ. نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम० अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, त्वा-सीन मीम, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, या-सीन० वल् क़ुरआनिल हकीम० हामीम, ऐन-सीन-क़ाफ़, नून, वल-क़ ल मि व मा यस्तुरून० वह बिल्कुल अच्छी हो गयी और फिर मिरगी नहीं उठी।

2. रजब की नौचन्दी जुमरात को चांदी के नग पर ये हर्फ़ खुदवा कर पहने तो हर डर से अम्न में रहे। अगर हाकिम के पास जाए तो उसकी क़द्र हो और सब काम पूरे हों और अगर ग़ज़बनाक आदमी के सर पर हाथ फेर दे तो उसका गुस्सा जाता रहे और अगर प्यास की तेज़ी में उसको चूस ले तो सुकून हो जाए और अगर बारिश के पानी में उसको रात के वक़्त डाल कर सुबह को नहार मुंह पिए, तो हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाए और जो बेकार आदमी पहने, काम से लग जाए और अगर मिरगी वाले को पहनाया जाए तो मिरगी जाती रहे। वे हुरूफ़ ये हैं-

الٓمّٓ. الٓمّٓصٓ. الٓمّٓرٰ. الٓرٰ. كٓهٰيٰعٓصٓ. طٰهٰ. طٰسٓ
طٰسٓمّٓ. يٰسٓ. صٓ. حٰمٓ. حٰمٓ عٓسٓقٓ. قٓ. نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝

1. तिजारी: तीसरे रोज़ सर्दी लग कर जो बुख़ार चढ़ता है।

अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-मीम-रा, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीन, त्वा-सीन-मीम, या-सीन, स्वाद, हा-मीम, हामीम, ऐन-सीन-काफ़, क़ाफ़, नून वल क़लमि व मा यस्तुरून०

3. सूरः शम्स (पारा 30)

ख़ासियत- मिरगी वाले और बेहोशी वाले के कान में पढ़ना मुफ़ीद है और उसका पानी बुख़ार वाले को नफ़ा पहुंचाएगा।

23. फ़ालिज के लिए

इब्ने क़ुतैबा रज़ि० ने एक फ़ालिज के मारे शख़्स से नक़ल किया है कि मैंने ज़मज़म के पानी से दवात दुरुस्त करके और उससे एक बर्तन में 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम और सूरः हश्र की आख़िरी आयतें-

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ
الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ
الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

हुवल्लाहुल्लज़ी से व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमी न इल्ला ख़सारा० तक लिख कर ज़मज़म से धोकर पी लिया, अल्लाह ताआला ने शिफ़ा अता फ़रमायी-

24. लक़्वा क़ूलंज के लिए

١ قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا ص فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۚ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝

1. क़द् नरा से....बिग़ाफ़िलिन अम्मा यअ् मलून० तक

-पारा 2, रुकूअ़ 1

तर्जुमा– हम आप के मुंह का (यह) बार-बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं, इसलिए हम आपको उसी क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह कर देंगे, जिसके लिए आपकी मर्ज़ी है (लो) फिर अपना चेहरा (नमाज़ में) मस्जिदे हराम (काबा) की तरफ़ किया कीजिए और तुम सब लोग भी जहां कहीं भी मौजूद हो, अपने चेहरे को उसी (मस्जिदे हराम) की तरफ़ कर लिया करो और ये अह्ले किताब भी यक़ीनन जानते हैं कि यह (हुक्म) बिल्कुल ठीक है (और) उनके परवरदिगार की तरफ़ से (है) और अल्लाह तआ़ला उनकी कार्रवाइयों से कुछ बे-ख़बर नहीं है।

ख़ासियत– यह आयत क़ूलंज और लक़्वा और रियाह के लिये फ़ायदेमंद है, जो शख़्स इसमें मुब्तला हो, क़लई और तांबे की तश्तरी लेकर उसको ख़ूब साफ़ करके उससे यह आयत मुश्क व गुलाब से लिख कर पाक पानी से धोकर लक़्वा वाले का मुंह धुलाया जाए और मुंह धोने के बाद उस तश्तरी में तीन घंटे तक नज़र रखे,इस तरह तीन दिन तक करे और रियाह और फ़ालिज वाले पर वह पानी छिड़का जाए।

2. सूरः ज़िल् ज़ाल (पारा 30)

ख़ासियत– बग़ैर इस्तिमाल वाले तश्त में इसका पानी पीना लक़्वे में मुफ़ीद है।

25. कोढ़ के लिए

1. कोढ़ वग़ैरह को नफ़ा देने वाले अ़मल वग़ैरह- इब्ने क़ुतैबा रज़ि॰ ने कहा कि किसी कोढ़ वाले ने, जिसका गोश्त बिल्कुल गिरने लगा था, किसी बुज़ुर्ग से शिकायत की। उन्होंने यह आयत पढ़ कर घुत्कारा नई खाल निकल आई और अच्छा हो गया-

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

व अय्यू ब इज़ नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्ज़ुर्रु व अन् त अरहमुर्रा हिमीन॰

26. सफ़ेद दाग़ के लिए

1. अल-मजीद (बुज़ुर्ग) ख़ासियत अगर सफ़ेद दाग़ वाला मरीज़ इन तारीख़ों 13-14-15 में रोज़ा रखे और हर रोज़ इफ़्तार के वक़्त इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, इन्शाअल्लाह मर्ज़ अच्छा हो जाए।

2. कलबी रह॰ से एक शख़्स ने हिकायत बयान की कि मुझको सफ़ेद दाग़ हो गया था, किसी के पास न बैठ सकता था। एक बुज़ुर्ग से मुलाक़ात हुई। उन्होंने यह आयत पढ़ कर फ़रमाया, मुंह खोल। मैंने मुंह खोल दिया। उन्होंने मेरे मुंह में थूक दिया। अल्लाह तआ़ला ने शिफ़ा बख़्श दी। आयत यह है-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَنِّىْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّىْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْىِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِىْ بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम॰ अन्नी क़द जिअ्तुकुम बि आय तिम

मिर्रब्बिकुम अन्नी अख़्लुक़ु लकुम मिनत्तीनि क हैअतित्तैरि फ़ अन्फ़ुख़ु फ़ीहि फ़ यकूनु तैरम बिइज़्निल्लाहि व उबरिउल अक्मह वल् अब्रसवउ ह्यिल मौत बिइज़्निल्लाहि व उनब्बिउकुम बिमा ताकुलू न व मा तद्दख़िरू न फ़ी बुयूतिकुम इन् न फ़ी ज़ालि क लआयतल्लकुम इन कुन्तुम मुअ् मिनी न०

27. ख़ारिश के लिए

1. किसी शख़्स को ख़ारिश हो गयी थी और किसी तद्बीर से फ़ायदा न होता था। एक क़ाफ़िले के साथ मक्के को चला और चलने से आजिज़ होकर क़ाफ़िले से पीछे रह गया। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के मज़ार पर ठहर गया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़्वाब में देखा और अपने मर्ज़ की शिकायत अर्ज़ की। आपने यह आयत पढ़ी-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا
اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम० फ़ कसौनल अ़िज़ा म लह्मन सुम् म अन्शानाहु ख़ल्कन आ ख़ र फ़तबारकल्लाहु अह्सनुल ख़ालिक़ीन०

सुबह को अच्छा-ख़ासा उठा।

28. दाद के लिए

1. एक धागा लेकर उसमें यह आयत तीन बार पढ़ कर तीन गिरह लगाये और वह धागा मरीज़ के बांध दिया जाए।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۣ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ
مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝

व म स लु कलिमतिन ख़बीस तिन क श ज रतिन ख़बीसति निज्तुस्तत्

मिन् फ़ौक़िल् अर्ज़ि मा ल हा मिन् क़रार०

٢ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ

2. फ अ सा ब हा इअ़् सारुन फ़ीहि नारून फ़ह्त र क़ त्०

-पारा 3, रुकूअ़ 4

तर्जुमा- सो उस बाग़ पर एक बगोला आवे, जिसमें आग **(का माद्दा)** हो, फिर वह बाग़ जल जाए।

ख़ासियत- दाद पर लिख देने से दाद ख़त्म हो जाता है।

29. चेचक के लिए

1. चेचक से हिफ़ाज़त का अ़मल-और मैंने हज़रत वालिद से सुना, फ़रमाते हैं कि जब चेचक की बीमारी ज़ाहिर हो तो नीला धागा ले और उस पर सूरः रह्मान पढ़े और जितनी बार :

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝

फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०

पर पहुंचे तो एक गिरह दे और उस पर फूंक डाले और धागे को लड़के की गर्दन में बांध दे, हक़ तआ़ला उसको उस बीमारी से आराम देगा।

30. उम्मुस्सिब्यान

١ الٓمّٓ ۝ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۝ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۝

1. अलिफ़-लाम-मीम० अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल् हय्युल क़य्यूम० नज़्ज़ ल अ़लै कल किताब बिल हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बैन यदैहि व

अन्ज़लत्तौरा त वल् इंजी ल मिन् क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़ लल् फ़ुर्क़ान०
पारा 3, रुकूअ़ 9

तर्जुमा– अलिफ़-लाम-मीम। अल्लाह तआ़ला ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई माबूद बनाने के क़ाबिल नहीं और वह ज़िन्दा (जावेद) हैं, सब चीज़ों के संभालने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला ने आपके पास क़ुरआन भेजा है, जानकारी के साथ इस तरह कि वह तस्दीक़ करता है उन (आसमानी) किताबों की, जो इससे पहले आ चुकी हैं और इसी तरह भेजा था तौरेत और इंजील को इससे पहले के लोगों की हिदायत के वास्ते और अल्लाह तआ़ला ने भेजे मोजज़े।

ख़ासियत– मुश्क, गुलाब, ज़ाफ़रान से लिख कर एक नरकुल में, जो सूरज निकलने से पहले काटा गया हो, रख कर उसके मुंह पर मोम लगाकर लड़के के गले में लटका दिया जाए, तो आसेब और उम्मुस्सिब्यान, बुरी नज़र और तमाम हादसों से बचा रहेगा।

2. सूरः फ़लक़ और सूरः नास (पारा 30)

ख़ासियत– हर क़िस्म के दर्द व बीमारी, जादू और बुरी नज़र वग़ैरह के लिए पढ़ना और दम करना मुफ़ीद है। और सोते वक़्त पढ़ने से हर क़िस्म की आफ़त से बचा रहे और अगर लिखकर बच्चे के बांध दे तो उम्मुस्सिब्यान वग़ैरह से हिफ़ाज़त रहे और अगर हाकिम के सामने जाने के वक़्त पढ़ ले तो उसकी बुराई से बचा रहे।

31. उज़्व का ढीला पड़ना (फ़ालिज)

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝

1.इन्नमा यस्तजी बुल्लज़ी न यस्मअू न वल् मौता यबअसुहुमुल्लाहु सुम् म इलैहि युर्जअून॰ -पारा 7, रुकूअ 10

तर्जुमा– वही लोग क़ुबूल करते हैं, जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह तआला ज़िन्दा करके उठाएंगे, फिर सब अल्लाह ही की तरफ़ लाए जाएंगे।

ख़ासियत– जिसकी आंख में कुछ ख़राबी हो या किसी उज़्व में ढीलापन हो, तीन दिन लगातार रोज़ा रखे और दूध व शकर से इफ़्तार करे और आधी रात के वक़्त उठ कर तांबे के क़लम से ज़ाफ़रान व गुलाब से अपने या दूसरे मरीज़ के दाहिने हाथ पर लिख कर चाट ले, तीन दिन तक ऐसा ही करे।

32. हड्डी टूट जाना

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

1. फ़ इन् तवल्लौ फ़क़ुल् हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि तवक्कल्तु व हु व रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम॰ -पारा 11, रुकूअ़ 5

ख़ासियत– हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ से नक़ल किया गया है कि जो शख़्स इस आयत को हर दिन सौ बार पढ़े, दुनिया व आख़िरत की मुहिम्मों के लिए काफ़ी है और एक रिवायत में है कि वह आदमी गिर कर, डूब कर और चोट खाकर न मरेगा, और लैस बिन साद रज़ि॰ से नक़ल किया गया है कि किसी शख़्स की रान में चोट आ गयी थी, जिससे हड्डी टूट

गयी थी। कोई शख़्स उसके सपने में आया और कहा कि जिस मौक़े में दर्द है, उस जगह अपना हाथ रख कर यह आयत पढ़ो, पस उसकी रान अच्छी हो गयी और उसकी ख़ासियत यह भी है कि उसको लिखकर, बांध कर जिस हाकिम के सामने, जिस काम के लिए जाए, उसकी ज़रूरत अल्लाह के हुक्म से पूरी करे।

33. नींद आना

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۗ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝ ط

1. इन्नल्ला ह व मलाइ क त हू युसल्लू न अलन्नबिय्यि या अय्युहल्ल ज़ी न आ मनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा॰

ख़ासियत– इसको पढ़ने से नींद ख़ूब आती है।

34. निस्यान (भूलना)

1.अर्रह्मानु (बड़े मेहरबान)

ख़ासियत– हर नमाज़ के बाद सौ बार पढ़ने से दिल की ग़फ़लत और भूलने का मर्ज़ दूर हो।

35. पेशाब रुक जाना

1. इब्नुलकलबी ने लिखा है कि किसी शख़्स का पेशाब रुक गया। एक फ़ाज़िल ने यह आयत लिख कर बांध दी–

فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝

फ़ फ़तह्ना अब्वाबस्समाइ बिमाइम् मुन्हमिर॰ व फ़ज्जर्नल् अर् ज़ अुयूनन् फ़ल् तक़ल् माउ अ़ला अम्रिन् क़द क़ुदिर॰
उसको शिफ़ा हो गयी।

36. एह्तिलाम

ط وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝ وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝ يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝ إِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝

1. वस्समाइ वत्तारिक़ि॰ व मा अद्रा क मत्तारिक़ु॰ न्नज्मुस्साक़िबु॰ इन कुल्लु नफ़्सिल्लम्मा अ़लैहा हाफ़िज़॰ फ़ल् यन्ज़ुरिल इंसानु मिम् म ख़ुलिक़॰ ख़ुलि क़ मिम् माइन दाफ़िक़िंय्॰ यख़्रुजु मिम् बैनिस्सुल्बि वत्तराइबि॰ इन्नहू अ़ला रज्अ़ि ही ल क़ादिर॰ यौ म तुब्लस्सराइर॰ फ़ मा लहू मिन् क़ुव्वतिंव व ला नासिर॰

सोते वक़्त पढ़ने से एह्तिलाम से हिफ़ाज़त रहती है।

2. अगर पूरी सूरः नूह सोते वक़्त पढ़ ले तो एह्तिलाम से महफ़ूज़ रहेगा।

37. परेशान ख़्वाब

1. सूरः मआ़रिज (पारा 29)

ख़ासियत– सोते वक़्त पढ़ने से जनाबत और परेशान ख़्वाब से बचा रहे।

٢ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ
ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

2. लहुमुल् बुशरा फ़िल् हयातिद्दुन्या व फ़िल् आख़िरति ला तब्दील लिकलिमातिल्लाहि ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अज़ीम॰

-पारा 11, रुकूअ़ 12

तर्जुमा– उनके लिये दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी (अल्लाह की तरफ़ से डर व ग़म से बचने की) ख़ुशख़बरी है (और) अल्लाह की बातों में (यानी वायदों में) कुछ फ़र्क़ हुआ नहीं करता। यह (ख़ुशख़बरी, जिसका ज़िक्र किया गया) बड़ी कामियाबी है।

ख़ासियत– जिसको बद-ख़्वाबी होती हो और परेशान ख़्वाब देखता हो, वह इसको लिख कर गले में डाले या सोते वक़्त पढ़ लिया करे, इन्शाअल्लाह बद-ख़्वाबी से महफ़ूज़ रहेगा।

38. बच्चे का बोलना

1.सूर: बनी इस्राईल (पारा 15)

ख़ासियत– अगर ज़ाफ़रान से लिख कर पानी से धोकर लड़के को पिलाए जिसकी ज़बान न चलती हो, तो ज़बान चलने लगे।

आमाले क़ुरआनी यानी आसारे तिब्यानी

हिस्सा सोम

अस्माउल हुस्ना

1. पढ़ने की तर्कीब-

هُوَاللهُ الَّذِىْ لَآاِلٰهَ اِلَّا هُوَ جَلَّ جَلَالُهٗ
اَلرَّحْمٰنُ جَلَّ جَلَالُهٗ اَلرَّحِيْمُ جَلَّ جَلَالُهٗ ط

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला ह इल्ला हु व जल् ल जलालुहुर्रह्मानु जल्ल जलालुहुर्रहीमु जल् ल जलालुहू आख़िर तक इसी तरह पढ़ते चले जाइए-

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम॰

اَللهُ	اَلرَّحْمٰنُ	اَلرَّحِيْمُ	اَلْمَلِكُ	اَلْقُدُّوْسُ
अल्लाहु	**अर्रह्मानु**	**अर्रहीमु**	**अल-मलिकु**	**अल-क़ुद्दूसु**
ख़ुदा	बड़े मेहरबान	निहायत रहम वाले	सबके बादशाह	बहुत पाक

अरबी	उच्चारण	अर्थ
اَلسَّلَامُ	अस्-सलामु	बे-ऐब
اَلْمُؤْمِنُ	अल-मुअ्मिनु	ईमान देने वाले
اَلْمُهَيْمِنُ	अल-मुहैमिनु	निगह्बान
اَلْعَزِيْزُ	अल्-अज़ीज़ु	सबसे ग़ालिब
اَلْجَبَّارُ	अल्-जब्बारु	दुरुस्त करने वाले
اَلْمُتَكَبِّرُ	अल्-मु त कब्बिरु	तकब्बुर करने वाले
اَلْخَالِقُ	अल्-ख़ालिक़ु	पैदा करने वाले
اَلْبَارِئُ	अल्-बारिउ	बनाने वाले
اَلْمُصَوِّرُ	अल-मुसव्विरु	सूरत बनाने वाले
اَلْغَفَّارُ	अल्-ग़फ़्फ़ारु	बख़्शने वाले
اَلْقَهَّارُ	अल्-क़ह्हारु	बड़े ग़ालिब
اَلْوَهَّابُ	अल्-वह्हाबु	बड़े देने वाले
اَلرَّزَّاقُ	अर्-रज़्ज़ाक़ु	रिज़्क़ देने वाले
اَلْفَتَّاحُ	अल्-फ़त्ताहु	खोलने वाले
اَلْعَلِيْمُ	अल्-अ़लीमु	जानने वाले
اَلْقَابِضُ	अल्-क़ाबिज़ु	बंद करने वाले
اَلْبَاسِطُ	अल्-बासितु	खोलने वाले
اَلْخَافِضُ	अल्-ख़ाफ़िज़ु	पस्त करने वाले
اَلرَّافِعُ	अर्-राफ़िअ़ु	बुलंद करने वाले
اَلْمُعِزُّ	अल्-मुअ़िज़्ज़ु	इ़ज़्ज़त देने वाले
اَلْمُذِلُّ	अल्-मुज़िल्लु	ज़िल्लत देने वाले
اَلسَّمِيْعُ	अस्-समीअ़ु	सुनने वाले
اَلْبَصِيْرُ	अल्-बसीरु	देखने वाले
اَلْحَكَمُ	अल्-हकमु	फ़ैसला करने वाले
اَلْعَدْلُ	अल्-अ़द्लु	इन्साफ़ करने वाले
اَللَّطِيْفُ	अल्-लतीफ़ु	मेहरबान
اَلْخَبِيْرُ	अल्ख़बीरु	ख़बरदार
اَلْحَلِيْمُ	अल्-हलीमु	बुर्दबार
اَلْعَظِيْمُ	अल्-अ़ज़ीमु	बुज़ुर्ग
اَلْغَفُوْرُ	अल्-ग़फ़ूरु	बड़े बख़्शने वाले

اَلشَّكُوْرُ
अश्-शकूरु
क़द्रदान

اَلْعَلِىُّ
अल्-अ़लिय्यु
सबसे बुलंद

اَلْكَبِيْرُ
अल्-कबीरु
बड़े

اَلْحَفِيْظُ
अल्-हफ़ीज़ु
निगह्बान

اَلْمُقِيْتُ
अल्-मुक़ीतु
क़ुव्वत देने वाले

اَلْحَسِيْبُ
अल्-हसीबु
किफ़ायत करने वाले

اَلْجَلِيْلُ
अल्-जलीलु
बुज़ुर्ग

اَلْكَرِيْمُ
अल्-करीमु
बख़्शिश करने वाले

اَلرَّقِيْبُ
अर्रक़ीबु
निगह्बान

اَلْمُجِيْبُ
अल्-मुजीबु
क़ुबूल करने वाले

اَلْوَاسِعُ
अल्-वासिउ़
फ़राख़ी वाले

اَلْحَكِيْمُ
अल्-हकीमु
हिक्मत वाले

اَلْوَدُوْدُ
अल्-वदूदु
दोस्तदार

اَلْمَجِيْدُ
अल्-मजीदु
बुज़ुर्ग

اَلْبَاعِثُ
अल्-बाअ़िसु
भेजने वाले रसूलों के

اَلشَّهِيْدُ
अश्-शहीदु
बड़े मौजूद

اَلْحَقُّ
अल्-हक़्क़ु
ख़ुदाई का सज़ावार

اَلْوَكِيْلُ
अल्-वकीलु
कारसाज़

اَلْقَوِىُّ
अल्-क़विय्यु
तवाना

اَلْمَتِيْنُ
अल्-मतीनु
मज़बूत

اَلْوَلِىُّ
अल्-वलिय्यु
मदद करने वाले

اَلْحَمِيْدُ
अल्-हमीदु
तारीफ़ किये गये

اَلْمُحْصِىُ
अल्-मुह्सी
घेरने वाले

اَلْمُبْدِئُ
अल्-मुब्दिउ
पैदा करने वाले

اَلْمُعِيْدُ
अल्-मुई़दु
लौटाने वाले

اَلْمُحْيِى
अल्-मुह्यी
ज़िन्दा करने वाले

اَلْمُمِيْتُ
अल्-मुमीतु
मारने वाले

اَلْحَىُّ
अल्-हय्यु
ज़िन्दा

اَلْقَيُّوْمُ
अल्-कय्यूमु
थामने वाले

اَلْوَاجِدُ
अल्-वाजिदु
पाने वाले

اَلْمَاجِدُ
अल्-माजिदु
बुज़ुर्गवार

اَلْوَاحِدُ
अल्-वाहिदु
अकेले

اَلصَّمَدُ
अस्समदु
बे-नियाज़

اَلْقَادِرُ
अल्-क़ादिरु
तवाना सब पर

اَلْمُقْتَدِرُ
अल्-मुक़्तदिरु
क़ुदरत वाले

اَلْمُقَدِّمُ
अल्-मुक़द्दिमु
आगे करने वाले

اَلْمُؤَخِّرُ
अल्-मुअख़्ख़िरु
पीछे करने वाले

اَلْاَوَّلُ
अल्-अव्वलु
पहले सबसे

اَلْاٰخِرُ
अल्-आख़िरु
पीछे सबसे

اَلظَّاهِرُ
अज़्ज़ाहिरु
ज़ाहिर

اَلْبَاطِنُ
अल्-बातिनु
छिपा हुआ

اَلْوَالِیُ
अल्-वाली
काम बनाने वाले

اَلْمُتَعَالِ
अल्-मुतआलि
बुलंद व बरतर

اَلْبَرُّ
अल्-बर्रु
नेककार

اَلتَّوَّابُ
अत्तव्वाबु
तौबा क़ुबूल करने वाले

اَلْمُنْتَقِمُ
अल्-मुन्तक़िमु
बदला लेने वाले

اَلْعَفُوُّ
अल्-अफ़ुव्वु
माफ़ करने वाले

اَلرَّءُوْفُ
अर् रऊफ़ु
मेहरबान

مَالِكُ الْمُلْكِ
मालिकुल् मुल्कि
मालिक बादशाहत के

ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ
ज़ुल्जलालि वल इक्रामि
बुज़ुर्गी वाले इनाम वाले

اَلْمُقْسِطُ
अल्-मुक़्सितु
इन्साफ़ करने वाले

اَلْجَامِعُ
अल्-जामिअ़ु
जमा करने वाले

اَلْغَنِیُّ
अल्-ग़निय्यु
बे-परवाह

اَلْمُغْنِیْ
अल्-मुग़्नी
तवंगर करने वाले

اَلْمَانِعُ
अल्-मानिअ़ु
रोकने वाले

اَلضَّآرُّ
अज़्ज़ार्रु
नुक़्सान पहुंचाने वाले

اَلنَّافِعُ
अन्नाफ़िअ़ु
नफ़ा पहुंचाने वाले

اَلنُّوْرُ
अन्नूरु
रोशनी वाले

اَلْهَادِیْ
अल्-हादी
राह दिखाने वाले

اَلصَّبُوْرُ	اَلرَّشِيْدُ	اَلْوَارِثُ	اَلْبَاقِیْ	اَلْبَدِيْعُ
अस्सबूरु	**अर्रशीदु**	**अल्-वारिसु**	**अल्-बाक़ी**	**अल्-बदीअु**
सब्र करने वाले	सीधी तद्बीर वाले	मालिक	हमेशा रहने वाले	ईजाद करने वाले

ख़ासियत– अस्मा-ए-हुस्ना (मुबारक नामों) को याद करने और पढ़ने की बरकत से जन्नत में दाख़िले की ख़ुशख़बरी आयी है और उन के वसीले से दुआ़ मांगना क़ुबूल होने की वजह है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में 99 नाम आये हैं। अस्मा-ए-हुस्ना के आसार व ख़वास्स बे-शुमार हैं। फ़ज्र की नमाज़ के बाद एक बार पढ़ कर दुआ़ मांगना बहुत फ़ायदेमन्द और भलाई और बरकत की वजह है।

क़ैद और तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवरों से निजात

1.क़ैद से निजात

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَاۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّاۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝

1. रब्बना अख़्रिज्ना मिन् हाज़िहिल् क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा वज् अ़ल्लना मिल्लदुन क वलिय्यंव वज् अ़ल्लना मिल्लदुन क नसीरा०

–पारा 5 रुकूअ़ 7

तर्जुमा– ऐ परवरदिगार ! हमको (किसी तरह) इस बस्ती (यानी मक्का) से बाहर निकाल, जिसके रहने वाले सख़्त ज़ालिम हैं और हमारे

यहां ग़ैब से किसी दोस्त को खड़ा कर दीजिए और हमारे लिए ग़ैब से किसी को हामी भेजिए।

ख़ासियत- अगर किसी ज़ालिम व बद-कार के शहर या मौज़े में गिरफ़्तार हो और वहां से निजात मुश्किल हो, तो इस आयत को कसरत से पढ़ा करे और अल्लाह से अपनी रिहाई के लिए दुआ मांगे, इन्शाअल्लाहु तआला ज़रूर रिहा हो जाएगा।

٢ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ
اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۝ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا
تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۚ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۚ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ
وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۚ اِنَّ رَبِّيْ
لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۚ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

2. फ़लम्मा द ख़लू से....हुवल् अ़लीमुल हकीम॰ तक

-पारा 13 रुकूअ़ 5

तर्जुमा- फिर जब ये सब के सब यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के पास पहुंचे तो उन्होंने अपने मां-बाप को अपने पास (अदब के साथ) जगह दी और कहा सब मिस्र में चलिए (और) इन्शाअल्लाहु तआ़ला (वहां) अम्न व चैन से रहिए और अपने मां-बाप को (शाही) तख़्त पर ऊंचा बिठाया और सब के सब उनके सामने सज्दे में गिर गये और (यह हालत देख कर) वे कहने लगे कि ऐ अब्बाजान ! यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर, जो पहले ज़माने में देखा था। मेरे रब ने इस (ख़्वाब) को सच्चा कर दिया और मेरे साथ (एक) उस वक़्त एहसान फ़रमाया, जिस वक़्त मुझको क़ैद से निकाला और इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइय्यों के दरमियान में फ़साद डलवा दिया था, तुम सबको बाहर से (यहां) ले आया (और सब को मिला दिया)

बिला शुब्हा मेरा रब जो चाहता है, उसकी तद्बीर कर देता है। बिला शुब्हा वह बड़ा इल्म और हिक्मत वाला है।

ख़ासियत- अगर कोई शख़्स ज़ुल्म से क़ैद हो गया हो तो इन आयतों को लिख कर दाहिने बाज़ू पर बांधे और ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े इन्शाअल्लाह तआला रिहाई पाए।

3. सूरः फ़ातिहा-एक सौ ग्यारह बार पढ़ कर बेड़ी-हथकड़ी पर दम करने से क़ैदी जल्द रिहाई पाये। रात के आख़िर में 41 बार पढ़ने से बे-मशक़्क़त रोज़ी मिले।

2. चींटियों की ज़्यादती

ع١ يَاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

1. या अय्युहन्नम्लुद् ख़ुलू मसाकि न कुम ला यह्तिमन्नकुम सुलैमानु व जुनूदुहू व हुम् ला यश्अुरून० -पारा 19,रुकूअ 17

तर्जुमा- ऐ चींटियों ! अपने-अपने सूराख़ों में जा घुसो, तुमको सुलैमान और उनका लश्कर बे-ख़बरी में कुचल न डालें।

ख़ासियत- अगर चींटियों की ज़्यादती हो तो इस आयत को लिख कर उनके सूराख़ में रख दे, इन्शाअल्लाहु तआला सब चींटियां अपने सूराख़ में दाख़िल हो जाएंगी।

3. मच्छरों की ज़्यादती

ط اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا قف ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ٥

1.अ लम् त र इलल्लज़ी न ख़ र जू मिन् दियारिहिम् व हुम् उलूफ़ुन ह़ ज़ रल मौति फ़ क़ाल ल हुमुल्लाहु मूतू सुम् म अह़्याहुम् इन्नल्ला ह ल-ज़ू फ़ज़्लिन अ़लन्नासि व ला किन् न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून०

-पारा 2, रुकूअ़ 16

तर्जुमा- (ऐ मुख़ातब !) तुझको उन लोगों का क़िस्सा मालूम नहीं हुआ जो कि अपने घरों से निकल गये थे और वे लोग हज़ारों ही थे मौत से बचने के लिए, सो अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए (हुक्म) फ़रमा दिया कि मर जाओ (सब मर गये) फिर, उनको जिला दिया। बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा फ़ज़्ल करने वाले हैं लोगों (के हाल) पर, मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (इस क़िस्से पर ग़ौर करो)

ख़ासियत- तश्त में स्याही से लिख कर शीरा बर्नूफ़ या शीरा बरगे ज़ैतून से धोकर घर में छिड़कने से, जितने सांप-बिच्छू, पिस्सू, मच्छर होंगे, इन्शाअल्लाहु तआ़ला सब मर जाएंगे और जुमरात के दिन सुबह के वक़्त ज़ैतून के चार पत्तों पर लिख कर एक पत्ता मकान के एक कोने में दफ़्न कर दिया जाए।

٢ وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰنَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝

2. व मा लना अल्ला न त वक्कल अ़लल्लाहि व क़द् हदा ना सुबुलना व ल नस्बि रन्न अ़ला मा अज़ै तुमूना व अ़लल्लाहि फ़ल् यत वक्क लिल् मुत वक्किलून॰

पारा 13-रुकूअ़ 14

तर्जुमा– और हमको अल्लाह पर भरोसा ना करने का कोन अम्र बाइस हो सकता है हालां कि उस ने हम को हमारे (दोनों जहान के फ़ायदे के) रस्ते बतला दिये और तुम ने जो कुछ हम को तक्लीफ़ पंहुचाई है हम उस पर सब्र करेंगे और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए।

ख़ासियत– मच्छरों, पिस्सुओं के भगाने के लिए पानी पर सात बार इस आयत को पढ़े और सात बार यों कहे कि ऐ मच्छरों और पिस्सुओं अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो हम को मत सताओ और ख़्वाबगाह के चारों तरफ़ उस पानी को छिड़क दें। रात भर महफ़ूज़ रहेगा।

٣ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۗ حَتّٰٓى
اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝ فَقُطِعَ دَابِرُ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۗ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ (پ٧ع١١)

३. फ़ लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही फ़तह्ना अ़लैहिम अब्वा ब कुल्लि शैइन हत्ता इज़ा फ़रिहू बिमा ऊतू अख़ज़्ना हुम बग़ततन फ़ इज़ा हुम मुब्लिसून॰ फ़ क़ुति अ़ दाबिरुल क़ौमिल्लज़ी न ज़ ल मू वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़ ल मीन॰ —पारा ७, रुकूअ़ ११

तर्जुमा— फिर जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे, जिनकी उनको नसीहत की जाती थी, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब उन चीज़ों पर, जो कि उनको मिली थीं, वे ख़ूब इतरा गये, तो हमने उनको यकायकी पकड़ लिया, फिर तो वे बिल्कुल हैरान रह गये। फिर ज़ालिम (काफ़िर) लोगों की जड़ (तक) कट गयी। और अल्लाह का शुक्र है जो तमाम आ़लम का परवरदिगार है।

ख़ासियत— तांबे के तश्त पर आबे रेहान से लिख कर और आबे ज़ीरा से, जिसको इशा से सुबह तक भिगोया हो , धोकर जिस घर में मच्छर और पिस्सू ज़्यादा हों, कुछ बार छिड़कने से वे सब दूर हो जाएंगे।

4. जानवर का सताना

١ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۚ (پاره١٥ ع١٥)

१. व कल्बुहुम बासितुन ज़िराऐहि बिल वसीद॰

—पारा १५, रुकूअ १५

तर्जुमा— और उनका कुत्ता दहलीज़ पर अपने हाथ टिक़ाए हुए था।

ख़ासियत— अगर रास्ते में कोई शेर या कुत्ता हमला करे और शोर मचाए, तो फ़ौरन इस आयते करीमा को पढ़ ले, चुप हो जाएगा।

२. व इज़ा बतश्तुम बतश्तुम जब्बारीन०—परा १९, रुकूअ ११

وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۝ (پ۱۹ ع۱۱)

तर्जुमा— जब किसी पर पकड़ करने लगते हो, तो बिल्कुल जाबिर (और ज़ालिम) बन कर पकड़ करते हो।

ख़ासियत— अगर किसी को ज़हरीला जानवर काटे, तो जहां पर काटा हो, उसके चारों तरफ़ उंगली घुमाता हुआ एक सांस में सात बार पढ़ कर दम करे इन्शाअल्लाह तआ़ला सेहत हो जाएगी।

۳ إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ تف یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ یَطْلُبُهٗ حَثِیْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْیَةً ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ۝ (پ۸ ع۱۴)

३. इन् न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी........क़रीबुम मिनल मुह्सिनीन०

—पारा ८, रुकूअ १४

ख़ासियत— मुश्क व ज़ाफ़रान व गुलाब से लिख कर बांध ले। लोगों की चालों, बुरी नज़र और दिल की धड़कन और सांप, बिच्छू से बचा रहे।

٤ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝ أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ۝ (پ۹ ع۲)

४. अ फ़ अमि न अह्लुल क़ुरा.......इल्लल क़ौमुल ख़ासिरून०

—पारा ९, रुकूअ २

तर्जुमा— क्या फिर भी इन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बे-फ़िक्र हो गये कि उन पर (भी) हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े, जिस वक़्त वे पड़े सोते हों और क्या इन (मौजूदा) बस्तियों में रहने वाले इस बात से बे-फ़िक्र हो गये हैं कि इन पर हमारा अज़ाब दोपहर ही आ पड़े, जिस वक़्त कि वे अपने ला-यानी क़िस्सों में लगे हों, हां, तो क्या अल्लाह तआला की इस अचानक पकड़ से, बे फ़िक्र हो गये हो, अल्लाह की पकड़ से अलावा उन के, जिनकी शामत आ गयी हो और कोई बे-फ़िक्र नहीं होता।

ख़ासियत— मुहर्रम की पहली तारीख़ में इसको काग़ज़ पर लिख कर, पानी से धोकर, जिस घर के कोनों में छिड़क दिया जाए, वह घर सांप-बिच्छू और तक्लीफ़ देने वाले जानवरों से बचा रहे।

٥ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ فَإِن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝ (پارہ ۱۲ رکوع ۵)

५. इन्नी तवक्कलतु अ़लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम मा मिन दाब्बतिन इल्ला हु व आख़िज़ुम बिनासि य तिहा इन् न रब्बी अ़ला सिरातिम मुस्तक़ीम० फ़ इन तवल्लौ फ़ क़द

अब्लग़्तुकुम मा उर्सिलतु बिही इलैकुम व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन ग़ै र कुम व ला तज़ुर्रू न हू शैअन् इन् न रब्बी अ़ला कुल्लि शैइन हफ़ीज़० –पारा १२, रुकूअ ५

ख़ासियत– जिसको किसी ज़ालिम आदमी या तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवर का डर हो, इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे, जब बिस्तर पर लेटे, जब सोए, जब जागे सुबह के वक़्त, शाम के वक़्त इन्शाअल्लाह तआ़ला बचा रहेगा।

६. सूरः फ़ुर्क़ान (पारा १८)

ख़ासियत– अगर इसको तीन बार लिख कर बांध ले तो कोई तक्लीफ़ पहुंचाने वाला जानवर अज़्दहा वग़ैरह तक्लीफ़ न पहुंचाए और अगर बदमाश लोगों के दर्मियान जा पहुंचे तो उनका मज्मा बिखर जाए और कोई मश्वरह उनका दुरुस्त न होने पाए।

७. सूरः नम्ल (पारा १९)

ख़ासियत– जो शख़्स इसको हिरन की झिल्ली पर लिख कर बनाए हुए चमड़े में रख़ कर अपने पास रखे, कोई नेमत उसकी ख़राब न हो और अगर सन्दूक़ में रख दे तो उस घर में सांप-बिच्छू दरिंदा और तक्लीफ़ पहुंचाने वाला कोई जानवर न आए।

८. सूरः तत्फ़ीफ़ (पारा ३०)

ख़ासियत– किसी जमा की हुई चीज़ पर पढ़ दे, तो दीमक वग़ैरह से बचा रहे।

९. सूरः इन्शिक़ाक़ (पारा ३०)

ख़ासियत– किसी डंक मारे हुए पर दम करे, तो सुकून हो।

१०. सूरः इख़्लास (पारा ३०)

ख़ासियत– अगर ख़रगोश की झिल्ली पर लिख कर अपने पास रखे तो कोई इन्सान या जिन्न और तक्लीफ़ पहुंचाने वाला जानवर उसके पास न आए।

११. यह आयत पढ़ कर जिस आदमी या जानवर से डर हो, उसकी तरफ़ दम कर दे-

اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا

अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम लना अअ्मालुना व लकुम अअ् मा लुकुम ला हुज्ज त बै न ना व बै न कुम अल्लाहु यज्मअु बैनना॰
इन्शाअल्लाह उसकी तक्लीफ़ से बचा रहे।

१२. एक दूसरा– حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

हा-मीम॰ ऐन-सीन-क़ाफ़॰ क ज़ालि क यूही इलै क व इलल्लज़ी न मिन क़ब्लिकल्लाहुल अज़ीज़ुल हकीमु॰
मुसीबत के वक़्त फ़ायदेमंद है।

१३. तमाम ही तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवरों–खटमल, पिस्सू, दीमक, सांप, बिच्छू वग़ैरह से बचने के लिए- एक पर्चे पर ये आयतें लिख कर दफ़्न कर दो या लटका दो–

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ○ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ بَلَاغٌ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ○ وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ○ قَالُوا يَا مُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम॰ इन्नहू मिन......म अ क बनी इस्राईल॰

इसके बाद सूर: फ़ातिहा लिखे, इन्शाअल्लाहु तआला फ़ायदेमंद होगा और हर क़िस्म के तक्लीफ़ देने वाले जानवर ख़त्म हो जाएंगे।

१४ डंक के असर को दूर करने के लिए—थोड़ा रोग़न कन्जद लेकर डंक के मौक़े पर रख कर ये आयतें पढ़े—

, आयतुल कुर्सी ३ बार,

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ

بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَأَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ
قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ
مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ
وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ
وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا
لَحْمًا ۖ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

☐ अव कल्लज़ी......अला कुल्लि शैइन क़दीर ३ बार,

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ
الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ۗ
بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۗ اَفَلَمْ يَايْئَسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ
يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا
مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ۝

☐ व लौ अन् न क़ुरआनन— इन्नल्ला ह ला युख़्लिफ़ुल मी आद
तीन बार

وَيَسْئَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۝ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ۝

☐ व यस् अलू न क— व ला अम्ता॰ तीन बार

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ सके दिल में नर्मी और मुहब्बत पैदा हो।
سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝

☐ व जअ़ल्ना मिम् बै नि......वअ् तूनी मुस्लिमीन॰ तीन-तीन- बार

☐ वज़्ज़ुहा, अलम नशरह, क़ुल हुवल्लाह, मुअ़व्वज़तैन तीन-तीन बार। आधा अ़मल न पढ़ने पाएगा कि आराम होना शुरू हागा।

१५. अल-हफ़ीज़ (निगह बान) اَلْحَفِيْظُ

ख़ासियत– इस का ज़िक्र करने वाला या लिख कर पास रखने वाला डर से बचा रहेगा। अगर दरिंदों के दर्मियान सो रहे तो इन्शाअल्लाह नुक़सान न पहुंचेगा।

५. दिल की नर्मी के लिए

१. अर्रहीमु (निहायत रहम वाले) اَلرَّحِيْمُ

ख़ासियत– जो शख़्स रोज़ाना सौ बार पढ़े, उसके दिल में नर्मी और मुहब्बत पैदा हो।

تَمَّتْ بِالْخَيْرِ